विविध प्रसंग

विविध प्रसंग

निबंध संग्रह

रबीन्द्र नारायण मिश्र

दाम : 200 रूपया

दोसर संस्करण : अक्टुबर 2018

लेखक एवम् प्रकाशक : रबीन्द्र नारायण मिश्र
House No : C 42, NSG SAS Ltd, Black Cat Enclave
Pocket No : 6 Builders Area Greater Noida
District : Gautam Buddha Nagar
UP : 201315
Phone : 01202343563

विविध प्रसंग
A Collection of Maithili Essays by Shri. Rabindra Narayan Mishra.

समर्पण

पूज्य मातामह स्वर्गीय राम प्रसाद झा

आ

मातामही स्वर्गीया उत्तमा देवी

(ग्राम-सिंघिया ड्योढ़ी)क

संस्मरणमे

ई पोथी सादर ससिनेह हुनके समर्पित

दू आखर

विविध प्रसंगमे नित्यप्रतिक जीवनमे उपयोगी किछु समसामयिक विषयपर आलेखसभ संकलित अछि। एहिमे किछु कानूनी विषयसभपर संक्षेपमे चर्चा भेटत तँ किछु सामाजिक/मनोवैज्ञानिक विषयसभक चर्च सेहो अछि। एहि पुस्तकमे सामिल आलेख “मिथिलाक संस्कृति” मिथिला मिहिरमे १४ अगस्त १९८३क छपल छल। डाक्टर सुभद्र झा पर संस्मरण मैथिली अकादमी पटनाक पत्रिकाक जनवरी-फरवरी २००७क अंकमे छपल छल। डाक्टर जयकान्त मिश्रपर लिखल संस्मरण हुनक मृत्युक बादे लिखने रही मुदा ओ ओहिना राखले छल। शेष आलेख सभ हालेमे लिखल गेल।

आशा अछि जे पाठक लोकनिकेँ ई पुस्तक उपयोगी लगतनि।

रबीन्द्र नारायण मिश्र

ग्रेटर नोएडा

२९ मई २०१८

अनुक्रम



कलनाबला बाबा

मिथिलांचलमे रहनिहार साइते केओ एहन हेताह जे कलनाबला बाबाक नाम नहि सुनने होथि। ओ कलनामे कतेको सालसँ रहैत छलाह। ओहि समयमे हम कालेजक विद्यार्थी रही। परीक्षा भए गेल रहए। गामपर खाली रही। नौकरी ताकबाक प्रयासमे बहत चिंतित रही। मोन बेचैन रहैत छल। हमर मित्र स्वर्गीय विश्वुकांत मिश्र (लाल बच्चा) बहुत आस्थावान लोक छलाह। हुनकासंग कए पैरे दुनू गोटे कलना बिदा भेलहुँ। सुनने रहिऐक जे बाबा बहत नियम निष्ठासँ रहैत छथि। यदि हुनका लेल किछु प्रसाद लए जा रहल छी तँ बहुत पवित्रता पूर्वक लए जेबाक रहैत छल। रस्तामे यत्र-कुत्र नहि हेबाक चाही, अन्यथा कहाँदनि अनिष्ट भए जाइत छल। हम सभ तँ खाली हाथे जाइत रही तँ चिन्ताक बात नहि रहए।

कलना बाबाकेँ दर्शन हेतु जाइतकाल हम अपन मित्र लालबच्चाक संगे रस्ताभरि पैरे-पैरे गप्प-सप्प करैत दुनू गोटे दूपहरिआमे ओहिठाम पहुँचलहुँ। बाबा नान्हिटा फूसक घरमे रहथि। ओहिमे बाँसक फट्टक लागल छल। एक-दू गोटे आओर ओहिठाम बैसल रहथि। बाबा अत्यंत सहज रूपमे सभसँ गप्प-सप्प

करैत छलाह। गप्पक क्रममे ओ कहलाह-"एकटा सेठ एकबेर हुनका लग आएल आ कहलक जे भगवान झूठ छथि। हम ओकरा कहलिऐक जे तोँही झूठ छैँ।"

ओ कहथि जे हुनका लग लोक कबुला कए लैत अछि आ ओकर अनुपालन नहि करैत अछि जाहि कारणसँ ओकरा अनिष्ट होइत अछि। कैकटा भक्त हुनका लेल प्रसाद अनैत छलाह। ताहि काजमे बहुत संयम ओ स्वच्छताक प्रयोजन रहैत छल। बाबाक कहब रहनि जे यदि केओ हुनका हेतु अशुद्ध बस्तु अनैत अछि तँ ओकरा अपने अनिष्ट भए जाइत अछि। ताहि प्रसंगे ओ कैकटा उदाहरणसभ देलथि।

कलनाबला बाबा सँ हमरा तीन बेर भेँट भेल। दू बेर तँ हुनके कलना आश्रम पर आ एक बेर ओ हमरा ओहिठाम आएल रहथि तखन। दुनू बेर हम अपन मित्र लालबच्चाक संगे पैरे गामसँ कलना गेल रही।

एकबेर हम जखन बाबाक दर्शनक हेतु जाइत रही तँ रस्तामे मोनमे भेल जे बाबाक एतेक नाम सुनैत छिअनि, किछु सद्यः देखतिऐक। बाबाक ओतए हम दुनूगोटे पहुँचलहुँ तँ बाबा कहलाह जे आइ रहि जाह। हमसभ हुनकर आज्ञानुसार रुकि गेलहुँ। रातिमे सामनेक पोखरिक घाटपर हम सभ सुति गेलहुँ। अर्धरात्रिमे देखैत छी जे एकटा बाँस हीलि रहल अछि आ ओकर फुनगीपर धोती सुखा रहल अछि। डर भए गेल जे की बात छैक? उठिकए ठाढ़ भेले रही की देखैत छी जे लगेमे बाबा हँसि रहल छथि आ हुनकर हाथमे धोती छनि। बाबा किछु-किछु कहबो केलाह।

एकबेर हमर अनुज (सुरेन्द्र नारायण मिश्र) कोनो कारणसँ

बहुत परेसान छलाह। ओ बाबाक शरणमे गेलाह आ बाबाकेँ अपना ओतए चलबाक हेतु आग्रह केलखिन। बाबा मानि गेलाह। कारसँ बाबाक संगे हमहुँ रही। बाबाक सिपहसलारसभ सेहो रहथि। बाबा पहिने गिरजा स्थान गेलाह। ओहिठाम गिरिजा माइक दर्शन केलाह। फेर सभगोटे कारसँ गाम गाम बिदा भेलहुँ। हमरा ओहिठाम पहुँचलाक बाद ओ चौकीपर बैसलाह। कोनो ओछाओन नहि ओछबए देलखिन। अखरा चौकीपर बाबा पड़ल-बैसल रहलाह। ताबे तँ सौंसे गामक लोकक करमान लागि गेल। ततेक भीड़ जमा भए गेल जे माइकसँ ओकरा शांत कएल गेल। माइकेपर बाबा किछु उपदेश देलाह। सभकेँ आशीर्वाद देलखिन। हमर अनुज (सुरेन्द्र नारायण मिश्र) केँ आशीर्वाद देलखिन जे तोरा बेटा होइ, से सत्य भेल। हुनका दूटा पुत्र तकर बाद जन्म लेलखिन। कतबो कहल गेलनि ओ किछु नहि खेलथि आ थोड़ेकालक बाद कारसँ वापस चलि गेलाह।

बाबाक देहपर मात्र एकटा धोती रहैत छल जकरा ओ ठेहुन धरि पहिरने रहैत छलाह। लोककेँ देखि कए ओ अद्भुत निर्मल हँसी हँसैत छलाह। खेबाक कोनो चिंता नहि रहैत छलनि। नान्हिटा खोपड़ीमे माटिपर बाबा पड़ल वा बैसल रहैत छलाह। ओतहुँ लोक अपन स्वार्थसँ आन्हर भेल हुनका तंग केने रहैत छल।

“हौ बाबा! किछु करहक ने... ।”

जखन बड़ तंग कए दैन तँ कहथि-

“का कहली? की भैल?”

मुदा जकरा ओ बाक दए दैत छलाह से जरुर उद्धार भए जाइत छल।

बाबाक आश्रममे किछु गोटे निरन्तर रहैत छलाह। किछु गोटे

अबैत जाइत रहैत छलाह। खिछु गोटे तँ मात्र पेट पोसबाक हेतु ओतए पड़ल रहैत छलाह। कैकटा भक्त बाबा लेल कंबल वा आन-आन चीज-वस्तु अनितथि। बाबा ओकरा छुबितो नहि छलाह। आस-पास रहनिहारसभ ओहि वस्तुसभकेँ लुझि लैत छलाह। बाबा आश्चर्यचकित भए टुकुर-टुकुर देखैत रहैत छलाह।

ओहिठाम रहनिहार लोकसभ एकहि साँझ अपनेसँ रान्हि भोजन पबैत छलाह। जखन ओसभ बहुत गोहराबथि तँ बाबा हँसैत कहितथिन-“ठीक, बनाब भोजन।”

भोजन जहन बनि कए तैयार भए जाए तखन बाबाक आज्ञा चाहै छल जाहिसँ ओ सभ भोजन शुरु करथि। बाबा किछु बजबे नहि करथि। लएह, आब तँ बड़का विपत्ति। भोजन पड़सल धएल अछि आ बाबाक आदेशक प्रतीक्षा भए रहल अछि। बाबाकेँ ओ सभ गोहरा रहल छथि। बाबा बड़ छगुन्तासँ हुनकासभकेँ देखथि। जखन ओसभ बाबाकेँ आग्रह करैत-करैत थाकि जाथि तखन ओ कहि दितथि- “शुरु करह”। एहि तरहेँ बाबा हुनका लोकनिक धैर्यक परीक्षा लैत छलाह। तकरबाद बाबा ओहिठाम बैसल ओकरासभकेँ खाइत देखि बहुत प्रसन्न होइत छलाह।

बाबाक दरबारमे पैघ सँ पैघ लोकसभ अबैत रहैत छलाह। यदि बाबाकेँ इच्छा नहि होनि तँ हुनकर पट खुजिते नहि छल। जाबे बाबा जीबैत रहलाह, ओहि परिपट्टाक लोकक अपन आशीर्वादसँ कल्याण करैत रहलाह। बिना कोनो लोभ लालचकेँ संपूर्ण जीवन ईश्वरक आराधनामे लगा देलाह। हुनक निधनसँ एकटा महान संत एहि संसारसँ मुक्त भए गेलाह संगहि बहुतरास लोकक मोनमे अथाह श्रद्धा छोड़ि गेलाह। मिथिलाक एहि महान संतकेँ शत-शत प्रणाम! ❑



डा. सुभद्र झा (संस्मरण)

इलाकाक चर्चित व्यक्तित्व छलाह- डा. सुभद्र झा। धोती, मिरजइ सन कुर्ता पहिरने अत्यन्त सरल, साधारण लिबासमे डाक्टर साहेब अड़ेर हाट चौकपर बरोबरि देखा जइतथि। गप्प-सप्पमे ओ अपन बिचार अति स्पष्टतासँ रखैत छलाह। ताहि क्रममे यदि कने-मने विवादो भए गेल किंवा केओ कटाक्षो कए देलक तँ कोनो बात नहि।

मिथिलेटा नहि, अपितु समस्त भारतवर्षमे तत्कालीन विद्वान लोकनिमे हुनकर प्रतिष्ठा छलनि। हुनकर विषयमे किछु कहब आ लिखब कठिन काज अछि तथापि स्मरणमे किछु घटना अछि जे लिखि रहल छी।

घटना सन् १९६८ ई० क थिक। नवतुरियासभ गाममे एकटा पुस्तकालय स्थापित करए चाहैत छलाह। किछु दिनक प्रयासक वाद किछु पोथी, किछु पैसा चंदा भेल। किछु आलमारी सेहो बनाओल गेल। तकर बाद भेलैक जे ओकर उद्घाटन कएल जाए। उद्घाटन के करताह? आपसी विचार-विमर्शक बाद डा. सुभद्र झाक नाम पर आम सहमति भेल। डा. सुभद्र झा किछु दिन पूर्व सेवानिवृत्तभए गामे रहए लागल छलाह। आ यदा-कदा हमर

गामक चौकपर अबैत-जाइत देखा जाइत छलाह। उद्घाटन कार्यक्रममे डा. सुभद्र झाकेँ सेहो किछु कहबाक आग्रह कएल गेल। बहुत दुराग्रह कएलापर ओ बजबाक हेतु तैयार भेलाह। संक्षिप्त भाषणक क्रममे ओ कहलनि जे एहि इलाकामे अनुसंधानक हेतु पर्याप्त सामग्री यत्र-तत्र पसरल अछि। ओकरासभकेँ एहन पुस्कालयमे सुरक्षित राखल जा सकैत अछि। संगहि कबीरदासपर उपलब्ध सामग्रीक उल्लेख करैत ओ कहलाह जे एहि बातक प्रमाण अछि जे कबीरदास मैथिल छलाह आ मैथिलीमे कतेको रचना कएलनि अछि।

१९७३ ई०मे लगभग एक मास डा. सुभद्र झाक राँची स्थित आवास पर रही। तखन ओ योगदा सतसंग विद्यालयक प्राचार्य रहथि। ओही परिसरमे प्राचार्यक निवासमे ओ रहैत छलाह। हुनका संगे परिवारक आओर सदस्य नहि छल। घरक काज करबाक हेतु एकटा नौकर छल। भोजन ओ स्वयं बनबैत छलाह। प्रातःकाल भात-दालि-आलूक सन्ना बनाबथि। रातुक भोजनक व्यवस्था सेहो तखने कए लेथि। रातिमे बेसी काल आँटाक चोकरकेँ दूधमे उसनि कए खाइत देखिअनि। रातिमे सूतबासँ पूर्व ओ नियमित रूपसँ पढ़ैत छलाह।साँझमे तिन-चारि गोटे बैसि कए शास्त्र चर्चा करैत छलाह।

एक दिन साँझमे डाक्टर साहेबक संग कतहु जाइत रही। रिक्साबला सभ जतेक पाइ मांगै, से देबाक हेतु ओ तैयार नहि होथि। रिक्सा तकैत-तकैत अन्ततः सौंसे रस्ता बिति गेल। एक दिन एहिना संगे टहलैत रही तँ साईबाबाक चर्चा उठल। ओ हुनकर बहुत प्रशंसा करथि आ कहथि जे साईबाबा सरिपहुँ सिद्ध पुरुष छथि जकर हुनका प्रत्यक्ष अनुभव तखन भेल रहनि जखन ओ बाबाक

आश्रममे सिरडी गेल रहथि। कहलाह जे आश्रममे हुनका पहुँचते देरी बाबा हुनकर मोनक प्रश्नक उत्तर देबए लगलखिन। आरो कएकटा प्रसंगसभ ओ सुनओलथि।

योगदा सतसंग महाविद्यालय नवे बनल छल। डाक्टर साहेब पूर्ण तत्परतासँ ओहि विद्यालयक विकासमे लागल रहैत छलाह। परिसरमे आश्रमक आवास होइत छल। चारूकात गाछ सभक बीचमे बनल भाषण मंडपसभ। ओही परिसरमे एकदिस आश्रम छल जाहिमे एक दिन माँ दयामाता आएल रहथि। हम डाक्टर साहेबक संगे ओतए रही। माँ दयामाताक अबितहि पूरा हाँलमे शान्ति पसरि गेल। ओ किछु बजली नहि। चुपचाप सभगोटे ध्यान केलक। कोनो भाषणबाजी नहि भेल।

एकदिन डाक्टर साहेबक डेरापर आंगनमे ठाढ़ रही। हमरा देखि डाक्टर साहेब गंभीर भए गेलाह आ कहलाह जे नीकसँ पहिरल-ओढ़ल करह। जीवनमे सफलताक हेतु एहिसभकेँ बहुत महत्व अछि। ताहीक्रममे कहलाह जे एही कारणे ओ कैक बेर उच्च पदसभक चयनमे पछड़ि गेलाह यद्यपि ओ पदक हेतु पूर्ण योग्य रहथि।

डाक्टर साहेबक दोसर पुत्र भास्करजी इलाहाबाद विश्वविद्यालयमे जर्मन भाषाक व्याख्याता छलाह। हुनकर डेरापर डाक्टर साहेब अबैत-जाइत रहैत छलाह। सन् १९८३ ई० क गप्प अछि। एकदिन हम हुनका दुनू गोटेकेँ नोत देने रहिअनि। दुनू गोटे कोनो कारणसँ आगा-पाछा भए गेलाह। डा. झा पहिने चलल रहथि। भाष्करजी पाछू चललाह आ डेरापर पहुँचि कए बहुत परेसान रहथि जे आखिर ओ कतए चलि गेलाह। हमसभ गोटे हुनका ताकए लगलहुँ। कतहु नजरि नहि आबथि। रातुक समय

छल। भोजनमे विलंब भए रहल छल। ताबत थोड़ेकालक बाद मकानक नीचासँ ओ जोर-जोरसँ हमर नाम लए कए चिकरि रहल छलाह ।हमरा सभकेँ जानमे जान आएल। पता लागल जे ओ हमर डेरा तकैत-तकैत धोबी घाट चलि गेल रहथि। हमर मकान मालिक धोबी छल आ तकरे अनुमानमे ओ धोबी घाट चलि गेल छलाह।

डाक्टर साहेब बहुत अध्ययनशील लोक छलाह । जखन कखनो फुरसतिमे रहितथि तँ अध्ययन करए लगितथि। एकदिन प्रातः एगारह बजे इलाहाबादमे भाष्करजीक डेरा पर गेलहुँ। डाक्टर साहेब ओतहि रहथि। कहलाह जे हम एगारह घंटासँ निरन्तर पढ़ि रहल छी। मैथिलीमे शब्दकोशक निर्माणमे लागल छलाह।

एकदिन हम डाक्टर साहेबक संगे इलाहाबादमे कतहुँ जाइत रही। रस्तामे पुछलिअनि जे भगवान छथि कि नहि? ओ उत्तर देलनि जे ई कहब तँ कठिन अछि जे भगवान छथि कि नहि परन्तु यदि भगवान छथि तँ बहुत बइमान छथि, कारण दैत ओ कैकटा उदाहरण देलनि। जेना पेटमे बच्चा किएक मरि जाइत छैक? आखिर ओ जन्मसँ पूर्वे की गलती केलक?आ यदि गलती केलक तँ जनमि कए ओकरा भोगए। गप्पक क्रममे ओ कहलाह जे सम्प्रति जीबैत लोकमे बिहारमे संस्कृतक सभसँ पैघ विद्वान छथि।

साहित्य अकादमीक तत्कालीन अध्यक्ष डा. सुनीति कुमार चटर्जीक ओ बहुत प्रशंसा करथि आ कहति जे हमरा लेल ओ भगवाने छलाह। डाक्टर साहेबक संगे एकदिन टहलैत रही। गप्पक क्रममे ओ अपन प्रवासक दौरान भेल दूगोट घटनाक चर्चा कएलनि। डाक्टर साहेब ट्रेनसँ कतहुँ जाइत रहथि। कोनो टीसनपर गाड़ी रुकल तँ डाक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्नन ओहिमे सवार भेलाह। डाक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्नन बैसबाक हेतु घुसबाक हेतु

कहलखिन। डाक्टर सुभद्र झा अड़ि गेलाह आ डाक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्ननकेँ जगह नहि देलखिन।

राँचीमे गप्पक क्रममे एकदिन डाक्टर साहेब कहलाह जे ओ पुस्तकालयमे नौकरी करैत रहथि। ओही क्रममे हुनकासँ जे श्रेष्ठ पदपर अधिकारी छलाह से हुनकासँ किछु गलत काज कराबए चाहैत छलाह। ओ से करबाक हेतु सहमत नहि भेलाह। ताहिसँ कुपित भए कए ओ हिनका बहुत तंग करैत छलनि। डाक्टर साहेबकेँ पता रहनि जे ओ अधिकारी गलत काज करैत अछि। चुपचाप ओकर गलत काज बला कागजातक प्रतिलिपि ओ रखैत गेलाह। पुस्तकक क्रय-विक्रयमे ओ अधिकारी बहुत हेरा-फेरी केने छलाह, जकर कागजी सबूत डाक्टर झा लग छलनि।बादमे एहि बातक आरोप भेल आ जाँचक बाद ओ अधिकारी दोषी साबित भेल। अपनाकेँ बचाबक हेतु ओ चाहलक जे पुस्तकालयकेँ जे क्षति भेल रहैक से वापस करी मुदा ओकर परिवारक लोक पैसा वापस नहि कएलक। एहि बात सभसँ दुखी ओ भयभीत भए ओ आत्महत्या कए लेलक।

डाक्टर झा सँ जे कनी-मनी हमरा संपर्क भेल ओकरा संयोग कहि सकैत छी। बच्चेसँ हम हुनकर नाम सुनैत रही। सौंसे इलाकामे ओ चर्चाक विषय रहथि आ छोटसँ पैघ लोकक संपर्कमे सहजतासँ अबैत छलाह। ओ धुनक पक्का छलाह। जाहि काजमे लागि जाथि तकरा पूर्ण करबाक हेतु प्राण-प्रणसँ जुटि जाथि। हुनका अपन गाममे गाछ रोपबाक इच्छा रहनि। कहि नहि, कतए-कतएसँ आनिकए सालक साल ओ आमक गाछ रोपैत रहलाह।

हुनक प्रतिभा ओ विद्वताक वर्णन करबाक कोनो

आवश्यकता नहि बुझा रहल अछि। आडम्वर रहित जीवन शैली आ अतिशय सहज व्यवहारक संग स्पष्टवादिताक लेल ओ सभ दिन मोन पड़ताह। धोती-कुरता पहिरने, पैरे खेतक आरिए-आरिए चलैत-चलैत पता नहि ओ निरन्तर कोन चिंतनमे ध्यानमग्न रहैत छलाह। अपन मौलिकता आ अपन बातकेँ दृढ़तासँ रखबाक लेल ओ सभ दिन मोन पड़ैत रहताह। ❑



डॉ. जयकान्त मिश्र (संस्मरण)

सन् १९७८ इस्वीक जनवरी मासमे दिल्लीसँ स्थान्तर भए हम इलाहाबाद गेल रही। ओहि समय प्रथम बेर डॉ. जयकान्त मिश्रजी सँ हुनकर तीरभूक्ति, सर पीसी वनर्जी रोड स्थित घरमे भेँट भेल। बिना कोनो पूर्व परिचय रहितौं ओ सभ काज छोड़ि हमरासँ भेँट केलाह। एकटा मैथिलकेँ हमर डेरा तकबाक हेतु कहलखिन। ओतहिसँ हमर हुनका संग परिचय ओ सम्पर्कक क्रम प्रारंभ भेल जे अन्त धरि चलैत रहल।

जखन-कखनो हम हुनकर डेरापर जाइ तँ ओ सभ काज छोड़ि हमरासँ अत्यन्त अपनत्व भावसँ गप्प करथि। अपनेटा नहि, अपितु हुनक पत्नी, ओ संगे रहनिहार परिवारक अन्य लोकनि सभ सेहो ओहिना गप्प-सप्पमे संग देथि। जलखै, चाह, पान तँ हेबे करइ।

ओही क्रममे कतेको गणमान्य मैथिल लोकनिसँ हुनकर डेरापर भेँट भेल। हुनकर अध्ययन, अध्यापन, लेखन सभक अवलोकन करबाक अद्भुत अवसर भेटल। कए दिन हुनका संगे इलाहाबाद विश्वविद्यालयक अंग्रेजी विभाग गेलहुँ, जाहिठाम ओ

अंग्रेजी विभागक अध्यक्षक पदपर कार्यरत छलाह।

इलाहाबादमे रहनिहार मैथिल समाज डॉ. जयकान्त मिश्रसँ पूर्ण परिचित छलाह। अधिकांश मैथिल सभसँ हुनकर व्यक्तिगत सम्पर्क छलनि। प्रत्येक साल विद्यापति समारोह मनाओल जाइत छल। डॉक्टर जयकान्त मिश्र ओहिमे अवश्यमेव रहैत छलाह। हुनकर डेरापर निरन्तर मैथिलीक विकास केना हो, तकर चर्चा होइत रहैत छल। ओ सदिखन बजथि-

"मैथिलीमे लिखल करू। मैथिलीक हेतु काज करू।"

संगे मैथिलीक हेतु कएल गेल अपन अनवरत संघर्षक चर्चा सेहो होइत, जाहिसँ मैथिली विकास यात्राक साक्षात अनुभव होइत छल।

मैथिली भाषाकेँ बिहार लोक सेवा आयोगमे हटा देल गेल रहइ। तकरा पुनश्च वापस अनबामे, मैथिलीकेँ बच्चा सभक शिक्षाक अनिवार्य माध्यम बनेबाक हेतु ओ कहि नहि, कतेको वर्ष संघर्ष करैत रहलाह आ अन्ततोगत्वा, अपन प्रयासमे सफल रहलाह। मैथिलीक विकास हेतु ओ गाम-गाम घुमैत रहलाह। ततबे नहि, जतए कतहु मैथिलीक चर्चा होइत आ कि कोनो कार्यक्रम होइत तँ ओहिमे डॉ. जयकान्त मिश्रजी अबस्से भाग लेथि।

आयु बढ़लासँ नाना प्रकारक स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्या रहैत छलनि। हुनका कतेको साल पूर्व पेसमेकर लागल छल तथापि जँ कतहु मैथिलीक कार्यक्रममे हुनका बजाओल जाइत, तँ ओ अबस्स जाथि। परिवारक लोक चिन्तित भए जाइत छलखिन।

एकबेर हम इलाहाबादसँ पटना जाइत रही। स्लीपरमे हमर आरक्षण छल। डॉक्टर जयकान्त मिश्रजीकेँ देखलहुँ। ओहिना

ठाढ़, बिना सीटेक यात्रा कए रहल छलाह। बहुत आग्रह केलापर ओ हमर सीट लेबाक हेतु तैयार भेलाह। कहथि जे ओ अहिना चलि जेताह। ई छल हुनकर उत्साह- मैथिली कार्यक्रमे भाग लेबाक। ओहि दिन पटनामे कोनो मैथिली कार्यक्रममे भाग लेबाक हेतु जाइत छलाह।

डॉ. जयकान्त मिश्रजीक भाषा ओ व्यवहारमे अद्भुत मधुरता छल। कखनो नहि लगैत जे एतेक पैघ विद्वानसँ गप्प कए रहल छी। जे जेहने स्तरक लोक रहैत, तेकरा संग तेहने भए गप्प करितथि। पूरा घ्यान देथि। घरक सदस्य जकाँ ओकर पूर्ण स्वागत करथि। घरक प्रथम तलपर हुनकर पुस्तकालय छल। ओहिमे बैस कए ओ अध्ययन, लेखन करैत रहैत छलाह। इलाहाबादसँ लघुकाय एकटा मैथिली पत्रिकाक सम्पादन सेहो करैत छलाह। हुनकर नाति, भातिज सभ ओहि पत्रिकाक मैथिल लोकनिमे वितरणक व्यवस्था करथि। एकाध बेर हमरो ओहि काजमे ओ लगा लैत छलाह।

माघ मासमे प्रयागमे संगमतर पर ओ सपरिवार मास करैत छलाह। मिथिलाक प्रसिद्ध माछबला झण्डा मैथिल पण्डा सभक पहिचान अछि। ओहि झण्डाकेँ देखि कए जयकान्त बाबूक डेराक ठेकान लागि जाइत छल।

बहुत दिन बाद नवम्बर २००७ इस्वीमे हम इलाहाबाद गेल रही। हुनकर डेरापर गेलहुँ। परन्तु ओ काशी मास करए चल गेल रहथि। हुनकासँ भेँट नहि भए सकल। हुनकर डेरापर हुनकर नाति, आ परिवारक अन्य सदस्य सभ छलाह। डेरा उदास-उदास लगैत छल। परिवारमे कएटा दुर्घटना भए गेल छल। किछु साल पूर्व हुनक ज्येष्ठ पुत्र डा. रूद्रकान्त मिश्रक आकस्मिक असामयिक निधन भए गेल छल। आओर कएटा गप्प-सप्प...। एहि सभक

आभास घरमे भए रहल छल। किछुकाल बैसलाक बाद हम सभ ओतए-सँ अपन स्मृतिकेँ पुनश्च जगा कए ओहिठामसँ बिदा भए गेलहुँ। डॉक्टर साहेबसँ भेँट नहि भए सकल।

डॉक्टर जयकान्त मिश्रजीक पिता महामहोपाध्याय डॉ. उमेश मिश्रक बरखी बहुत यत्न पूर्वक मनाओल जाइत छल। ओहिमे डॉक्टर साहेब ओतए हम (जाधरि इलाहाबादमे रहलहुँ) नियमित आमंत्रित होइत छलहुँ। हुनकर सम्पूर्ण परिवार अत्यन्त मनोयोग पूर्वक ब्राह्मण भोजनक व्यवस्था करैत रहलाह। नाना प्रकारक भोजनक व्यंजन सभक स्मरणे मात्रसँ मन आनन्दित भए जाइत अछि। भोजनक संग-संग कतेको मैथिल लोकनिसँ ओहि अवसरपर भेँट भए जाइत छल।

इलाहाबादमे गप्प-सप्पक क्रममे ओ मैथिलीकेँ साहित्य अकादेमीमे मान्यताक सम्बन्धमे हुनक कएल गेल प्रयासक वर्णन करथि। ओहि हेतु ओ दिल्लीमे तत्कालिन प्रधान मंत्री द्वारा मैथिली पोथीक प्रदर्शनीमे भाग लेब, दिल्लीक उपराज्यपाल स्व. आदित्यनाथ झाजीक प्राप्त समर्थन आ सहयोगक चर्चा सेहो करैत छलाह।

एकबेर हम डॉ. शुभद्र झाजीक संग इलाहाबादमे डॉ. जयकान्त मिश्रजीक ओहिठाम जाइत रही। रस्तामे डॉ. जयकान्त मिश्रजीक मैथिलीक प्रति अनुराग ओ मैथिलीक विकास हेतु संघर्षक प्रशंसा करैत डॉ. शुभद्र झा कहलाह-

“मिथिलामे डॉ. जयकान्त मिश्रक आ हुनक पूर्वज लोकनिक अद्भुत योगदान अछि।”

संगे ईहो कहलाह- “एहन बहुत कम परिवार भेटत जाहिमे

लगातार छह पुस्ति सरस्वतीक एहन आर्शीवाद प्राप्त रहल हो।"

ओ दिल्ली आबथि तँ हमरा सूचित करथि। कतेको बेर तँ ओ हमरे ओतए ठहरैत छलाह। कए बेर हवाइ यात्रासँ उतरि लबनचूस बच्चा सभक लेल लेने अबैत छलाह। जाधरि ओ डेरापर रहथि, निरन्तर मैथिली सम्बन्धी चर्चा होइत रहैत।

मैथिली आन्दोलनक संघर्ष यात्रा आओर अनेकानेक लोकनिक योगदानक चर्चा सेहो होइत।

एकबेर ओ (डॉ. जयकान्त मिश्र) दिल्लीमे मैथिलीक प्रश्न पत्र बनबए खातिर आएल रहथि। संगमे स्व. सुमनजी आ डॉ. नवीन बाबू सेहो रहथिन। ओ तीनू गोटे हमर आग्रहपर पुष्पबिहार, दिल्ली स्थित हमर आवासपर अएलाह आ एकसंग हुनका सभकेँ भोजन करेबाक सौभाग्य प्राप्त भेल। ओहि अवसरकेँ स्मरण करैत अखनो रोमांचित भए जाइत छी। तीनू गोटेक एकट्ठे हमरा ओतए आएब आओर हुनकर वार्तालाप सुनि मोन आनन्दित भए गेल। आनन्दितो केना ने होइत, डॉ. सुमनजी आ डॉ. नवीन बाबू सी.एम. कौलेज- दरभंगामे हमरा मैथिली पढ़ओने रहथि।

डॉ. मिश्रजी अत्यन्त समाजिक व्यक्ति छलाह। इलाहाबाद किंवा बाहरोक मैथिल लोकनिकेँ व्यक्तिगत स्तरपर ओ मदति करैत छलाह। नयाकटरा, इलाहाबाद स्थित हमर डेरापर कएक बेर पैरे चलि आबथि। कतेको मैथिल विद्यार्थी सभकेँ ओ अपना ओहिठाम राखि कए हुनकर शिक्षामे सहायता करैत छलाह।

इलाहाबाद विश्वविद्यालयक अंग्रेजी विभागक अध्यक्ष पद हेतु हुनका बहुत विरोधक सामना करए पड़ल छलनि। ताहि खातिर ओ इलाहाबाद उच्च न्यायालयमे केस सेहो केने रहथिन।

अन्तोगत्वा हुनकर विजय भेल, आ ओ अंग्रेजी विभागाध्यक्ष भेलाह। हुनकर विरोधी सभक कहब रहैक जे ओ मैथिलीमे लिखैत छथि। हुनकर पी.एच-डी.क विषय 'मैथिली भाषाक इतिहास' छल तखन ओ अंग्रेजी विभागक अध्यक्ष केना भए सकैत छथि?

जयकान्त बाबू दिल्ली आएल रहथि। तहिया हुनकर पोती रोहिनीमे रहैत छलखिन। हुनकासँ भेँट करबाक रहनि। हमरा संगे चलए कहलनि। बसपर ठाढ़े हम दुनू गोटे रोहिनी बिदा भेलौं। इलाहाबादसँ एकटा पोटरी अनने रहथि। तेकरा उपहार स्वरूप अपन पोतीकेँ देलखिन। किछु कालक बाद हम सभ ओहिठामसँ वापस भए गेलहुँ। ओहि पोतीक बिआह दिल्लीएमे भेलनि आ बिआहक हकार हमरा देबाक हेतु डॉ. रूद्रकान्त मिश्र (कन्याँक पिता) स्वयं आएल रहथि। हम बिआहक अवसरपर गेलो रही। बिआहमे डाक्टर साहेबक सभ भाए आएल रहथिन। कोनो प्रकारक दहेज नहि लेल गेल छल। डॉक्टर साहेब दहेज रूपी लेन-देनक खिलाफ छलाह आ एकरा मिथिलाक संस्कृतिक प्रतिकूल कहथि।

डॉक्टर जयकान्त मिश्रजीक पिता महामहोपाध्याय- डॉ. उमेश मिश्रक बनाओल मकानमे डॉक्टर साहेब एवम् हुनकर भैयारी लोकनि सेहो रहैत छलखिन।। सभसँ शुरूबला हिस्सामे डॉक्टर साहेब रहथि आ तकर बाद बलामे आओर भाए सभ।

डॉक्टर साहेबक व्यक्तिगत जीवनमे, परिवारोमे भोजन आ रहन-सहनमे मिथिलाक संस्कृतिक अमिट छाप छल। मकानक ओसारपर माछक मूर्ति लटकल, सदैव झूलैत रहैत छल। घरमे भोजन बनबएकाल देहपर वस्त्र नहि रहक चाही। ब्राह्मण

भोजनकाल परसनिहार आ भोजन केनिहार गंजी, कमीज नहि पहिरथि। भोजनमे पियाजु-लहसुन नहि पड़ए। जखन कखनो ओ बाहर यात्रापर जाथि तँ अपन नियम सभक पालन कठोरतासँ करथि। बाहरमे बेसीकाल चुरा-दहीसँ काज चलबथि।

इलाहाबादमे रहितो ओ गामसँ सम्पर्क बनओने रहथि आ सभ साल मास-दू मास गाम जा कए रहथि। गामसँ लौटैत काल सभ ग्रामीणक ओहिठाम जा कए भेँट करथि आ पुनश्च गाम अएबाक इच्छा रखैत सभसँ बिदा लेथि। एहि क्रममे किछु साल पूर्व ओ गाम गेल रहथि, ओतहि बहुत जोरसँ बिमार पड़ि गेला। हृदयाघात भए गेल रहनि। ओहिठामसँ लोक सभ उठा-पुठा कए दरभंगा अनलकनि। दरभंगामे थोड़ेक सुधार भेला पछाइत इलाहाबाद वापस अएला। इलाहाबादमे हुनकर मासो इलाज चलल। बहुत मोसकिलसँ हुनकर जान बॉचल। बिमारीसँ उठलाक बाद एक दिन फोनपर गप्प भेल रहए। बहुत दुखी बुझाइत रहथि। अबल भए गेल रहथि, तथापि मैथिलीक विकासमे अभिरूचि बनल छलनि आ ओहि विषयमे गप्प करैत रहलाह।

मैथिलीक विकासक हेतु डॉ. मिश्रजीक अद्भुत योगदान अछि। संविधानक अष्टम अनुसूचीमे मैथिलीकेँ सामिल करबाक हेतु ओ कतेको साल प्रयास करैत रहलाह। अन्ततोगत्वा, हुनकर ईहो स्वपन्न साकार भेल आ मैथिलीकेँ संविधानक अष्टम् सूचीमे सामिल कएल गेल।

इलाहाबाद विश्वविद्यालयसँ सेवानिवृत्त भए ओ मध्यप्रदेशमे चित्रकुट स्थित ग्रामीण विश्वविद्यालयमे विभागाध्यक्ष भेलाह। ओहिठाम ओ कएक साल धरि रहि संस्थानक शिक्षण व्यवस्थाकेँ उत्कृष्ट बनेबामे संलग्न रहलाह। नानाजी देसमुख विश्वविद्यालयक

उपकुलपति रहथि। देसमुखजी डॉ. मिश्रक कार्यसँ अतिशय प्रभावित रहथि। हुनकर इच्छा रहनि जे डॉ. मिश्र ओतए बनल रहथि परन्तु मैथिलीक काजमे विशेष रूचि ओ व्यस्तताक कारणेँ ओ विश्वविद्यालयक काजसँ त्याग-पत्र दए देलनि।

डॉक्टर मिश्र अत्यन्त अध्ययनशील व्यक्ति छलाह। रातिमे जखन-तखन ओ उठि जाथि आ पढ़ए लागथि। हुनकर स्वास्थ्यक चिन्तासँ परेसान भए परिवारक लोक कएक बेर आपत्ति करथि जे एतेक परिश्रम नहि करथि, मुदा ओ अपन कार्यक्रममे अनवरत लागल रहैत छलाह। मैथिलीक नाम सुनिते जेना हुनका स्फुर्ति आबि जाइत छल। पेसमेकर लगलाक बादो ओ मैथिलीक आन्दोलनक हेतु समर्पित रहलाह आ जतए कतहु हुनका एहि काजे बजाओल जानि तँ ओ सहर्ष जाथि।

२००८ इस्वीमे, नव वर्षक आगमनक अवसरपर हम हुनका नव वर्षक मंगल कामना पत्र पठओने रहिएनि। तकर जवाबमे ओ पोस्टकार्ड लिखने रहथि जे थर-थर कँपैत हाथसँ लिखल गेल छल। तकर बाद लगभग साल भरि कोनो सम्पर्क नहि रहल। जनवरी (२००९) मे एक दिन डॉ. धनाकर ठाकुरजी पत्र इन्टरनेट पर पढ़ल, जाहिमे डॉक्टर मिश्रक प्रयागमे निधनक समाचार छल। कतेको बेर ओहि समाचारकेँ पढ़ल। मैथिलीक एकटा अनन्य सेवकक चिर संघर्षक बाद देहावसान भए गेल छल। मिथिलाक गाम-गाममे शोक सभा मनाओल गेल। श्रद्धांजलि देनिहार लोक सभक हुनक प्रति सिनेह अवर्णनीय छल।

डॉ. जयकान्त मिश्र अपने-आपमे मिथिलाक इतिहास छलाह। मिथिलाक कोनो एहन गाम नहि हएत जतए ओ मैथिली कार्यक्रमक हेतु नहि गेल होथि। विद्यापति समारोह हो, किंवा मैथिलीकेँ संविधानक अष्टम सूचीमे सामिल करबाक हेतु आयोजित

आन्दोलन हो, वा मैथिलीकेँ शिक्षाक अनिवार्य माध्यम बनेबाक प्रयास हो, सभठाम हुनकर नाम अबिते छल आ ओ व्यक्तिगत रूपसँ सभ कार्यक्रमे भाग लइते छलाह।

जखन-कखनो ओ भेटितथि, मैथिलीमे लिखबाक हेतु प्रेरित करबे करथि, मैथिलीक सम्मानक हेतु कएल जा रहल प्रयासक चर्चा करितथि, सभ काजपर मैथिलीसँ जुड़ल आन्दोलनकेँ प्राथमिकता देबे करथि।

मैथिलीक एहि अनन्य सेवकक कतेक उपकार अछि तकर वर्णन असंभव। हुनक साहृदयता, वाणीक मधुरता आ अपनत्व सदिखन मोन पड़ैत रहत आ मोन रहत हुनका संग बिताओल गेल अद्भुत क्षण। ओ आब नहि छथि, मुदा कोटि-कोटि मैथिलक हृदयमे ओ सदिखन विद्यमान छथि ओ रहताह। ❑



पं. परमानन्द झा (संस्मरण)

लोक एहि दुनिआमे अबैत अछि, चलि जाइत अछि मुदा ओकर कएल काज ओकरा जिबैत रखैत अछि। कतेको व्यक्ति एहि संसारमे एहने भेलाह अछि जे अपन संघर्षसँ अपन जीवनमे एकटा नव दृष्टान्त उपस्थित केलाह आ हुनका गेलाक बादो लोकसभ हुनक कृतित्वक चर्च कए गौरवक अनुभव करैत छथि। एहने लोक छलाह हमर ग्रामीण-स्वर्गीय पण्डित परमानन्द झा।

हमसभ जखन नेना रही तँ हुनका कतेको बेर पैरे अबैत-जाइत देखिअनि। पैरे चलब ओहि समयमे कोनो अजगुतक गप्प नहि छलैक। मुदा ओ पैरे-पैरे मुजफ्फरपुर साक्षात्कर देबए चलि जाइत छलाह। लौटि कए ओहिना दन-दन करैत रहैत छलाह। कहिओ हुनका बैसल, आराम करैत नहि देखलिअनि। दिन-राति ओ किछु-ने-किछु करैत भेटताह। व्यर्थ आडंवर किंवा प्रदर्शन करबामे हुनका कोनो रुचि नहि छल। सौंसे दुनिआ जँ खिलाफ भए

जाए आ हुनका लगतनि जे ओ सहीपर छथि तँ ओ अपन निश्चयपर अडिग रहैत छलाह।

एहन कर्मठ लोक साइते देखएमे अबैत अछि। खेत कोरब, धान रोपब, धान काटब, दाउुन करब सँ लए कए इसकूलमे मास्टरी करब फेर विद्यार्थीसभकेँ ट्युशन करब, ततबे नहि पंडिताइ करब, सभटा काज ओ एकसुरे करैत रहैत छलाह। हमसभ जखन नेना रही तँ हुनके घरक पाछा ब्रम्ह स्थानमे हमर सभक इस्कूल छल। ओतए हमसभ पढ़ए जाइत छलहुँ। कैकदिन पानि पीबाक हेतु हुनका ओहिठाम आबि जाइत छलहुँ। जखन कखनो ओतए जइतहुँ ओ निरंतर काजमे व्यस्त रहैत छलाह। छोट-छीन फूसक घरमे अपन साधनामे लागल रहैत छलाह। कोनो काज करबासँ हुनका परहेज नहि छल। लोक की कहत से हुनका सुनबाक समय नहि छल। जे अपना ठीक बुझाइन से ओ करथि, जकरा जे मोन हो से कहैत रहए। “हाथी चलए बजार, कुत्ता भुकए हजार।”

जीवन भरि ओ घोर संघर्ष करैत रहलाह। कठोर परिश्रम ओ मितव्यितासँ गामक आस-पास चिक्कन जमीन-जाएदाद बनओलनि। अड़ेरचौकपर सेहो बहुत कीमती जमीन ओ किनलथि। सुनबामे आएल जे अट्ठारह बीघा जमीन ओ अपना जीवनमे मेहनति आ इमान्दारीसँ किनलथि। एतबे नहि जाहिठाम एकटा मामूली फूसक घर छल ओतहि पता नहि कतेको कोठरीक घर बना देलथि। ओहिठाम गेलापर अहाँकेँ चारू कात घरे-घर देखएमे आएत। गाम-घरमे जकरा पोखरिआ-पाटन कहैत छैक, ताही तरहक हुनकर ग्रामीण आवास अछि। आ से सभटा मेहनतिसँ केलाह, कोनो ककरो बइमानी नहि, अपितु अपन विद्या ओ वुद्धिसँ निरन्तर समाजकेँ सेवा करैत उपार्जन केलाह। ओ निट्ठाह कर्मयोगी छलाह। कखनो बैसल नहि रहितथि। कोदारि पारवसँ लए कए

इसकूलक मास्टरी भावसँ ओ जीवन पर्यन्त करैत रहलाह। अगहन मासमे माथपर धानक बोझा लदने सीताराम-सीताराम कहैत डेगार दैत अपन धानक खेतसँ खरिहान धरि अबैत- जाइत हम हुनका देखिअनि। जकरा जे बाजक होइक से बाजए, हुनका लेल धनिसन।

ओ खाली धने अर्जित करैत रहलाह से बात नहि, अपितु घनघोर संघर्ष कए विद्योपार्जन सेहो केलाह। कतेको विषयमे आचार्य केलाह। फेर अंग्रेजी माध्यमसँ सेहो उच्च शिक्षा प्राप्त केलनि। बहुत दिन धरि रहिका उच्च विद्यालयमे संस्कृतक शिक्षक रहलाह आ प्रधानाध्यापकक पद धरि प्रोन्नति प्राप्त केलनि। धर्म ओ अध्यात्मक सेहो हुनका बहुत नीक जानकारी छलनि। कतेकोठाम धार्मिक सभा सभमे प्रवचन सेहो करैत छलाह। दरभंगामे संत-समागममे प्रवचन करैत हमहुँ हुनका सुनने रही। ओहि समयमे हम ओतए सी० एम० कालेजमे पढ़ैत रही।

कतेको दिन हमसभ हुनका साइकलपर इंटा बन्हने, आ स्वयं ओकरा गुड़कबैत पैरे-पैरे चलैत देखिअनि। कहिओ सीमेन्टक बोरा, कहिओ बाउल, कहिओ इंटा ओही साइकिल पर ढ़ो-ढ़ोक ओ पक्का मकान बना लेलथि। एहन धुनकेँ पक्का, कर्मकीट ओ संकल्पक धनी व्यक्ति डिबिआ लए कए तकनहुँ नहि भेटि सकत।

व्यक्तिगत जीवनमे कैक बेर हुनका प्रतिकूल परिस्थितिक सामना करए पड़लनि, तथापि ओ धैर्यपूर्वक जीवनयात्रामे लागल रहलाह। आस-पासक गामक बहुत रास लोक हुनकार अध्यात्मिक चेला छल। हुनकासँ मंत्र लेने छल। हुनका प्रति श्रद्धाक भाव रखैत छल आ हुनक मृत्युसँ बहुत दुखी भेल छल।

आब ओ एहि दुनिआमे नहि छथि। खिछु साल पूर्व एकाएक

हुनकर किडनी खराप भए गेलनि। मास दिनक भीतरे ओ मार्च २०१४मे चलि गेलाह। ओहि समय हुनकर बएस अस्सीसँ उपरे रहल होएत। मृत्युसँ किछुमास पूर्वे हम गाम गेल रही तँ हुनकासँ भेंट भेल रहए। ओ पूर्णतः स्वस्थ लगैत छलाह। अपितु, बड़ी काल धरि अध्यात्मिक विषयपर अपन मंतव्य दैत रहलाह। हमर माएसँ सेहो गप्प करैत रहलाह। तकर किछुए दिनक बाद हुनक मृत्युक समाचार भेटल। आश्चर्यमे पड़ि गेलहुँ।

हुनक देहावसानसँ गामेक नहि अपितु परोपट्टाकेँ एकटा अपूर्णीय क्षति भेल। कर्मठता आ सफल संघर्षक एहन जीवंत उदाहरण भेटब बहुत मोसकिल काज अछि। हुनका हमर शत-शत प्रणाम! ❑

बहुत पहिने मिथिलाक नाम विदेह छल आओर ओहिमे वर्तमान मिथिला, वैशाली, कतेको राज्यसभ सामिल छल। चारिम वा पाँचम शताब्दीमे ई मिथिला किंवा तीरभुक्तिक नाम ग्रहण कएलक। मुगल साम्राज्यक कालमे एकर एकटा भाग (उत्तर दिसिसँ)नेपालक राजाक अधीन चल गेल। शेष भाग तिरहुत कहल जाइत छल। मिथिलाप्रान्तक व्यारव्या जे ग्रिअरसन महोदय केलनि अछि, तदनुसार एकर क्षेत्रफल लगभग तीस हजार वर्गमील अछि आओर एहिमे विहार राज्यक मुजफ्फरपुर, सितामढ़ी, वैशाली, दरभंगा, मधुबनी, समस्तीपुर, सहर्षा, उत्तर मुंगेर, उत्तरी भागलपुर, आओर पुर्णियाक किछु भाग सामिल अछि संगे नेपालक रौताहट, सरलाही, सप्तरी, मोहातारी, आओर मोरंग जिला ओहिमे अवैत अछि।

मिथिलाक वर्तमानक दरिद्रता आओर भूतकालक ऐश्वर्यमे कोनो साम्य नहि अछि। सन् १९३४ ई०क भूकंपक बाद एहिठामक लोकक स्थिति आओर खराब भए गेल छलैक आओर भूकंपक कारणे ओहिठामक आबोहवापर सेहो प्रतिकूल प्रभाव पड़ल। आलसी आओर खोचाँह स्वभावक कारण एहिठामक लोक संप्रति कष्टमे छथि, मुदा प्राचीनमे ई स्थिति नहि छल। लोक प्रसन्नचित्त समय बितबैत छल आओर धने-जने पूरल रहए। प्रयाप्त सुख-सुविधाक उपलब्धक संग लोकक ध्यान कला ओ संस्कृतिक विकासपर जाएब स्वभाविक अछि आ तेँ ई कोनो आश्चर्य नहि थिक जे लोक पर्याप्त साहित्यिक ओ सर्जनात्मक प्रतिभाक परिचय देलक।

प्राचीन कालसँ मिथिलाक प्रशस्तिक आधार विद्वता रहल

अछि। षड़दर्शनमेसँ चारिटा दर्शन, न्याय, वैशेषिक, मिमांसा आओर सांख्यक रचनाकार लोकनि क्रमशःगौतम, करणाद, जैमिनी ओ कपिल मिथिलेमे भेलाह। मुगल आक्रमण कालमे आचार-विचार शुद्धिपर ध्यान देव आवश्यक भए गेल तैं मध्यकालमे नव्य न्याय, पूर्व मिमांसा आओर स्मृति निवंध रचनापर बेसी तुल देल गेल। मिथिलाक प्रतिष्ठा बाहरक विद्वान लोकनिमे बनल रहए तैं ओतए कतेको प्रकारक पदवी विद्वान लोकनिकैं देबाक प्रथा चलल, मुदा ओहि हेतु बहुत क्लीष्ट परीक्षा होइत छल-जेना कि श्लाका परीक्षा, उपाध्याय, महामहोपाध्याय आदि। मिथिलाक प्राचीनमे विदेह राजाक प्रतिष्ठाक आधार हुनक ज्ञान आ विद्वते छल। तहिना महेश ठाकुर ओ खांडववंशीय अन्य राजा लोकनि आ अन्य विद्या अनुरागी भेलाह आ मिथिलाक कीर्ति बढ़एबाक हेतु सभ तरहैं प्रयास कएलनि ओ तदनुकूले प्रतिष्ठो प्राप्त कएलनि।

मिथिलाक सोनितमे भगवती जानकीक अंश सर्वत्र विराजमान अछि। घर-घरमे पसरल गोसाउनिक शिर भगवतीक आराधना स्थल अछि। प्रत्येक शुभ अवसरपर भगवतीक वंदना गएबाक प्रथा मिथिलाक संस्कार भए गेल अछि। विद्यापतिक वंदना “जय जय भैरवि असुर भयाउनि, पशुपति भाविनी माया”, मिथिलाक राष्ट्रगानक तुल्य अछि।

यत्र-तत्र पसरल भगवतीक सिद्धपीठ जेना उच्चैठ, उग्रतारा आदि शक्तिक आराधनाक सार्थकताकैं प्रमाणित करैत छथि। उच्चैठक कालीक कृपासँ कालीदास मूर्खसँ एकटा महान विद्वान भए गेलाह। कहबी अछि जे ओ तेहने मूर्ख छलाह जे भदवारिक झर-झर पानि बहैत कालमे भगवतीक मुँहमे करिखा लेपए लगलाह जाहिसँ प्रसन्न भए भगवती हुनका वरदान देलथिन। मिथिलाक

त्रिपुंडकसंग लालठोप ओ चाननक उर्ध्वपुणड करबाक परंपराक अर्थ ओकर शाक्त, वैष्णव ओ शैव संप्रदायमे समन्वय स्थापित करब छल। प्रति वर्ष हजारक हजार कमरथुआ वैद्यनाथधाम जाए महादेवकेँ गंगाजल ढ़ारि अवैत छथि। संगे गाम-गाम बनल महादेवक मन्दिर शिवक प्रति आस्थाकेँ प्रमाणित करैत अछि। "करवन हरब दुख मोर हे भोलानाथ" गबैत-गबैत कतेको भक्त लोकनिकेँ अश्रुपात भए जाइत छनि। एतबा होइतो शालीग्रामक रूपमे भगवान विष्णुक पूजा सगरे मिथिलामे पसरल अछि। तुलसी चढ़ाय चरणामृत लए भोजन ग्रहण करैत छथि। जँ गंभीरतासँ कहल जाएतँ मिथिलाक माटि-पानिमे अध्यात्म कुटि-कुटि कए भरल अछि। जन्मसँ मरण धरि हिन्दू धर्मशास्त्रमे जतबा संस्कार कएल जाइत अछि से मैथिल लोकनि बड़ धार्मिक भावनासँ निष्पादित करैत छथि। समाजशास्त्रीय दृष्टिकोणसँ सेहो मिथिलाक मुड़न, उपनायन ओ बिआहक परंपरा समाजक विभिन्न घटकमे समन्वय ओ धार्मिक भावनाक अभ्युदयक हेतु अतिशय महत्वपूर्ण कहल जा सकैत अछि।

भारत भरिमे मिथिलाक बिआहक परंपरा अपनामे विचित्रताक हेतु प्रसिद्ध अछि। वर्षक वर्षधरि पसरल अनेकानेक प्रकारक पर्व ओ त्योहार मिथिलामे बिआहक अनिवार्य अंग थिक। बिआह होइते चतुर्थी, चरुचन, मधुश्रावणी, कोजागरा, बिदाइ, पुछारी, नागपंचमी ओ द्विरागमनक अवसरपर नाना प्रकारक भार पठएवाक परंपराकेँ लोक आबो ओहिना लदने चलि आवि रहल अछि जेना अठ्ठारहम शताब्दीमे रहल होएत। एहि दृष्टिकोणसँ मिथिलाक लोक अखनो पछरले छथि। दहेजक प्रथा तेहन संक्रामक ओ घातक भए गेल अछि जे जिनका दू-तीनटा बेटी होन्हि तिनका दरिद्र बनबासँ भगवाने रक्षा कए सकैत छथि। आवश्यकता

एहि बातक अछि जे मिथिलामे कन्यालोकनिक प्रति जे अन्याय भए रहल अछि से आबो बंद होइक। बोराक आम आ घरक कनिआमे भेद करब कठिन थिक।

एहि सम्बन्धमे सौराठसभा ओ ओकर परंपरागत इतिहासक वर्णन करब उचित होएत।ई भारतवर्षमे अपना-आपमे एकमात्र संस्था थिक जे बिना कोनो राजकीय हस्तक्षेपकेँ प्रतिवर्ष हजारो मैथिल ब्राह्मण लोकनिक बिआह-सम्बन्ध स्थापित करबाक आधार बनैत अछि। एहिठाम एक निश्चित अवधिमे करीब लाख ब्राह्मण जमा होइत छथि। सौराठसभाक स्थापना करीब सए साल पूर्व भेल छल। ओतए पंजिकार लोकनो होइत छथि जे कन्यापक्षकेँ सिद्धान्त दैत छथिन। ओकरा अस्वजन-पत्र सेहो कहल जाइत अछि। नियमानुसार सात पीढ़ी पाछा देखला संता पंजकार ई प्रमाणपत्र दैत छथि जे सम्बन्धित वर ओ कन्या पक्षमे सम्बन्ध भए सकैत अछि। यद्यपि ई व्यवस्था वंश परंपराक प्रतिष्ठा ओ शुद्धता वनयबाक हेतु कएल गेल, मुदा एकर जड़िमे पंजी व्यवस्था छल जे १३१० ई०मे महाराजा हरिसिंघ द्वारा चलाओल गेल। एहि व्यवस्थाक अनुसार मिथिलाक ब्राह्मण लोकनिकेँ चारिभागमे बाँटल गेलाह। (१) श्रोत्रिय, (२) योग, (३) पंजीवद्ध, (४) जयबार। प्रथम तीन कोटिक ब्राह्मण भलमानस कहल जाइत छलाह आ अन्तिम याने जयबार लोकनि कुलशीलक हिसाबे छोट ब्राह्मण कहल गेलाह। सौराठ साभामे बैसबाक स्थान ओहि हिसाबे निर्णीत भेल छल। ऐहि प्रथामे सभसँ बड़का दोष ई छल जे भलमानुष लोकनिक सामाजिक प्रतिष्ठा बहुत बढ़ि गेल आ ओ लोकनि केओ सए केओ पचास एनाकए बिआह सम्बन्ध स्थापित करए लगलाह। कतेकठाम तँ इहो सुनबामे अबैत छल जे भलमानुष लोकनिकेँ बिआह केलाकबाद दोहराकए सासुर जेबाक समय ओ स्मृति नहि रहैत

छलनि।

विभिन्न प्रकारक पाँजि रखनिहार लोकक मूलक संग गाम विशेष वा व्यक्तिविशेषक नाम जोड़ल रहैत अछि। जेना-महादेव ठाकुर पाँजि, शीलानाथ झा पाँजि आदि। यद्यपि आब एहि परंपराक कोनो सामाजिक महत्व नहि रहि गेल अछि तथापि पंजिकारलोकनि एकर भष्मावशेषकेँ उठओने फिरि रहल छथि कारण ओहिसँ हुनका लोकनिक जीविका चलैत छनि। आबक मिथिलाक पाँजि थिक-इन्जीनियर, डाक्टर, प्रोफेसर ओ खूब धनिक लोक।

कोनो ठामक संस्कृतिपर ओकर लिपि ओ भाखाक बड़ प्रभाव होइत अछि। मिथिलाक भाखा मैथिलीकेँ अपन लिपि तिरहुता किंबा मिथिलाक्षर कहल जाइत अछि। दुर्भाग्यक बात थिक जे मैथिलीमे देवनागरी लिपिक प्रयोग संग ओकर मौलिक लिपिक प्रयोगमे प्रचूर ह्रास भेल। एतबा धरि जे मिथिलाक्षरमे लिखा-पढ़ी करएबला लोक आंगुरपर गनलेसँ भेटि सकैत छथि।

मैथिली भाखामे साहित्यक प्रत्येकविधापर काज भेल अछि। प्राचीनकालसँ आइ धरि कतेको विद्वान लोकनि अपन कलमक जोड़सँ एहि भाखाकेँ कृतार्थ कएलनि अछि। चर्यापदमे दार्शनिक तथा धार्मिक मान्यताकेँ लौकिक रूपमे प्रस्तुत करबाक चेष्टा कएल गेल अछि। एकर पद सभमे चौबीस प्रकारक राग-रागिनी सभक प्रयोग भेल अछि। ज्योतिरिस्वरक वर्णरत्नाकर, धूर्तसमागम ओ पंचशायकक मैथिली भाखाकेँ अपूर्व योगदान अछि। वर्णरत्नाकरक ई विशेषता थिक जे हमरा लोकनिक आद्य ग्रंथ होइतो ई गद्यमे लिखल अछि जखन कि आन-आन भाखाक आदिग्रंथ पद्यमे अछि। मध्यकालमे मैथिली साहित्यक युग प्रवर्तक भेलाह

विद्यापति जे संस्कृत, अवहट्ट, ओ मैथिली भाखामे कतेको सोरहि रचना कए अमर भए गेलाह। गाम-गाम पसरल विद्यापतिक सोहर, समदाउन, वटगबनी ओ नाना प्रकारक भक्ति गीत अखनो हुनकर साहित्यिक स्वरुपकैं ओहिना जीवित रखने अछि जे चारि-पाँच सए वर्ष पूर्ब रहल होएत। विद्यापतिक बाद गोविन्ददास झा, उमापति, मनबोध, लोचन, हर्षनाथ झा धरि अपूर्व शृंखला चलल जाहिमे विद्यापति साहित्यक सृजनात्मक छाप सतति परिलक्षित भेल।

चंदा झाकैं आधुनिक युगक प्रवर्तक मानल जाइत अछि। ओ बहुमुखी व्यक्तित्वक लोक छलाह। हिनक सात गोट प्रकाशित ग्रंथ भेटैत अछि तथा पाँच गोट एहनो ग्रंथसभक उल्लेख भेटैत अछि जे अप्रकाशित अछि। हिनक प्रकाशित ग्रंथक नाम थिक- (१) मिथिलाभाषा रामायण, (२) गीति सुधा, (३) महेषवाणी, (४) अहिल्या चरित नाटक (५) चंद्र पद्यावली, (६) लक्ष्मीश्वर विलास, (७) विद्यापतिक पुरुष परीक्षाक गद्य-पद्यमय अनुवाद। हिनक अप्रकाशित रचना अछि- (१) गीत सप्तशती, (२) मूलग्राम विचार, (३) छन्दोग्रन्थ, (४) वाताव्हान, (५) रसकौमदी। विद्यापतिकैं जँ मैथिली साहित्यक सूर्य कहल जाए तँ निश्चय चंदा झा ओहि साहित्यमे चन्द्रमाक स्थान प्राप्त करबाक योग्य छथि।

चन्दा झाक बाद जीवन झा, म.म.परमेश्वर झा वख्सी, रघुनंन्दन दास, म.म.मुरलीधर झा, जनार्दन झा जनसीदन, ओ लालदासक नाम प्रमुख साहित्यकारक रूपमे अविस्मरणीय अछि। लाल दास क रचित रमेश्वर चरित रामायणमे सीताक महिमा बेसी स्थान पओने अछि अर्थात ई शक्तिक प्रधानता देलनि अछि जे मिथिलाक परंपरा ओ संस्कृतिकक अनुकूल अछि। महाकाव्यक क्षेत्रमे सीताराम झाक अम्व चरित, बद्रीनाथ झाक एकावली

परिणय, मधुपजीक राधा विरह, तंत्रनाथ झाक झाक कीचक बध ओ कृष्णचरित, सुमनजीक प्रतिप्रदा स्वतः स्मरण भए जाइत अछि।

एकरे संगे अंग्रेजी, संसकृत ओ मैथिली साहित्यक प्रकाण्ड विद्वान होइतो मैथिली साहित्यकेँ गौरवान्वित करबामे डा. रमानाथ झा ओ डा. जयकांत मिश्रक नाम स्वर्णाक्षरसँ लिखए जोगर अछि। हास्यरसावतार प्रो. हरिमोहन झाक कृतिसँ मैथिली भाखाक कोष भरल-पूरल अछि। ओ अपन उपन्यास कन्यादान आ द्विरागमनक माध्यमसँ मिथिलाक कुप्रथापर अपूर्व चोट कएलनि। खट्टरककाक तंग, प्रणम्य देवता, रंगशाला, चर्चरी आदिक रचनासँ ओ मैथिली साहित्यमे अमर भए गेलाह अछि। डा. शैलेन्द्र मोहन झा, कांशीनाथ झा किरण, श्री वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री'क सेहो अपन-अपन योगदान अछि। यात्रीजी अपन साम्यवादी विचारक पुष्टि करैत बहुत रास ओजस्वी ओ क्रान्तिकारी विचारसँ पूर्ण रचना कएलनि। उदाहरणस्वरूप-

अगड़ही लगउ बरु वज्र खसौ, एहन जातिपर धसना धसौ,

भूकंप होउक फटौक धरती, माँ मिथिले रहि कए की करती?

डा. सुभद्र झाक'फारमेसन आफ मैथिली लिटरेचर", 'हिस्टोरिकल ग्रामर आफ मैथिली ओ प्रवास, हुनक तीनटा पोथी मैथिली साहित्यकेँ प्राण प्रतिष्ठा देबएमे अद्वितीय योगदानक रूपमे अविस्मरणीय अछि। स्व० राजेश्वर झा, योगानन्द झा, स्व. चन्द्रनाथ मिश्र, राजकमल चौधरी, ललित, ओ रमानन्द रेणु, श्री सोमदेव आदि कतेको लेखक लोकनि ओ कवि लोकनि मैथिली साहित्यकेँ हिष्ट-पुष्ट करबामे सहायक सिद्ध भेलाह अछि। एही क्रममे पिलखवाड़वासी गंगेश गुंजनक चर्च सेहो उचित अछि जे

अपन कथासंग्रह- “अन्हार इजोत” ओ कविता संग्रह” हम एकटा मिथ्या परिचय”क हेतु प्रसिद्ध छथि। एकर अलावा हिनक रेडिओ रुपक “जय सोमदेव” श्रोतालोकनिकेँ कतेक आनंदित कएलक अछि से वर्णन करब कठिन थिक।

एहि प्रकारे स्पष्ट अछि जे साँस्कृतिक दृष्टिए “मिथिलाक माटि-पानि बड़ हरिअर अछि। मुदा दुर्भाग्यक बात ई थिक जे आलस्य किंवा प्रमादवश हमरालोकनि अपने साँस्कृतिक उपलब्धिकेँ बिसरि रहल छी। “बारीक पटुआ तीत” जे कहल गेल अछि से सगरे मिथिलामे प्रयुक्त अछि। सीकींसँ नीक-नीक बासन बनाएब वा उपनायन, बिआह ओ आन-आन शुभ अवसरपर सुन्दर-सुन्दर कढ़ाइ करब मिथिलामे हजारक हजार वर्षसँ प्रचलित अछि। गाम-गाम एकसँ एक कलाकार एहि कलाकेँ जीवित रखने रहलाह मुदा एकर महत्व लोक तखन बुझलक जखन कि हजारक हजार संख्यामे एहि वस्तुसभक मांग किछु वर्ष पूर्वसँ विदेशीसभ करए लगलाह।

जाहि मिथिलाक ध्वजा न्यायशास्त्रमे देशभरिमे फहराइत रहल, जतएक गायक लोकनि देशभरिक राज परिवारमे सम्मानक पात्र छलाह ओ कलाक दृष्टिसँजे सर्वत्र सम्माननीय छल ओहीठाम लोक भरि जाढ़मे घूरतर ओ गर्मीमे पीपड़क छाहरिमे गप्प मारि-मारि दरिद्राक सेवन करैत सभ तरहेँ क्षीणशक्ति भए रहल छथि से चिन्ताक बात अवश्य अछि मुदा एकर अर्थ ई कदापि नहि जे हम अपन आत्मविश्वासकेँ परित्याग कए दी आ अन्धाधुन्ध आन-आन साँस्कृतिक ऐब सभकेँ अपना जीवनमे प्रश्रय दी। ❑(१४ अगस्त १९८३क मिथिला मिहिरमे प्रकाशित)

गया गेल रही

बहुत दिन सँ माएक बारंबार सपना अबैत रहैत छल। एहि सपना सभक रहस्य नहि बुझा रहल छल। तथापि मोनमे भेल जे गया चली, पिणडदानक बड़ महत्व सुनैत छी। ओहिठाम पिणडदान केला पर पितरसभ मुक्त भए जाइत छथि। मुक्त भेल पितरसभ अपन वंशजकें आशीर्वाद दैत छथि जाहिसँ सभक कल्याण होइत अछि।पंडितजीसँ गप्प कए गया जेबाक दिन तकओलहुँ। विचार विमर्षक बाद फरबरीक अन्तमे, २५ फरबरीकें जेबाक कार्यक्रम बनल, आपसी २८ फरबरीक। तीन मास पूर्बे रेल टिकटक आरक्षण करओलहुँ।

क्रमशः गया जेबाक समय लगीच आबि रहल छल। चिन्ता रहए जे कोना की करी। करवनो काल होइत जे एखन स्थगित कए दी। फेर भेल जे जखन कार्यक्रम बना लेने छी तँ ई काज कइए लेल जाए। पण्डितजीसँ परामर्श कए चीज-वस्तुक ओरिआनमे लागि गेलहुँ। मुदा सभसँ चिन्ता छल पणडासभसँ कोना निपटल जाएत? सुनैत रही जे ओहिठाम टीशनेपरसँ पणडाक आदमीसभ घेर-बार शुरु कए दैत अछि। गयामे रहबाक चिंता सेहो होइत छल। संयोगसँ ओहि दिन हमर मित्र मिसरजी भेटि गेलाह। ओ पहिने गया पिंडदान हेतु गेल रहथि। हुनकर परिचित पंडा आ एकटा महापात्रजीक फोन नंबर भेटल। ओ अपनो स्तरसँ पंडाजीसँ आ महापात्रजीसँ गप्प कए हमर काज हल्लुक कए देलाह।

महापात्रजीसँ गप्प भेल तँ सभसँ पहिने ओ कहलाह जे दिन

उपयुक्त नहि अछि, पितृपक्षक समय फगुआक बाद हेतैक, तकरबाद कोनो दिनक टिकट लए सूचित करु। हम कहलिअनि जे हम तँ चारि माससँ दिन तकओने छी।

"के दिन तकलाह अछि? हमरा गप्प कराउ।"

आब कि करी? दिन तकनिहार पंडितजी विद्वान छथि, समय दए दिन तकलथि, ताहि हिसाबे टिकट लेने छी। आब जखन जेबाक समय लगीच आबि गेल तँ दोसरे बात सुनि रहल छी। पंडितजीसँ फेर गप्प कए सभ बात कहलिअनि। ओ अपन निर्णय पर दृढ़ छलाह, दिन सही अछि, महापात्र की कहताह। हमरा हुनकर बातमे दम बुझाएल। ओ निश्चय सही दिन तकने हेताह। महापात्रजीकेँ फोन कए कहलिअनि जे हमर कार्यक्रम तय अछि, दिन सही छैक, अपने ओहि दिनक हिसाबसँ उपलब्ध भए सकब कि नहि से कहू। असलमे हुनका पहिने सँ किछु काज गछल रहनि, ओ ई अवसर सेहो नहि जाए देवए चाहथि। जखन बुझा गेलनि जे हम अपन कार्यक्रम पर अड़ि गेल छी, तँ ओ तैयार भए गेलाह। कहलाह जे हुनका २६ फरबरीक उपनायन करेबाक छनि, तें २६क रातिमे गयेमे रहताह आ सभटा काज नीकसँ करा देताह। कहलाह-

"चिन्ता नहि करु। सभटा भए जेतैक।"

ओ समान सभक सूची लिखा देलाह। ओहि सूचीमे ततेक तरहक अंट-बंट सभ चीज-बस्तुक नाम छल जे एकट्ठा करब बहुत कठिन बूझाएल। तैँ समानसभ आनबाक भार हुनके दए हम निश्चिन्त भेलहुँ। समान सभक वाजिब दाम देबाक आश्वासन हम देलिअनि। ओ सहर्ष ताहि हेतु तैयार भए गेलाह। तकरबाद हम अपन तैयारीक अनुसार बिदा भए गेलहुँ। ओहिसँ पहिने

महापात्रजी कैक बेर फोन कए आश्वस्त होइत रहलाह जे हमर कार्यक्रम पक्का अछि, ओहिमे कोनो परिवर्तन नहि भेल अछि, जे निश्चित तिथिक हमसभ ओतए पहुँचि रहल छी, जे हुनकासँ भोरे भेँट होएत।

गयासँ पंडाजीक सेहो फोन आएल। ओ हमर कार्यक्रमक बारेमे आश्वस्त होमए चाहैत छलाह। हम कतए ठहरब सेहो जानए चाहैत छलाह। इहो कहलाह जे रहबाक व्यवस्था हुनके ओहिठाम भए सकैत अछि। मुदा जखन ओ एहि बातसँ आश्वस्त भए गेलाह जे हम हुनकेसँ संपर्क करब तखन निश्चिन्त भए गेलाह। संगहि कहलाह जे टीसनपर पहुँचते हुनकासँ संपर्क कएल जाएत जाहिसँ कोनो आओर पंडाक आदमी तंग नहि करत आओर हुनकर आदमी ओतहिसँ हमरा होटल लए आनत। हम अपन रहबाक व्यवस्था होटलमे केने रही। ताहि हेतु पहिनहिसँ आनलाइन आरक्षण करओने रही। हम पंडाजी ओहिठाम नहि रहए चाहैत रही कारण ओतए पता ने केहन की होएत, से मोनमे संका रहए।

२५ फरबरी २०१८क साँझमे भुवनेश्वर राजधानीसँ हम आ हमर श्रीमतीजी गया बिदा भेलहुँ। ओहिसँ पूर्व होटलमे फोनकए सूचना दए देल जे हमसभ भोरे पाँच बजे होटल पहुँचब। तदनुकूल हमरा सभलेल व्यवस्था कएल जाए। रस्ता भरि खाइत-पिबैत हमसभ यात्राक आनन्द लैत रहलहुँ। सासारामक लगमे ट्रेन छलैक कि एकटा सहयात्री चिचिआ उठलाह जे गया आबयबला अछि। कैकटा यात्री हुनक डाक सुनि उठि कए समान लए द्वारि पर आबि गेलाह। रातिक समय छलैक, केओ जोखिम नहि उठाबए चाहए, कारण गयामे ट्रेन चारि बाजि कए बीस मिनटपर पहुँचक छल, आ यदि रातिमे सुता गेल, सुतले रहि गेलहुँ, तहन तँ गेल महिंस पानिमे परड़ समेत। एहि चक्करमे चारि-पाँचबेर द्वारि धरि गेलहुँ आ वापस

सीट पर अएलहुँ। अन्ततोगत्वा लगभग एक घंटा बाद ट्रेन गया टीसनपर पहुँचल।

हम सभ भोरे गया टीसनपर पहुँच गेल रही। होटल ग्रैंड पैलेस टीसनसँ सटले छल। ततबे लग रहैक जे टीसनपर होइत उद्घोषणा होटलमे सुनाइत छल। होटलमे पहुँचि हमरा लोकनि थोड़ेकाल विश्राम कएल। नित्यक्रमसँ निवृत भए बैसले छलहुँ कि पंडाजीक फोन आएल। होटलक पता पुछलाह। थोड़ेकालक बाद ओ होटल पहुँचि हमरसभक हाल-चाल लेलाह, आ सभ तरहे निश्चिंत रहबाक हेतु कहलाह। महापात्रजीकेँ रातिमे अएबाक कार्यक्रम रहनि। महापात्रजी बारंबार फोनपर कहैत रहलाह जे एकभुक्त कए लेब। केस कटा लेब। हमसभ समान लए रातिए पहुँच जाएब। काल्हिसँ पिण्डदान होएत।

ओहिदिन, माने २६ फरबरीक उपयोग हमरा लोकनि वोधगया देखएमे केलहुँ। गयासँ बोधगया जेबाक हेतु टेम्पू 200 टाकामे भेटल। गयासँ बोधगयाक दूरी करीब-करीब १३ किलोमीटर अछि। रस्ताक हालत खस्ता अछि। लगबे नहि करत जे अन्तर्राष्ट्रीय महत्वक तीर्थस्थान जा रहल छी। गया शहरक हाल मधुबनी, दड़िभंगे जकाँ अछि। नाला सभ नर्कक प्रतिरूप भेल, वातावरण दुर्गंधसँ भरल। होइत जे कतए आबि गेलहुँ। करीब आधाघंटामे टेम्पु बोधगया मन्दिर लग पहुँच गेल। कनिके काल पैरे चलि हमसभ मन्दिर लग बनल मालखानामे पहुँच गेलहुँ। ओहिठाम मोबाइल फोन सभ जमा करब अनिवार्य, कारण से सभ लए मन्दिरक अन्दर नहि जा सकैत छी। मोबाइल फोन जमा कए हम सभ कनिके आगू बढ़लहुँ कि एकटा टेम्पूबला सौंसे बोधगया घुमाबक प्रस्ताव देलक, २०० टाकामे। हम सभ मानि गेलहुँ आ ओहि टेम्पूसँ आस-पासक वोध मन्दिर सभ देखए निकललहुँ।

भूटान, तिब्बत, चीन, बर्मा, श्रीलंका, वियतनाम, थाइलैंड, जापान, थाइलैण्ड आदि अनेको देश, बुद्धक अनुयायी संगठन सभ अपन-अपन बुद्धक मठ बनओने छथि। ओहिमे भव्य बुद्धक प्रतिमा स्थापित अछि। कैकटा मन्दिर तँ अत्यंत शोभनीय थिक। मुदा बाहर ढाकक तीन पात। सड़क सभ खण्डहर भए रहल अछि। लगबे नहि करत जे एतेक प्रमुख स्थानमे घुमि रहल छी। आश्चर्यक बात जे एतेक महत्वक स्थानक एहन उपेक्षा भेल अछि? टेम्पोबला काते-काते सभठाम घुमा-फिरा हमरासभकेँ महाबोधि मन्दिर लग उतारि देलक। मोबाइल पहिने जमा कए देने रहिऐक, तेँ फोटो नहि खीचि सकलहुँ।

महाबोधि मन्दिरमे जाइत काल हाथक बैगक जाँच भेल। ओहिमे चार्जर, हेडफोन छलैक। कतबो कहलिऐक जे ओकरासभकेँ रहए दैक, मुदा नहि मानलक, द्वारि पर असबार सिपाही अड़ि गेल। हारि कए दोबारा ई बस्तुसभ जमा करए गेलहुं। तकरबादे मन्दिरक परिसरमे प्रवेश भए सकलहुँ। मन्दिरक मुहथर लग एक गोटा नवका दसटकही, बीसटकही, नोटसभक गड्डी बेसी पैसा लए कए विदेशी सभके दैत देखलहुं। आगा बढ़ला पर विदेशी तीर्थयात्री सभक भरमार देखाएल। आगन्तुक वौद्धसभक हेतु प्रसाद भिक्षापात्रमे देबाक ओरिआन भए रहल छल। अन्दर मन्दिरमे ठाम-ठाम विदेशी वौद्धसभ ध्यान कए रहल छलाह। मन्दिरमे अपूर्व शान्ति छल। एकटा गोर-नार विदेशी महिला सूतल वा ध्यानस्थ छलीह। लगैत छल जेना कोनो मुरूत पड़ल अछि। गर्भगृहमे अपार शान्ति छल। अगल-बगलमे वौद्धसभ माला फेरि रहल छलाह। ओहिठाम दर्शनकए हमसभ वापस आबि गेलहुँ। मोबाइल छोड़ओलहुं। फेर टेम्पो पकड़लहुँ, आ वापस गया टीसन लग स्थित होटलमे आबि गेलहुँ।

प्रातःकाल नित्यकर्मसँ निवृत भए महापात्रजीकेँ फोन लगाओल। हमरा उमीद चल जे ओ रातिएमे आबि कए पंडाजी ओतए ठहरल हेताह, जेनाकि पहिने कहने रहथि। मुदा ओ तँ ट्रेनेमे छलाह।

"जहनाबाद पहुँचि गेल छी। ट्रेन लेट भए गेलैक, नहि तँ पहुँचि गेल रहितहुँ। दू घंटामे आबि जाएब। चिंता नहि करब। हम सभ समान लए कए आबि रहल छी।"

महापात्रजीकेँ विलंब होइत देखि दू-तिनबेर फोन केलिअनि। ओ तँ ट्रेनमे बैसल रहथि, बेर-बेर कहथि:

"आब लगे अछि। सभटा भए जेतैक।चिंता नहि करब। दू दिनमे सभटा काज भए जेतैक।"

आखिर ओ दूटा झोरामे समान सभ लए ९ बजे सोझे हमर होटल पहुँच गेलाह। मोन आश्वस्त भेल जे आब काज भए जाएत। नित्यकर्मसँ निवृत भए महापात्रजी हमरासभक संगे पंडाजीक ओतए बिदा भेलाह। पंडाजीक ओतए हेतु टेम्पु कएल। सड़कपर उतरि पाँच मिनट पैरे चललाक बाद हुनकर घर आएल। मधुबनी, दरभंगा जिलाक लोकसभक इएह पंडा छथि, से ओ कहलाह। निसान झंडापर माछक, दरभंगा महराजक देल। गलीक एक तरफ पुरना घर छैक, जे दरभंगा महाराज बनओने रहथि। तकर ठीक सामने नव पक्का घर बनल अछि, जाहिमे यात्री लोकनिक ठहरबाक इंतजाम अछि। नीकसँ बनल ओ सुविधापूर्ण कोठरीसभ अछि। से देखि भेल जे एतहुँ रहि सकैत छलहुँ। मुदा मुख्य रस्तासँ बहुत चलए पड़ैत छैक, फेर ओही वातावरणमे दिन-राति रहू। होटलमे चलि गेलाक बाद एकटा नवीनताक अनुभव होइत छल।

सभसँ पहिने पंडाजीसँ आज्ञा लेल गेल। ताहि हेतु हुनकर पैर पूजल जाइत अछि। किछु संकल्प कएल जाइत अछि, जे एतेक-ने-एतेक दान, दक्षिणा करब। तखन ओ आशीर्वाद दैत काज करबाक स्वीकृति दैत छथि। हमसभ आगा बढ़ैत छी। पंडाजी बएसमे हमरासँ बहुत छोट छलाह, तेँ कनी कोनादनि लागल। बादमे महापात्रजीकेँ ई गप्प कहलिअनि। कहलाह जे एहिठामक अधिकारी इएह थिकाह, हिनके चलत, आदि, आदि।

पंडाजीसँ आज्ञा लए हमरा लोकनि फल्गु नदीक कछारपर पहुँचैत छी। ओतए छोटसन महादवक मन्दिर छल। सामनेमे खाली स्थान देखि कर्म शुरु भेल। पिण्डदान हेतु हमर श्रीमतीजी गोल- गोल पिण्ड बनओलथि जतेक पुरखासभ ज्ञात, अज्ञात मोन पड़ैत गेलाह सभकेँ लेल पिण्डदान देलहुँ। जतेक काल हम पिण्डदान करैत रहलहुँ ततेक काल एकटा बुढ़िया आ दूटा छौड़ा मिलि ओतए हल्ला करैत रहल। ओकरा लेल धनि-सन। ततेक हल्ला करैत गेल जे मंत्रो सुनब पराभव रहैत छल। महापात्रजी कहलाह :

“अहिसभपर ध्यान नहि दिऔक, काजमे लागल रहू। ई सभ एहीठामक बासी छैक।”

पिण्डदानक बाद पिण्डकेँ फल्गु नदीमे पानि देखि कए फेरबाक हेतु हमर श्रीमतीजी आगू बढ़लीह। कहल गेलनि जे फल्गु नदीमे चलल एक-एक डेग आश्वमेध यज्ञक बरोबरि होइत आछि। फल्गु नदी तँ रेतसँ भरल अछि। कहि नहि एकरा नदी किएक कहल जा रहल अछि। कोनो समयमे भए सकैत अछि ई नदी रहल होएत, मुदा आब तँ निट्ठाह रेतसँ भरल अछि। बहुत आगू गेलाक बाद कनिक पानि छल जे बालुमे खधिआ कए निकलल छल, ओतहि

पिण्ड फेकि ओ लौटि गेलीह। अगल-बगल ठाढ़ छौड़ासभ आओर ओ बुढ़िआ पैसा मांगए लागल आ जाबत लेलक नहि चुप्प नहि भेल। महापात्रजी आपना छोड़ि ककरो पैसा देल जाए ताहि हेतु तैयार नहि छलाह, मुदा कोनो उपाय नहि छल, ओकरा सभकेँ किछु-किछु दए जान छोड़ा हमसभ ओतएसँ आगू बढ़ि सकलहुँ।

ओहिठामसँ आगा जएबाक हेतु भरिदिनक बास्ते २५० टाकामे एकटा टेम्पू महापात्रजी ठीक केलाह। टेम्पूबला बहुत उत्साही आदमी छल। बीच-बीचमे बेस मनोरंजक मुद्रा बनाए तरह-तरहक गप्प-सप्प करैत बढ़ैत रहल। कनीकालमे हमसभ प्रेतशिला पर आबि गेल रही। ओतए पहिने घाटपर पिण्डदान भेल। ओहिसँ सटल पोखरि कही, ताल कही, जे कही, छल जे नर्कक दोसर रूप लगैत छल। ओहिमे सँ जल लए पिण्डदान होएत से सोचिएक रोंआ ठाढ़ भए गेल। खैर! जे करबाक छल से छल। ओहिमे सँ जल आनल गेल। कतेको गोटे आस-पास पिण्डदान करैत छलाह। हुनका स्थानीय लोकसभ पैसा लेल कोनो कर्म बाँकी नहि रखने छल। पाई नहि देबै आ पिण्डदान करब, भए नहि सकैत अछि। हमसभ जखन ओतए पिण्डदान कए लेलहुँ तँ एकटा बेस मजगूतगर, कारी भुसुंड लोक आबि पैसा देबाक आग्रह करए लागल जे महापात्रजीकेँ पसिन्न नहि रहनि। ओहिबातसँ ओ व्यक्ति महापात्रजीकेँ गरिआबए लागल, बात बढ़ए लागल, महापात्रजी सेहो किछु कहलखिन। ओहो चुप्प नहि रहल। महापात्रजीक गट्टा धेलक आ गरजए लागलः

"आब तूँ अबिअह झाजी! अगिलाबेर सँ टपए नहि देबह। आदि, आदि।"

बात बिगड़ैत देखि हमसभ जल्दीसँ ओकरा एकसए टाका दए जान छोड़ौलहुँ। हमसभ तँ पहिनेसँ ओकरा पैसा देबए हेतु मोन बनओने रही, कारण ओकरा दोसर सभक संगे फसाद करैत हम देखैत रही मुदा महापात्रजी रोकैत रहलाह, तकर फलो ओ भोगलाह। कनी-मनी धक्का-मुक्की तँ भेबे केलनि। ओहो पाछा नहि रहल रहथि।

तकरबाद हम सभ प्रेत शिला दिस बढ़लहुँ। चारि सए सीढ़ी चढ़ए पड़त, ताहि हेतु पालकी सेहो उपलब्ध छल। दोसर विकल्प छल जे बीस सीढ़ीक बाद एकटा छोटसन स्थान छल। ओतए महादेवक मन्दिर सेहो बनल छल। ओतए कैगोटा पिण्डदान करैत छल। महापात्रजीक सलाहपर हमसभ दोसर विकल्प चुनि ओतहिँ पिण्डदान करबाक निर्णय कएल। जगह साफ चल। बैसबाक हेतु आसनी सेहो भेटि गेल। ओहिठामक पण्डाजी सरल व्यक्ति बुझेलाह। चैनसँ पिण्डदान भेल। कनिके हटिकए एकटा परिवारकेँ हवन करैत देखलहुँ। महापात्रजी कहलाह जे ओहि महिलाकेँ प्रेतबाधासँ मुक्ति दिआबक हेतु होम भए रहल छल़।

पिण्डकेँ फेकबाक हेतु तए स्थानपर पहिने सँ एकटा बंगाली अधबएसू लोक अपन बेटाक अकाल मृत्युक बाद ओकर फोटोकेँ ओतए राखि किछु- किछु कए रहल छलाह। पण्डाजी दूसए टाका देबाक आग्रह पर अड़ल छलाह, जेकर बाद ओहि मृत व्यक्तिकेँ प्रेतयोनिसँ मुक्ति भए जएतेक। ओ अपन गरीबीक बारंबार हबाला दैत एकसए टाकासँ आगा नहि बढ़ रहल छलाह, अन्तमे डेढ़सए टाकामे बात तए भेल। मंत्र पढ़ि ओहि फोटो पर फूल चढ़ओलथि। कतेक क्रूड़ छल ओ दृश्य, की कहू? तकर बादे हमसभ ओतए पिण्ड रखलहुँ। टाका दए जल्दीए ओतएसँ खसकलहुँ। लगेमे पीपड़क

गाछक जड़मे बहुत रास मृत व्यक्तिसभक फोटो टांगल छल। महापात्रजी चिकरलाहः

“जल्दी बिना पाछा तकने आगा निकलि जाउ।”

सएह कएल। प्रेतशिलासँ उतरि हमरा लोकनि नीचामे भोजनालयमे बैसलहुँ। महापात्रजीकेँ भूख लागि गेल छलनि। ओ भोजन करताह। हमसभ राबरी खाएब। सभगोटे चाह पीब। से सभ बिचारि हमसभ ओतए बैसलहुँ। महापात्रजी भरिपोख भोजन केलाह, फेर पावभरि खोआ सेहो देलखिन। हमहुँसभ खोआ खेबामे पाछा नहि रहलहुँ, कारण भूख जोर मारि रहल छल। भोजन तँ नहि कए सकैत छलहुँ कारण अखन आओर ठाम पिण्डदान देबाक छल। महापात्रजीकेँ गया महात्म्यपर एकटा पोथी किनबाक हेतु एकटा बच्चा कतेक गोहरओलक, मुदा ओ नहि मानथि। हारिकए ओ एकसएसँ दाम घटबैत-घतबैत बीसटका पर आनि देलक, तैओ ओ अपन बातपर अड़ल रहथि।

“धुर्र, ई की लेब, बेकार थिक।”

अन्तमे हमरे दया आबि गेल आ हुनकासँ नुकाकए बीसटकामे गया महात्म्य कीनि लेलहुँ। भोजन करितहिँ महापात्रजीकेँ फुर्ती आबि गेल। हमसभ तुरंत टेम्पूसँ रामशिलाक हेतु बिदा भए गेलहुँ। पहिने रामशिला घाटपर आ तकरबाद ऊपरमे बनल मन्दिरमे पिण्डदान भेल। तालाबक हालत पर नहिए चर्च करी सएह नीक। ऊपर मन्दिरपर कनिके चढ़लाक बाद पिण्डदेबाक स्थान भेटि गेल आ ओतहिँ पिन्डदान देल गेल।

एकरबाद काकबलिकेँ पिण्ड दैत हमसभ गोटे टीसन रोड स्थित होटल पहुँच गेलहुँ। महापात्रजी संगमे छलाह। ओ जे

समानसभ अनने रहथि तकर गोट-गोटक दाम दए हुनकासँ ओहि दिनक हेतु छुट्टी लेल। ओ पंडाजी ओहिठाम रहए हेतु चलि गेलाह। काल्हि अन्तमे ब्राह्मण भोजन हेतु पंडाजीकेँ कहलिअनि। कहल जाइत अछि जे गयामे एकटा ब्राह्मण भोजन करेलापर एक हजारक फल होइत आछि। हम एगारहटा ब्राह्मण भोजनक व्यवस्था करबाक भार हुनका देलहुँ, तकर खर्चा प्रात भेने हम हुनका देलिअनि।

प्रेतशिला लगक होटलमे जे खोआ खेने रही, से डेरा अएलाक बाद रंग देखबए लागल। ताबरतोर पेट झड़ए लागल। संगमे दबाइ छल, से खेलहुँ। कहुनाक मामला सम्हरल। दिनभरिक धमाचौकड़ीक बाद आब आराम जरूरी छल, से कएल।

प्रातभेने हमसभ विष्णुपाद मन्दिर बिदा भेलहुँ। महापात्रजी ओतए पहिने पहुँचि गेल रहथि।

“पहिने घाटपर पिण्ड पड़त, तकर बादे विष्णुपाद मन्दिरमे”

महापात्रजी बजलाह। हमसभ ओतए पहुँचलहुँ। पोखरिक कातमे बैसि पिण्डदानक काज शुरु भेल। एक-दूटा युवक ओतए ठाढ़ रहथि। जहन पोखरिमे पिण्ड फेकि हमसभ जेबाक हेतु उठलहुँ कि ओ तीन गोटे भए गेल रहथि आ पैसाक मांग भेल।

“ओकरा सभकेँ किछु नहि देबाक छैक”

महापात्रजी कहैत रहलाह। से सुनि ओ सभ हुनका गरिआबए लागल, मारि करए पर उतारू भए गेल। महापात्रजी सेहो गरमाए लगलाह। तावत एकटा केओ स्थानीय व्यक्ति अएलाह। ओ हमरासभकेँ ओतएसँ घसकबामे मदति केलाह। ओ युवकसभ महापात्रकेँ गाढ़ि पढ़ैत रहल।

तकरबाद पैरे-पैरे हमसभ विष्णुपाद मन्दिर पहुँचलहुँ। ओतए बेस गहमा-गहमी छल। बड़काटा मन्दिर, ततबे पैघ ओकर प्रागण। निचा उतरब तँ बालुसँ भड़ल फल्गु नदी। बालुए-बालुए हमसभ फल्गु नदीकेँ टपि गेलहुँ। ओकर दोसर छोड़पर सीताकुंड थिक। कहबी छैक जे भगवान राम अपन पिता दसरथकेँ पिंडदान हेतु ओतहि आएल रहथि। पिण्डदानक चीज-वस्तुक ओरिआओन हेतु गेल रहथि कि सीताजी मंत्र पढ़ि दसरथकेँ बजा लेलखिन। सीताजी की करितथि? कहलखिन जे राम तँ पिण्डदानक चीज-वस्तुक ओरिआओन हेतु गेल छथि। मुदा दसरथ कहलखिन जे आबतँ हम आबि गेल छी। तखन सीताजी स्वयं बालुएसँ पिण्डदान केलीह। ओहिठाम सीताजीक नाम पर छोटसन मन्दिर अछि जाहिमे दसरथक हाथ बनल अछि। फल्गु नदीमे ओहिठाम कैगोटे पिण्डदान करैत रहथि। ओतए दूटा पंडितमे दक्षिणा हेतु झगड़ा होइत रहलनि। हमसभ पिण्डदानमे लागल रहलहुँ। महापात्रजी हमर श्रीमतीजीकेँ चीज-वस्तु, गहना, टाका दान करबाक हेतु प्रेरित केलाह। से सभ यथासाध्य भेलनि। हुनकर कहबाक हिसाबे हमसभ समान सभ लए गेल रही। पिन्डदानक बाद ऊपर मन्दिरमे दर्शनकए, पिण्ड चढ़ाए हमसभ फेर बालुए- बालुए विष्णुपाद मन्दिर लग पहुँच गेलहुँ।

फल्गु नदीमे पानि नहि अछि। मुदा जँ तीन-चारि हाथ गहींर कएल जाए तँ पानि भेटि जाइत छैक। तेहन कूप दू-तीन ठाम बनाओल देखाएल। यत्र-तत्र लोकसभ पिण्डदान करैत छलाह। ऊपर अएलाक बाद महापात्रजीकेँ चाहक तलब अएलनि। चाह आनए हमसभ ऊपर गेलहुँ। ताबते एकटा मुर्दाकेँ “राम नाम सत्य है” कहैत लोकसभ ओहिठाम रखलक। किछु विध-विधान सभ केलक। तकरबाद ओकरा अन्तिम संस्कार हेतु फल्गुक कछारपर

लए गेल। हमसभ चाह पिबैत ई सभ देखैत रहलहुँ। तकरबाद एक कप चाह महापात्रजीक हेतु अनलहुँ। चाह पीवि ओ टनगर भेलाह। हमसभ आगाक काज हेतु विष्णुपाद मन्दिरमे पहुँचलहुँ।

विष्णुपाद मन्दिरमे देशक विभिन्न भागसँ तीर्थयात्रीसभ आएल रहथि। करीब पचास गोटे तँ आंध्र प्रदेशक रहथि। ओहिना बहुत रास वंगालीसभ सेहो देखेलाह। सभ गोटे पिण्डदानमे लागल रहथि। स्थानीय पंडा जोर-सोरसँ मंत्र पढ़बएमे लागल रहथि। आंध्रासँ आएल तीर्थयात्रीसभ बहुत अनुशासित रहथि। मन्दिरमे ओकर द्वारि पर ठाढ़भए बड़ीकाल हुनकासभकेँ मन्दिरक पंडाजी मंत्र पढ़बैत रहलनि, ओसभ पढ़ैत रहलाह। तकरबाद सभ दस-दस टका दैत गेलाह आ पंडाजी बेरा-बेरी सभकेँ मन्दिरमे प्रवेश करबैत रहलाह। बिना टाका देने एक्को गोटे अन्दर नहि जा सकैत छल। ओ मन्दिरक मुहथर छेकने ठाढ़ छलाह। ओहिठाम ततेक हल्ला होइत रहल जे हमरा महापात्रजीक कहल मंत्रसभ सुनबामे आ सुनि बजबामे बहुत दिक्कति होइत रहल। कहुना-कहुना कए पिण्डदान समाप्त भेल।

“मन्दिर बंद भए जाएत, जल्दी करू।”

महापात्रजी बारंबार चेतावथि। हमसभ धरफराइत मन्दिरक गर्भगृहमे पहुँचलहुँ। मन्दिरक गर्भगृहमे बहुत लोक छल। अन्दर जाएब, आ मुर्तिलग जाएब पराभव छल। कहुना कए ठेलमठेला करैत ओतए पहुँचलहुँ। ओहिठाम एकटा पंडाजी पहिनेसँ एकगोटेसँ पैसा लए झंझट कए रहल छलाह। ओकरासँ जखन बात फरिछाएल तखन हमरा पर ध्यान गेलनि। ओ पींड चढ़एबाक हमर प्रयासपर हुंकार भरैत महापात्रपर बिगड़लाह।

"एतए तोहर नहि चलतह। ई हमर जगह अछि।"

ओ पैसा तए करए चाहैत छलाह, महापात्र किछु मामुली रकम देबाक हेतु कहैत छलाह। एहि बातसँ ओ बहुत तामसमे छलाह कि कोनो दोसर जजमानक फोन आबि गेल, ओ एकदमसँ फोन करैत बाहर भगलाह, कारण ओहिठाम ततेक हल्ला होइत रहैक जे किछु नहि सुनाइ पड़ि रहल छल। बाहर मन्दिरक द्वारिपर ओ गप्प करैत रहलाह आ हमसभ पिंड चढ़ाए ओतएसँ, हुनका सामनेसँ, निकलि गेलहुँ। हुनका किछु नहि हाथ लागल। ओहिठामसँ हमसभ दक्षिणाग्निपद पहुँचलहुँ। ओतए पिंडदान दए हमसभ वैतरणी पहुँचलहुँ। ओहिठामक पोखरि आने पोखरिसभ जेना नर्क लगैत छल। ओतहुँ ओहिना पिंडदान भेल। सभसँ अन्तमे पिंडदान भेल अक्षयवटपर।

अक्षयबटपर बेस पैघ बरक गाछ अछि। ओहि गाछक जड़िमे बहुतरास लालडोरा, पीअर कपड़ा, सभक गेँठी कएल अछि। ओहि गाछक छाहरिमे हम पिण्डदान केलहुँ। पिण्डकेँ गाछक जड़िमे फेकि ओहिठामसँ बिदा भेलहुँ। पंडाजीकेँ पहिने फोनकए देने रहिअनि जे आब हमसभ घंटाभरिमे पहुँचि रहल छी। ओहिठामसँ हमसभ मंगला भगवतीक दर्शन कएल। मंगला भगवतीक दर्शनकए बाहर निकलल रही की बहुत रास भीखमंगासभ पैसा मांगए लागल। हम किछु दसटकिआ निकालि देबए लगलिऐक। एतबेमे भीखमंगाक पथार लागि गेल। एक डेग आगा बढ़ब मोसकिल भए रहल छल। कनिक आगा बढी आ जोरसँ किछु टाका फेकि दिऐक जाहिसँ फेर कनिक आगा बढी। बहुत मोसकिलसँ टेम्पूधरि पहुँच सकलहुँ। तैओ ओ सभ घेरने छल। फेर जुमाकए किछु दसटकही एहि हिसाबसँ फेकलहुँ जाहिसँ टाका लुझबाक चक्करमे ओसभ कनी फटकी होमए आ टेम्पू आगा

बढ़ि सकए। टेम्पू आगा बढ़ैत अछि, तथापि किछु वच्चा बहुत दूर धरि पछोड़ धेने अछि :

“बाबा! हमरा किछु नहि भेल।”

फेर किछु टाका निकालैत छी, ओकरासभकेँ किछु- किछु कए दैत छिऐक। ताबे टेम्पूबला आगा बढ़ि गेल। तकरबाद ठोकले पंडाजीक ओतए पहुँचलहुँ। भरिदिन मंत्र पढ़ैत-पढ़ैत मुँहमे सपटी लगैत छल। भूख से लागि गेल छल। मुदा अखन एकटा महत्वपूर्ण प्रकरण बाँचल छल। तकरा पुरा करबाक हेतु हमसभ पंडाजीक ओतए पहुँचि गेल रही।

पंडाजीक ओतए पहुँचैत छी। ओहिठाम पहिनेसँ सभटा इंतजाम भेल अछि। सज्जादानक हेतु सभटा बस्तु एकटा कोठरीमे राखल अछि। पंडाजी अपने एहि काजक हेतु अबैत छथि। हम पहिने गछल टाका देबाक गप्प दोहरबैत छी। तकरबाद सज्जा दान कएल गेल। एहिठाम एकटा गप्प कहब जरुरी बुझा रहल अछि जे सभ समानकेँ एकहिबेरमे मंत्र पढ़ि दान कए देल गेल। श्राद्धमे एक-एक बस्तुक हेतु अलग-अलग मंत्र पढ़ाओल जाइत छल। ओ बहुत श्रमसाध्य आ उबाउ तरीका छल। सज्जा दानकबाद पंडाजी कहलाह जे गयामे एकटा ब्राह्मण आनठामक एक हजारक बरोबरि फलदायी होइत अछि, से कहू कतेक ब्राह्मणक भोजन हेतु दान करब। एकटा ब्राह्मण हेतु यथोचित टाका अलगसँ गछलिअनि। अन्तमे फूलक मालासँ हमर दुनू व्यक्तिक हाथ बान्हैत कहलाह जे एकर तोड़ाइ हेतु किछु अलगसँ कहिऔक, सेहो गछलिऐक, तखने ओहिठामक विधसभ पूरा भेल। हुनका प्रणाम कए चैनसँ बैसलहुँ। पण्डाजीक ओहिठाम आगन्तुकसभक बहुत नीकसँ हिसाब राखल जाइत अछि। सभक नाम-गाम, पता, गया अएबाक तिथि लिखल

जाइत अछि। गाम-गामक अलग-अलग पृष्ठ अछि। हमरा गाम पछिला सए सालमे गया गेनिहारक सूची ओ देखेलाह। बहुत नीक लागल। ओहिमे अपन गामक कतेको गोटेक नाम देखल। ई अपना-आपमे एकटा इतिहास छल।

ताबत ब्राह्मणसभ आबि गेल छलाह। पंडाजी कहलाह जे संयोग नीक अछि जे एगारहटा ब्राह्मण पुरि गेल अन्यथा एहिठाम से कठिन रहैत अछि। भोजनक सामग्री तैयार छल। भरिपोख ब्राह्मणसभ भोजन केलाह। तकरबाद सभ गोटेकेँ किछु कए दक्षिणा देल गेल। एहि प्रकारे गयामे पिणडदानक कार्यक्रम विधिवत संपन्न भेल। पंडाजी केँ गछल टाका देलहुँ। ब्राह्मण भोजनमे भेल खर्चाक हिसाब भेल, से गोट- गोट कए चुकता केलहुँ। महापात्रजीकेँ दक्षिणा देलहुँ। हुनकर आपसीक हेतु यात्रा व्यय अलगसँ देलहुँ। ओसभ प्रसन्न देखेलाह।

मोनमे एकटा बरका संतोख भेल। मूलतः माताक स्वर्गवाससँ व्याकुल हृदयकेँ कनी शान्ति भेटल। प्रेतशिलापर जखन तरह-तरहसँ मातृ ऋणसँ उरिन हेबाक हेतु पिण्डदान देल जाइत छल तँ कानबाक मोन भए रहल छल। की कोनो पिण्डदानसँ माताक ऋणसँ उरिन भए सकैत छी? नहि भए सकैत छी। तथापि ई अपन धर्मक विधान छैक। गयामे पिणडदानसँ पूर्वजक आत्मा मुक्त भए जाइत छथि। एहि विश्वास ओ श्रद्धासँ हम ओतए गेल रही आ दू दिन धरि ठाम- ठाम घुमि-घुमि पिण्डदान करैत रहलहुँ। प्रार्थना करैत रहलहुँ जे माता सहित हमर सभ पूर्वजक आत्माकेँ मुक्ति होनि।

अपन धर्ममे आस्था रखनिहार विश्व भरिसँ लोकसभ एतए पिण्डदान करए अबैत छथि। मुदा ओहिठामक व्यवस्था खास कए

पोखरिसभक खास्ता हाल देखि कए निराशा होइत छैक। अन्तर्राष्ट्रीय महत्वक एहि स्थानक उचित देख-भाल नहि भए रहल अछि। ओहुसँ चिन्ताक बात थिक सभठाम पैसाक वर्चस्व। जे से पैसाक खातिर तंग करैत अछि।

शुरुसँ अन्तधरि ई समस्या बनल रहल। एकर की समाधान होएत? एतबा जरूरी लगैत अछि जे शान्तिपूर्ण माहौलमे लोक श्रद्धापूर्वक अपन पूर्वजक आराधना कए सकथि, से व्यवस्था होइक। मुदा बिलाड़िक गरामे घण्टी बान्हत के? ❑

बिधवा बिआह

समाजक मान्यता, विधि-विधान आ लोक व्यवहार समय साक्षेप अछि। जे बात-विचार पचास सय साल पहिने अनिवार्य चलैत छल से आइ-काल्हि जँ लोक करए तँ हस्यास्पद भए जाएत। पहिने बाल बिआह आम बात छल। बेटीकेँ जनमिते जँ माए-बापकेँ कथुक चिन्ता होइक तँ ओकर बिआहक। कहुना कए बिआह भए जाइक आ माए-बाप गंगा नहा लेथि। सोचल जा सकैत अछि जे समाजमे बेटीक स्थिति कतेक दयनीय छल..!

ई बात सभ जनैत छथि जे स्त्रीक बिना पुरुष कतएसँ आएत। जे आइ ककरो बेटी छैक सैह काल्हि ककरो स्त्री, ककरो माए बनतैक। तथपि लोकमे अखनहुँ बेटाक प्रति मोह कम नहि भए रहल अछि। पहिने कतेको गोटा बेटाक चक्करमे आठ-नौ सन्तान कए लैत छलाह। लिंग आधारित एहि भेद-भावकेँ कम करबाक किंवा जड़िसँ दुरुस्त करबाक निरन्तर प्रयास होइत रहल।

एक समय छल जखन पतिकेँ मरलाक बाद ओकर पत्नीकेँ ओकरे संगे जरा देल जाइत छल किंवा ओ स्वयं जरि जाइत छल। समाज ओकरा सतीक रूपमे महिमा मण्डित करैत छल। ओकर चितापर सती मन्दिर बना देल जाइत छल। सोचल जा सकैत अछि जे ओ कतेक क्रूड़ प्रथा छल। एकटा स्वस्थ जीबन्त व्यक्तिकेँ जरा कए एहि लेल मारि देल जाइत छल वा ओ स्वयं मरि जाइत छल जे ओकर पतिक देहावसान भए गेल, जाहि लेल ओ कोनो प्रकारसँ दोषी नहि छल। मरनाइ, जिनाइ ककरो हाथमे नहि छैक। ई एकटा संयोग होइत अछि मुदा तकर एतेक दुखद् परिणाम होइत छल से सोचियो कए रोंआ ठाढ़ भए जाइत अछि।

एकटा विदेशी पर्यटक जखन अपन देश घुमैत रहथि तँ संयोगसँ श्मशान घाटपर एकटा मुर्दाकेँ लए जाइत देखलथि। मुर्दा संगे ओकर पत्नी चिकरैत-भोकरैत श्मशान धरि संगे गेल। लोक सभ तमासा देखैत रहल आओर ओ पतिक लहासक संगे जारनिसँ लादि देल गेल। जोर-जोरसँ ढोल बजा-बजा कीर्तन करए लागल जाहिमे ओहि जीवित महिलाक करूण क्रंदन दबि कए गुम रहि गेलैक आ थोड़बेकालमे ओहो पतिक लहासक संगे छाउर भए गेलि। (ई सैंकड़ो साल पूर्वक घटना थिक आ एकर वर्णन Beyond the seas–माइकल एच. फीसर द्वारा सम्पादित–पुस्तकमे अछि) एहि तरहक घटना ओहि समयमे आम बात छल। स्त्रीगण सभ अपन नियति बुझि एकरा स्वीकार करैत छलीह। प्रसिद्ध समाज सुधारक राजाराम मोहन रायक एहिपर ध्यान गेल आ ओ ब्रिटिश सरकारसँ गोहार कए एहि सामाजिक कुरुतिकेँ बन्द करओलाह।

समाजमे विधवाक स्थिति बेटीक स्थितिसँ जुड़ल अछि। जँ बेटी पढ़तै, लिखतै, बेटा जकाँ ओकरो अवसर भेटतै तँ ओहो ककरोसँ पाछा नहि रहत। आइ-काल्हि एहिमे किछु परिवर्तन भेल अछि। लोक बेटीकेँ स्कूल-कालेज पठा रहल अछि। डाक्टर, इन्जिनीयर, अफसर सभ किछु बेटीओ बनि रहल अछि। कानूनमे परिबर्तन भेल अछि। पैत्रिक सम्पत्तिमे बेटा ओ बेटीक हक बरोबरि भए गेल अछि। घरेलू हिंसा कानूनक तहक कोनो महिलाकेँ शारीरिक, मानसिक यातना नहि देल जा सकैत अछि। दहेज लेब देब गैर कानूनी भए गेल अछि। प्रश्न ई उठैत अछि जे एतेक रास कानूनसँ लैस भारतीय महिला की सभ तरहेँ अधिकार सम्पन्न, सुरक्षित ओ प्रतिष्ठिापूर्ण जीवन-यापन करबाक स्थितिमे आबि गेल छथि? ई सोचिये कए कलम ठाढ़ भए जाइत अछि।

समाजमे बेटीक स्थितिमे सुधार मूलतः शहरी क्षेत्र धरि

सीमित अछि। गाम-घरक हाल मोटा-मोटी ओहने अछि। अपना ओहिठाम शिक्षाक स्तर तेहन गड़बड़ायल अछि जे जँ केओ स्कूल-कालेज जाइतो छथि, किंवा डिग्रीओ हासिल कए लैत छथि तैओ हुनका कोनो रोजगार भेटि सकत से संदेहास्पद। जँ आर्थिक निर्भरता बनल रहत, सम्पत्तिक अधिकार मात्र कानूनक किताबे तक सीमित रहि गेल तँ बेटी कोना बढ़त?

जाहि समाजमे बेटीकेँ शिक्षाक समान अवसर भेटल, पैत्रिक सम्पत्तिमे अधिकार भेटल ओहिठामक महिला निश्चित रूपसँ सभ तरहें आगा भए गेलीह। एहिमे केरल राज्यक चर्चा कएल जा सकैत अछि। पुरना समयमे (आ किछु हद तक अखनहुँ) विधवा होइते जेना ओकरापर विपत्तिक पहाड़ टुटि जाइत छल। तत्कालीन समाजक समस्त मान्यता, बिध, व्यवहार ओकरा अपमानिते नहि करैत छल, अपितु अशुभ बुझैत छल। केस कटा लिअ, नीक-नीकुत खाउ नहि, साधारण कपड़ा पहिरू, उपास-पर-उपास करैत रहू। तेतबे नहि, कोनो शुभकाजमे आगा नहि रहू। आखिर ओकर की दोष रहैक जकर दंड ओकरा समाज दैत छलैक?

लगैत अछि, समाजक पुरोधा सभ असुरक्षा भावसँ ततेक ग्रस्त रहथि जे हुनका आगा-पाछा किछु आओर सोचेबे नहि करनि। कतेको ठाम तँ नवालिग बिधवा भए जाइत छलि आ आजीवन धोर कष्ट आ विपत्तिमे जीवन-यापन करैत छलीह। गरीबी, सामाजिक प्रताड़नासँ तंग भए कतेको बिधवा गाम-घर छोड़ि वृन्दावन किंवा आन-आन तीर्थ शरण धए लैत छलीह। अखनो हजारोक संख्यामे वृन्दावनमे बिधवा सभ पड़ल छथि। भारतक उच्चतम न्यायालय हुनका सभक स्थितिपर विचार केने छल। सुलभ इन्टरनेशनल द्वारा हुनका सभ लेल किछु कल्याणकारी योजना सभ सुनबामे आएल छल। मुदा ई सभ ऊँटक

मुँहमे जीरक फोरन थिक। जरूरी तँ ई अछि जे समस्याक जड़िमे जाए ओकरा समूल नष्ट कएल जाए। आखिर पुरुष बिधुर भेलापर बिआह करैत छथि की नहि? तहिना महिलोकेँ ई अधिकार समाज स्वीकृत हेबाक चाही।

यद्यपि यत्र-तत्र-सर्वत्र महिला सशक्तीकरणक चर्च होइत रहैत अछि, तथापि व्यवहारिकतामे संकट अछिए। जँ दुर्भाग्यवश केओ बिधवा भए जाइत छथि तँ अखनो हुनका नाना प्रकारक यातना, सामाजिक प्रताड़ना भोगए पड़ैछ। अस्तु, ई विचारणीय थिक जे बिधवा लोकनिक स्थितिमे गुणात्मक सुधार हेतु हुनकर पुनर्विवाहक व्यवस्था हो। एहिमे सभसँ बाधक बिआहसँ जुड़ल खर्चा आ जातीय स्वाभिमान अछि। मुदा ई विचारणीय प्रश्न थिक जे समाजक कोनो व्यवस्था जँ एक निर्दोष जीवनकेँ कष्टमय केने रहैत अछि तँ ओकरामे संशोधन किएक नहि हेबाक चाही?

ओना, कतेको जातिमे बिधवा बिआह पहिनहिसँ चलनमे अछि। कतेको महिला एहिसँ एकटा नूतन जीवन जीबाक अवसर प्राप्त करैत छथि। मुदा किछु जाति विशेषमे अखनो एकरा पारिवारिक प्रतिष्ठासँ जोड़ि कए देखल जाइत अछि। आखिर, ओ प्रतिष्ठाक जे गति होइत अछि, ताहिपर चर्चाक आवश्यकता नहि अछि। एहन बिधवा जकरा सन्तानो नहि छैक, एकरा व्यर्थ निष्ठाक नामपर लगातार कष्ट सहैत रहए, जीवनक समस्त सुख, सम्पदासँ वंचित रहए से कहाँ तक जायज अछि?

कतेको समाजमे ई व्यवस्था अछि जे बिधवाकेँ ओही परिवारक अविवाहित भाए किंवा समव्यस्क सम्बन्धीसँ बिआह कए देल जाइत अछि। निश्चित रूपसँ ओ सभ बेसी व्यवहारिक आ वुधिआर लोक छथि। मुदा जँ सेहो सम्भव नहि होइक तखन तँ

परिवारक वयस्क सदस्यकेँ आगा आबि ओहि महिलाक जीवनमे पुन: स्थापित करबामे सहयोग करथि आ सुयोग्य, सही व्यक्तिसँ बिआह करबामे सहयोग करथि।

जँ बिधवाकेँ सन्तान छैक तखन पुनर्विवाहसँ दिक्कति भए सकैत छैक मुदा एहनो परिस्थितिमे ओहि बच्चा सभक संगे बिधवाकेँ स्वीकार करब सर्वोत्तम समाधान भए सकैत अछि। हम एकबेर यूरोप गेल रही तँ हमर सभक वाहन चालक अपन परिवारक चर्चा करैत कहए लगलाह जे हुनकर स्त्रीक ई दोसर बिआह छनि। पहिल बिआहसँ दूटा सन्तान छनि। हुनकासँ बिआहक बाद एकटा सन्तान छनि। एहि तरहें ओ तीनटा सन्तानक पिता छथि आ सभक भरण-पोषण सहर्ष आ समान्य रूपसँ करैत छथि। विदेशमे ई आम बात अछि। ओहिठाम बिआह विच्छेद जहिना होइत अछि तहिना पुनर्विवाह सेहो भए जाइत अछि। फेर अधिकांश महिला-पुरुष ओहि स्थिति हेतु तैयारो एहि मानेमे रहैत छथि जे आर्थिक निर्भरता सामान्यत: नहि रहैत अछि। ईहो बुझय जोगर गप्प अछि जे ओकर सभक समाजक मूल्य भिन्न अछि जे ओकर सभक समाजक आ पारिवारिक संरचना अलग अछि।

अपन भारतीय मूल्यक रक्षा करैत आ परिवारक संरचनाकेँ कोनो तरहें बिना दूबर केने विशेष परिस्थितिमे सामाजिक सामंजस्यक व्यबस्था जरूरी अछि जाहिसँ संयोगवश जँ केओ बिधवा भए जाइत अछि तँ हुनका तरह- तरहक कष्टसँ बचाऔल जा सकए आ हुनक भावी जीवनकेँ सुखद कएल जा सकए।

ओना अपने देशक कतेको राज्यमे बिधवा बिआह आम बात भए गेल अछि। अपनो समाजमे किछु जाति विशेषमे एकरा लोक अखनो ढो रहल अछि जखन कि कतेको जातिमे पहिनहुँसँ ई

व्यबस्था रहल अछि। अस्तु, एहि कुप्रथाक कोनो मजगूत धार्मिक पक्ष नहि लगैत अछि। ई एकटा जाति विशेषक किंवा वर्ग विशेषक अहंसँ पोषित सामाजिक अभिशाप थिक जकर सुधारपर सभक ध्यान जा रहल अछि, मुदा व्यबहारमे अखनो स्वीकार्य नहि अछि। एहन नहि अछि जे बिधवा बिआह होइते नहि अछि, गाहे-वगाहे उच्च वर्गीय मैथिलोमे ई भए जाइत अछि मुदा अखनो ई एकटा स्वभाविक, सर्वमान्य चलनक रूप नहि लेने अछि, जाहि कारणें कतेको कम वयसक कन्या जीवनक समस्त सुख, सुबिधासँ वंचित रहि दुखमय जीवन बीतेबाक हेतु विवश छथि।

किछु एहन घटना सभ देखएमे आएल जतए परिस्थितिवश पतिक देहान्त भए गेलाक बाद हुनके परिवारक लोक बिआहक व्यबस्था केलाह आ आइ ओ एकटा सुखी परिवारिक जीवन जीबि रहल छथि। पूर्व पतिसँ जे सन्तान छलैक ओकरो नीकसँ पालन-पोषण भए रहल अछि। नव बिआहमे सेहो सन्तान भेलैक। हमर कहबाक तात्पर्य अछि जे सभ किछुकेँ हठाते धर्म-कर्मसँ जोड़ि कए मनुक्खक जीबन नर्क कए देब कतहुँसँ उचित नहि अछि।

गाम-गाममे एहन द्दश्य देखएमे अबैत रहल अछि जे अपने लोक बिधवाक शोषण करैत छथि। कतेकठाम तँ ओकर हत्या तक भए गेल। ओकर सम्पत्ति अपने लोक लुटि लेलक वा ठगि लेलक आ जखन ओकरा प्रयोजन भेलैक तँ सभ कात भए गेल। तथाकथित मर्यादाक उल्लंघन जखन आम बात भए गेल हो, ताहि मर्यादाकेँ व्यर्थ होइत रहब सर्वथा अनुचित।

पारिवारिक जीवन हेतु, भारतीय मूल्यक रक्षा हेतु, वैवाहिक जीवनक महत्वकेँ कमतर नहि आँकल जाए सकैत अछि। परन्तु ओकर आधार मजगूत बनल रहैक ताहि हेतु सोचमे परिवर्तन जरूरी

अछि। पूरा दुनिआ बदलि रहल अछि। इन्टरनेट, मोबाइल, टेलीवीजन, फेसबुक, ह्वाट्सअप सौंसे दुनिआकेँ एक आँगन (Global Village) मे परिवर्तित कए देलक अछि। एहि परिवर्तनसँ केओ बाँचल नहि रहि सकैत अछि। गाम-गाम ओएह टेलीवीजन, ओएह गीत नाद, ओएह सीनेमा चलैत अछि। स्वाभाविक अछि जे गामोक धिया-पुतामे आधुनिकताक मानसिकता उत्पन्न होइक। एकरा एकदमसँ छोड़लो नहि जा सकैत अछि। अस्तु,आधुनिकताक बिहाड़िमे सभटा उड़िया जाए ओहिसँ पूर्वे हमरा लोकनि स्वत: स्वभाविक रूपसँ परिस्थितिजन्य कारणसँ बिधवा भेल महिलाकेँ पुनर्वास हेतु, ओकर सम्मानपूर्ण जीवन-यापन हेतु सोचबाक चाही।

समाज जे गतिशील होइत अछि, जे बदलैत परिवेशसँ सामंजस्य स्थापित करबाक हेतु प्रयत्नशील रहैत अछि, सैह टिकैत अछि। ओकरे विकास होइत अछि। जँ से नहि भेल तँ अपने बनाओल नियम, कानून ओ मर्यादाक बोझसँ स्वत: चरमरा जाइत अछि। जरूरी अछि जे समयक संग तादाम्य स्थापित कए हम सभ नूतन विचारकेँ सहर्ष स्वीकार करी ओ प्रगतिक पथपर आगा बढ़ी। ❑

उपभोक्ता संरक्षण कानून २०१९

नव अधिनियम बनाएब किएक जरुरी भेल?

एकटा समय छल जे कोनो वस्तु किनबाक हेतु लोक कैक दिनसँ तैयारी करैत छल । मधुबनी,दरभंगा वा लगपासक कोनो हाट-बजार जाइत छल । तखन दोकाने-दोकाने घुमैत छल । अपन आवश्यकता आ सामर्थ्यक अनुसार वस्तुक चयन करैत छल । दामक मोलौअलि करैत छल । जँ सौदा पटि गेलैक तँ ओकर दाम देलक आ ओहि वस्तुकेँ लेने चलि अबैत छल । आब समय बहुत बदलि गेल । इंटरनेटक युगमे लोकसभ घरे बैसल अपन स्मार्टफोनपर एमजान,बिग बास्केट वा अन्य कोनो कंपनीक एप खोलि कए चीज-वस्तु पसिंद करैत छथि,ओकर आनलाइन भूगतान करैत छथि आ घरे बैसल एक-दू दिनक बाद ओहि वस्तुकेँ प्राप्त कए लैत छथि । जाहिर छैक जे एहि व्यवस्थामे ग्राहककेँ दोकानदारसँ भेंट नहि होइत छैक,ने ओ क्रय कएल गेल वस्तुकेँ सद्यः देखि सकैत अछि ,ओकर जाँच-पड़तालक अवसर तँ नहिए रहैत छैक । तेँ अधिकांश कंपनी एहन वस्तुकेँ एकटा तय समयक भीतर वापस करबाक नियम बनओने रहैत छथि । जँ कोनो दिक्कति भेल,तँ भूगतान कएल गेल टाका वापस कए दैत छथि। एहिसभ व्यवस्थाक अछैत कहिओ काल उपभोक्ताकेँ एहिसभमे परेसानी होएब स्वबाविक थिक । संगहि आनलाइन क्रय बिकरी केनिहार कंपनीसभकेँ कानूनी नियंत्रणमे रखनाइ एहू लेल जरूरी अछि जे ओ सभ मनमानी नहि करए,उपभोक्ताकेँ वाजिब दामपर सही वस्तु भेटैक आ बजारमे उचित प्रतिस्पर्धा बनल रहए, बजारपरकोनो कंपनीक एकाधिकार नहि भए जाइक ।

किनबाक कतेको विकल्प आ भूगतानक सुविधा बढ़बाक संगहि उपभोक्ताक अधिकारक संरक्षण सेहो कठिन भए गेल अछि। विक्रय हेतु वस्तु कतहु अछि,किननाहर कतहु छथि,भूगतान कोनो तेसर माध्यमसँ भए रहल अछि । ई सभ बात पहिने केओ सोचिओ नहि सकैत छल। एकहिठाम ग्राहक,विक्रेता आमने-सामने सभकिछु करैत छलाह । मुदा आब से नहि रहलैक । तेँ एहिसभ परिस्थितिकेँ ध्यानमे राखब सरकारक हेतु सेहो जरुरी भए गेल । पुरनका कानून झूस पड़ि गेल आ नव कानून बनाएब जरुरी भए गेल । एही बात सभकेँ ध्यानमे रखैत उपभोक्ता संरक्षण कानून २०१९ संसद द्वारा स्वीकृत भेल जे माननीय राष्ट्रपति महोदयक स्वीकृतिक बाद ९ अगस्त २०१९क सरकारी गजेटमे छपल । तकर बाद भारत सरकार द्वारा२० जुलाइ २०२०क एहि कानूनकेँ लागू कएल गेल।

उपभोक्ताक नव परिभाषा:

जे केओ अपन उपयोग हेतु कोनो वस्तु किनैत छथि वा कोनो प्रकारक सेवा प्राप्त करैत छथि से एहि कानूनक मोताबिक उपभोक्ता छथि । मुदा पुनर्विक्रय वा वाणिज्यिक उद्देश्यक हेतु कोनो व्यक्ति द्वारा कोनो वस्तु किनल जाइत अछि वा कोनो प्रकारक सेवा प्राप्त कएल जाइत अछि तँ ओ उपभोक्ता नहि मानल जएताह।

ई-कॉमर्स लेनदेन सेहो सामिल अछि:

केओ व्यक्ति जे कोनो सामान किनैत अछि, चाहे ओ ऑफलाइन वा ऑनलाइन लेनदेन, इलेक्ट्रॉनिक साधन,

टेलीशॉपिंग, डायरेक्ट सेलिंग वा मल्टी-लेवल मार्केटिंगक माध्यमसँ होइ सेहो उपभोक्ता मानल जएताह।

उपभोक्ताक अधिकार:

ई अधिनियम उपभोक्ताकेँ निम्नलिखित प्रमुख अधिकार प्रदान करैत अछि;

हानिकारक वस्तु आओर सेवासँ सुरक्षित राखब।

वस्तु वा सेवाक मात्रा, गुणवत्ता, शुद्धता, शक्ति, मूल्य आओर मानकक बारेमे जानकारी होएब।

प्रतिस्पर्धी मूल्यपर विभिन्न प्रकारक वस्तु वा सेवा उपलब्ध होएब ।

उपभोक्ताक हितक उचित विचार करबाक हेतु सुनबाइ करब आ आश्वस्त करब ।

अनुचित वा प्रतिबंधात्मक व्यापार प्रथासँ रक्षा करब ।

उपभोक्ता जागरूकताक अधिकार ।

केंद्रीय उपभोक्ता संरक्षण प्राधिकरण (सीसीपीए) क स्थापना:

एहि अधिनियममे केंद्रीय उपभोक्ता संरक्षण प्राधिकरणक स्थापनाक व्यवस्था अछि जे उपभोक्ताक अधिकारक रक्षा, संवर्धन आओर लागू करत । केंद्रीय उपभोक्ता संरक्षण प्राधिकरण अनुचित व्यापार प्रथा, भ्रामक विज्ञापन आओर उपभोक्ता अधिकारक उल्लंघनसँ संबंधित मामिलाकेँ सुनबाइ करत।

केंद्रीय उपभोक्ता संरक्षण प्राधिकरण केँ उल्लंघन केनिहारपर जुर्माना लगाएब आओर वस्तु वा सेवाकेँ वापस लेब,

अनुचित व्यापार प्रथाकेँ बंद करब आओर उपभोक्ता द्वारा भुगतान कएल गेल मूल्यक प्रतिपूर्तिक आदेश पारित करबाक अधिकार होएत ।

गलत वा भ्रामक विज्ञापनक हेतु दंड:

केंद्रीय उपभोक्ता संरक्षण प्राधिकरण (सीसीपीए) केँ भ्रामक वा गलत विज्ञापन देलापर एंडोर्सर वा निर्मातापर दस लाख रुपयाक जुर्माना लगाबक अधिकार अछि । केंद्रीय उपभोक्ता संरक्षण प्राधिकरण ओकरा एहि हेतु दू साल धरि जहलक दंड सेहो दए सकैत अछि । दोबार एहने अपराध केलापर जुर्माना पचास लाख रुपया आओर पाँच साल धरि जहल सेहो भए सकैत अछि ।

केंद्रीय उपभोक्ता संरक्षण प्राधिकरणक पास एहन उल्लंघनक जांच आओर जांच करबाक हेतु जाँच-पड़ताल विभाग(investigation wing) होएत । केंद्रीय उपभोक्ता संरक्षण प्राधिकरण क अध्यक्षता महानिदेशक करताह।

उपभोक्ता विवाद निवारण आयोग (सीडीआरसी):

एहि अधिनियम मे राष्ट्रीय, राज्य आओर जिला स्तरपर उपभोक्ता विवाद निवारण आयोग (सीडीआरसी) क स्थापनाक व्यवस्था अछि। उपभोक्ता विवाद निवारण आयोग (सीडीआरसी) निम्नलिखित तरहक सिकाइतक सुनबाइ करत;

अधिक वा भ्रामक शुल्क ओसूल करब ।

अनुचित वा प्रतिबंधात्मक व्यापार प्रथा ।

एहन वस्तु आओर सेवाक बिकरी जे जीवनक हेतु हानिकारक भए सकैत अछि।

दोषपूर्ण वस्तु वा सेवाक बिकरी ।

उपभोक्ता विवाद निवारण आयोगक क्षेत्राधिकार:

राष्ट्रीय उपभोक्ता विवाद निवारण आयोग दस करोड़ रुपयासँ बेसीक सिकाइतक सुनबाइ करत । वस्तु वा सेवाक मूल्य एक करोड़ रुपया सँ अधिक मुदा दस करोड़ रुपयासँ कम भेलापर राज्य उपभोक्ता विवाद निवारण आयोग सिकाइतक सुनबाइ करत। जखन कि जिला उपभोक्ता विवाद निवारण आयोग वस्तु वा सेवाक मूल्य एक करोड़ रुपया तक भेलापर सिकाइतक सुनबाइ करत । पाँचलाख मूल्य धरिक वस्तु वा सेवासँ संवंधित सिकाइत केलापर कोनो फीस जमा नहि करए पड़त ।

ई-कॉमर्स लेनदेन सेहो सामिल अछि:

उपभोक्ता क अर्थ अछि केओ व्यक्ति जे कोनो सामान किनैत अछि, चाहे ओ ऑफलाइन वा ऑनलाइन लेनदेन, इलेक्ट्रॉनिक साधन, टेलीशॉपिंग, डायरेक्ट सेलिंग वा मल्टी-लेवल मार्केटिंगक माध्यमसँ होइ ।

सिकाइतक ई-फाइलिंग:

नव कानूनक अनुसार उपभोक्ता इलेक्ट्रिनिक माध्यमसँ अपन सिकाइत संवंधित उपभोक्ता विवाद निवारण आयोगक समक्ष अपन घर वा कार्यस्थानसँ कए सकैत छथि ।उपभोक्ता विवाद निवारण आयोगक अधिकार क्षेत्रक निर्धारण उपभोक्ताक आवास वा कार्यालयक पताक आधारपर कएल जाएत । उपभोक्ता अपन आवेदनक सुनवाइमे भिडिओ कान्फ्रेमसींगक माध्यमसँ भाग लए सकैत छथि । ताहि हेतु हुनका ओकील राखब जरुरी नहि अछि ।

वैकल्पिक विवाद समाधान :

उपभोक्ता विवाद निवारण आयोग सिकाइतकर्त्ताक सहमतिसँ मामिलाक त्वरित समाधान हेतु मध्यस्तता प्रकोष्ठकेँ पठा सकैत अछि । मध्यस्तता प्रकोष्ठ ओहि सिकाइतक समयवद्ध तरीकासँ समाधान करत । एहि प्रकोष्ठ द्वारा कएल गेल समाधानक खिलाफ अपील नहि भए सकैत अछि ।

उपभोक्ताक सिकाइत संवंधित बहुत रास मामिला देशक विभिन्न भागमे बहुत-बहुत दिन धरि लंवित चलि रहल छल । एहि कानूनमे समयवद्ध तरीकासँ एहन सिकाइत सभक समाधान करबाक प्रावधान भेलासँ उपभोक्ताकेँ समयसँ आ बिना विलंबकेँ न्याय भेटतनि । एहि कानून लागू भेलासँ जागू ग्राहक जागूक मंत्रवाक्यकेँ साकार करबाक रस्ता आओर सरल भए गेल अछि । वस्तुक निर्माता आ व्यापारी वर्गकेँ आब एहसास हेतैक जे सक्षम कानून बनि गेलाक बाद उपभोक्ताक अधिकारक क्षति पहुँचाएब मोसकिल अछि आ जँ से कएल गेल आ कोनो प्रकारसँ उपभोक्ताकेँ ठगल जेतनि वा अनुचित क्षति कएल जेतनि तँ ओ सभ निचैन नहि रहि सकताह,कानून हुनकासभकेँ उचित दंड दिआबएमे सक्षम होएत । मुदा से तँ तखने होएत जखन संवंधित उपभोक्ता सही समयपर उचित फोरममे अपन सिकाइत करताह ।

3.2.2021

घरेलू हिंसा अधिनियम, 2005

घरेलू हिंसा की थिक?

सामान्यतः घरेलू हिंसा मात्र घरमे मारि-पीट बुझल जाइत अछि। सही मानेमे बालिकाक अरमानकेँ दबा देब, घरक अंदर परिवारक सदस्य द्वारा रोज-रोज मानसिक प्रताड़ना देब, तामसमे ओकर परसल भोजन फेँकि देब, ओकरा संगे गार-मारि करब, ओकर इच्छाक विरुद्ध ओकर पढ़ाइ रोकि देब, सेहो घरेलू हिंसाक रूप अछि। एकर अलावा यौन उत्पीड़न सेहो भारी हिंसा अछि, जाहि हेतु आम तौरपर दूरक रिश्तेदार वा पड़ोसक लोग जिम्मेदार होइत अछि। एहनमे जखन बालिका विरोध करैत अछि, तँ बदनामीसँ बँचबाक हेतु ओकर मुँह बंद कए देल जाइत अछि। एहि तरहक प्रतारणा नैहर, सासुर सभठाम होइत अछि।

घरेलू हिंसा पारिवारिक सम्बन्धक परिपेक्ष्यमे एहन व्यवहार ओ सम्बन्धसँ जुड़ल अछि जे अपन जीवन संगीपर अधिकार जताबए आ मनमाना नियंत्रण करबाक हेतु कएल जाइत अछि। प्रताड़ना मनोवैज्ञानिक, शारीरिक, भावात्मक, आर्थिक, किछु भए सकैत अछि। घरेलू हिंसा विवाहित किंवा आपसी सहमतिसँ प्रेम सम्बन्धसँ जुड़ल जोड़ी, ककरो संगे भए सकैत अछि।

घरेलू हिंसाक कारण की थिक?

घरेलू हिंसाक प्रारंभ तखने होइत अछि जखन बालिका

अपने माए-बापसँ खिलौना मांगैत अछि। हमर समाज ओकरा नेन्नेसँ कमजोर बनबैत अछि। जखन बेटा छोट रहैत अछि, तँ हम ओकरा हाथमे बैट-बाल वा स्पोर्टस क सामान दैत छी, जाहिसँ ओ शारीरिक आओर मानसिक रूपसँ मजगूत बनैत अछि। मुदा बालिकाक खेलक हेतु गुड्डा-गुड़िया वा चूल्हा बर्तन बला खेलौना देल जाइत अछि जाहिसँ ओ शारीरिक आओर मानसिक रूपसँ कमजोर होइत चलि जाइत अछि। एकर संगे भावनामे भसिआएल चल जाइत अछि। अब बालिका जेना- जेना पैघ होइत अछि घरक पाबंदी आओर समाजक यातना ओकरापर हावी होइत चलि जाइत अछि। दाम्पत्य जीवनमे घरेलू हिंसाक कारण हीन भावना, ईर्ष्या, क्रोधपर नियंत्रणक अभाव, जीवनसंगीसँ शिक्षा किंवा सामाजिक परिवेशमे न्योन होएब किछु भए सकैत अछि।

<u>घरेलू हिंसा अधिनियम, 2005 किएक लागू करए पड़ल?</u>

घरेलू हिंसाक अनगिनत घटना हमर देशमे होइत अछि, मुदा महज सौ-पचास दर्ज होइत अछि, ओहो चरम पर पहुँचलाक बाद। कतेकोठाम बालिकासभ साँझक बाद घरक अपेक्षा सड़कपर अंजान लोकसंग रहब ज्यादा सुरक्षित अछि कारण घरमे अपन लोक द्वारा बेसी दुर्घटना, हत्या आओर हिंसा करबाक संभावना रहैत अछि, बालिका जखन रस्ता पर बहराइत अछि, तँ ओकरा पता नहि होइछ कि शहरक चकाचौंधमे ओकरा संगे करवन कोनठाम छेड़खानी भए जाएत। बात अगर गामक करी तँ बालिका सुन्न रस्ता पर जएबासँ डराइत अछि मुदा ओहि डरक की करी, जकर जड़ि घरक अंदर होइत अछि आओर बालिकाक संगे पैघ होइत अछि। ओहि डरक की करी जे ओकरा जनमिते ओकर माथामे बैसि जाइत अछि आओर आधा जिनगी धरि रहैत अछि।

घरेलू हिंसा क बात करैत काल ऑनर किलिंगक घटनासभकेँ फराक नहि कए सकैत छी। ऑनर किलिंगक जड़ि असलमे घरेलू हिंसा अछि। किएक तँ कोनो माए-बाप, भाए, काका कखनो सेहो अपनी बेटी वा बहिनकेँ, सोझे मारि नहि देत, ओहिसँ पूर्व नाना प्रकारक यातना ओकरा देल जाइत अछि।

एकटा सांख्यिकीय गणनाक अनुसार :

(i) नित्य चारिटा महिला, एकटा पुरुष, आओर पाँचटा बच्चा घरेलू हिंसाक कारण अकाल मृत्युक शिकार भए जाइत छथि।

(ii) अपन जीवन कालमे प्रत्येक चारिटामेसँ एकटा महिला घेरलू हिंसाक शिकार भए जाइत छथि।

(iii) २०-२४ वर्षक महिलाक ऊपर घरेलू हिंसाक सभसँ बेसी खतरा रहैत अछि।

घरेलू हिंसा अधिनियम 2005 स्त्रीक सुरक्षा, ओ स्त्रीक अधिकारक अधिक प्रभावी ढंगसँ लागू करबाक हेतु आनल गेल।

एहि अधिनियमकेँ पारित करएसँ पहिने कानूनी स्थिति की छल?

(i) घरेलू हिंसा कानूनमे कोनो स्पष्ट मान्यता नहि छल,

(ii) (आईपीसी 498 ए) क तहत घरेलू हिंसाक संपूर्ण अवधारणा विवाहित स्त्रीपर कएल गेल क्रूरताक धरि सीमित छल,

(iii) दुखसंतप्त बहिन, माए, बेटी वा अविवाहित स्त्री एहिमे सामिल नहि छल,

(iv) प्रताड़ित भेलापर विवाहित स्त्रीकेँ सीमित विकल्प छल: तलाक लए लिअए वा धारा 498 ए क अनुसार मोकदमा

करए,

घरेलू हिंसा दू प्रकारक होइत अछिःआपराधिक आओर गैर-आपराधिक:

आपराधिक घरेलू हिंसा:

बिना सहमतिकेँ शारीरिक संपर्क जेना यौन उत्पीड़न, लात मारब, अनावश्यक पछोड़कए भयभीत करब, कंप्यूटर हैकिंग, आपराधिक अलगाव

गैर-आपराधिक घरेलू हिंसा:

मित्र वा आन सामाजिक सरोकारीसँ संपर्क बाधित करब, टेलीफोनक संपर्क नहि होमए देब,

घरेलू हिंसा कानूनक तहत कोनो पीड़ित महिला जे अपराधीक संगे रहैत छथि, एहि कानूनक अनुसार मोकदमा कए सकैत छथि।

घरेलू हिंसाक सभसँ खराब प्रभाव ओहि परिवारक छोट बच्चासभ पर होइत छैक। बच्चा वातावरणक उपज होइत छथि, एहने बच्चा बादमे जा कए घरेलू हिंसा करैत छथि वा ओकर शिकार भए जाइत छथि।

घरेलू हिंसा अधिनियमक धारा२ (क्यु):

घरेलू हिंसा अधिनियमक धारा२ (क्यु)क तहत मात्र पुरुष अपराधीक खिलाफ कार्रबाइक प्रावधानकेँ असंबैधानिक घोषित करैत सुप्रीम कोर्ट न्यायमूर्ति कुरियन जोसेफ और रोहिंटन एफ नरीमन पीठ निर्णय देलक जे एहि कानूनक तहत महिला अपराधीकक खिलाफ सेहो मोकदमा चलि सकैत अछि।माननीय

न्यायाधीश लोकनिक कहब छनि:

"स्त्रीगणक खिलाफ कतेको बेर स्त्रीए साजिसक तहत काज कए घरेलू हिंसामे सामिल होइत छथि, तेँ एहि कानूनक उपरोक्त धारा कानूनक मूल उद्द्येश्यसँ भुतिआ गेल लगैत अछि, तेँ ओकरा कानूनसँ हटा देल जाइत अछि।"

घरेलू हिंसा कानूनक तहत केना मदति लेल जा सकैत अछि?

(१) कोनो प्रकारक हिंसासँ वचाव हेतु आदेश प्राप्त करब,

(२) निवास करबाक अधिकारक हेतु आदेश प्राप्त करब,

(३) मौद्रिक राहत

(४) हिरासतमे लेब

(५) क्षतिपूर्तिक हेतु आदेश

(६) अन्तरिम आओर एकपक्षीय आदेश

सुरेश बनाम जयबीर (२००९) :

सुरेश बनाम जयबीर (२००९)क मामलामे न्यायलय ई आदेश देलक जे घरेलू हिंसा कानूनक धारा 12 क उपखंड (1) क तहत आवेदनक निपटारा करैत अन्तरिम आदेशमे न्यायिक दंडाधिकारी गुजाराक हेतु अन्तरिम राहत दए सकैत अछि।

प्रथम श्रणी न्यायिक दंडाधिकारी वा महानगर दंडाधिकारीक ओतए सिकाइत कएल जा सकैत अछि:

(१) जतए दोषी व्यक्ति रहैत हो,

(२) जतए अपराध कएल गेल होइक,

(३) जतय प्रताड़ित व्यक्ति रहैत हो,

न्यायिक दंडाधिकारीक समक्ष सिकाइतक निपटान:

पीड़त व्यक्ति संरक्षण अधिकारी, पुलिस किंवा सेवा प्रदाता (कल्याण अधिकारी)क मदति लए सकैत छथि। हिनका लोकनिक कर्तव्य अछि जे पीड़त व्यक्तिक जरुरी मार्गदर्शन करथि आ न्यायलय द्वारा देल गेल मौद्रिक क्षतिपूर्तिक आदेशक पालन सुनिश्चित कराबथि। संरक्षण अधिकारीक दायित्व अछि जे ओ प्रताड़ित व्यक्तिक सिकाइतक घरेलू हिंसा प्रतिवेदन (DIR) तैयार कए न्यायालयकेँ उपलब्ध कराबए। संगहिँ प्रताड़ित व्यक्तिकेँ सेवा प्रदाताक वारेमे उचित मार्गदर्शन दैक जाहिसँ ओ ओहि कानूनी सुविधाक लाभ उठा सकए। सेवा प्रदाता कोनो कंपनी, महिलाक कल्याण हेतु कार्यरत गैर सरकारी संगठन, भए सकैत अछि। सेवा प्रदाताक ई कर्तव्य थिक जे प्रताड़ित व्यक्तिकेँ कानूनमे निहित ओकर अधिकारक बारेमे जानकारी देथि आ कानूनी उपचार लेबाकक हेतु उचित व्वस्था करएमे ओकरा मदति करथि। पुलिसक कर्तव्य थिक जे ओ प्रताड़ित व्यक्तिकेँ संरक्षण अधिकारी आ सेवा प्रदाताक बारेमे जानकारी देथि। संगहिँ भारतीय दंड संहिताक अनुक्षेद ४९८ (अ) मे प्राप्त अधिकारक जानकारी सेहो देथि।

न्यायिक दंडाधिकारीक समक्ष पीड़िता द्वारा सिकाइत प्राप्त भेलाक तीन दिनक भीतर मामलामे सुनबाइक तारिख तय होएत। न्यायालयसँ समन भेटलाक दू दिनक भीतर संरक्षण अधिकारी तकर जानकारी प्रतिवादीकेँ देत। प्रतिवादीकेँ देल गेल समनक संग घरेलू हिंसा कानूनक धारा 12 क उपखंड (३)क तहत सिकाइतक प्रतिलिपि सेहो देल जाएत। प्रतिवादी द्वारासे प्राप्त भेलाक बादे एकतरफा सुनबाइ भए सकैत अछि आ स्थाइ अन्तरिम आदेश कएल जा सकैत अछि। जरुरी बुझलापर न्यायलय एकतरफा सुनबाइ कए अन्तरिम आदेश दए सकैत छथि। न्यायिक

दंडाधिकारी ६० दिनक भीतर एहन सिकाइतक निपटान करताह। हुनकर आदेशक खिलाफ सम्बन्धित पक्ष ३० दिनक भीतर सेशन कोर्टमे अपील दाएर कए सकैत छथि।

प्रतिवादी द्वारा संरक्षण आदेश किंवा अन्तरिम संरक्षण आदेशक पालन नहि करब संज्ञेय एवम् गैर जमनती अपराधक श्रणीमे अबैत अछि। हुनका ताहि कारणसँ एक साल धरि जेल किंवा बीस हजार रुपया जुर्माना भए सकैत अछि। यदि संरक्षण अधिकारी दंडाधिकारी द्वारा देल गेल आदेशक पालन करबामे बिना कोनो वाजिब कारणकेँ आनाकानी करैत छथि तँ हुनको एहि तरहक दंड देल जा सकैत अछि, मुदा ताहि हेतु विभागीय अधिकारीकेँ पूर्व अनुमति आवश्यक थिक। पीड़ित व्यक्तिकेँ संयुक्त परिवारक साझी निवासमे रहबाक हेतु न्यायलय निवास करबाक आदेश दए सकैत अछि भले ओहि घरमे प्रतिवादीक हिस्सा होइक वा नहि होइक।

एस आर बतरा एवम् अन्य बनाम श्रीमती तरुना बतराक मामलामे उच्चतम न्यायालय ई फैसला देलक जे घरेलू हिंसा अधिनियमक धारा १७ (१) क अनुसार प्रताड़ित महिला मात्र साझी आवासमे रहबाक हकदार भए सकैत अछि। साझी आवासक माने पति द्वारा किनल किंवा किरायापर लेलगेल घर अछि वा एहन साझी घर अछि जाहिमे पतिक हिस्सा होइक। कहक माने जे जाहि घरमे ओकर पतिकेँ कानूनी अधिकार नहि छैक ताहिमे प्रताड़ित व्यक्तिकेँ रहबाक अधिकार न्यायलय एहि कानूनक तहत नहि दए सकैत अछि।

घरेलू हिंसा रोकबाक समाधान :

घरेलू हिंसा रोकबाक एकटा समाधान ई भए सकैत अछि जे

पति न्यायिक दंडाधिकारीक समक्ष शपथ-पत्र देथि जे ओ आगा अपन पत्नीक संग सम्मानपूर्ण व्यवहार करताह, एहन किछु नहि करताह जाहिसँ ओकरा कोनो प्रकारक यंत्रणासँ फेर गुजरए पड़ैक, तकर संपुष्टिमे अपन संपत्तिकेँ गारंटी देथि जाहिसँ घरेलू हिंसाक पुनरावृति भेलापर ओकरा जब्त कए लेल जाएत।

उपसंहार

आपसी सम्बन्ध प्रेम, आदर, ईमान्दारी, आ भावुक लगावसँ सराबोर हेबाक चाही। आपसी अविश्वाससँ हिंसा ओ दुराचर बढ़ैत अछि, एहन दंपति निरंतर आसंका ग्रस्त रहैत छथि जाहिसँ जीवन नर्क भए जाइत अछि। जीवनक ई कटुसत्य अछि जे अहाँ दोसरकेँ नहि बदलि सकैत छी, हम अपनेटाकेँ बदलि सकैत छी। कमसँ कम एतबा तँ कइए सकैत छी जे जाहि सम्बन्धमे लज्जाति नहि रहि गेल अछि, जतए अविश्वासक पराकाष्ठा पहुँचि गेल अछि, ओतए फसाद बढ़ेनाइ छोड़ि कानून सम्मत तरीका अख्तिआर करी।

महिला संगठन सिर्फ जागरूकता पैदा कए सकैत अछि, पुलिस सिर्फ उत्पीड़न करएबलाकेँ जेल पठा सकैत अछि, कोर्ट सिर्फ न्याय दए सकैत अछि, एहिमे सँ कोनो अहाँक घरक हालत ठीक नहि कए सकैत अछि, घरमे पैसि नित्य-प्रतिक समस्याक समाधान नहि कए सकैत अछि। अस्तु सिर्फ सोच बदलक जरूरत अछि।

जीवनक दुखमय परिस्थितिसँ हारि नहि मानि नव ओ सुंदर जीवन जिबाक हेतु सचेष्ट रहैत पिड़ित व्यक्तिकेँ ई विश्वास बनओने रहक चाही जे सुंदर समय आवहिँबला अछि, अएबे करत। ❑

गिरफ्तारी ओ जमानत

कोनो-ने-कोनो झंझटमे नहिओ चाहैत कए बेर लोक फँसि जाइत अछि। कैक बेर निर्दोष लोकक खिलाफ झूठ-फूसकेँ मामला बना देल जाइत अछि जाहिमे पुलिसकेँ घाल-मेल सेहो भए जाइक से भारी बात नहि। टेलेविजनकेँ गाम-गाम पसरि गेलासँ अपराधक नव-नव स्वरूप गामो-घरमे फैलि रहल अछि। कैकटा कानूनो एहन भए गेल अछि जे बिना गलतिओकेँ कैक बेर लोक जहल धरि पहुँचि जाइत छथि एहन परिस्थितिमे लोककेँ जहल ओ जमानतसँ सम्बन्धित कानूनक जानकारी बहुत आवश्यक भए गेल अछि जाहिसँ व्यर्थक फसादसँ बँचि सकथि आ जरूरी भेलापर समाधान कए अपन जीवन ओ इज्जतिक रक्षा करथि।

कैकटा कनून एहन अछि जाहिमे पुलिस मामला दाखिल होइते अभियुक्तकेँ गिरफ्तार कए सकैत अछि। उदाहरणस्वरूप भारतीय दणड संहिताक धारा ४९८ (ए)क तहत कएल गेल मोकदमामे अभियुक्तक हालत बहुत पातर भए जाइत छल। ओकरा सभसँ पहिने पुलिस गिरफ्तार करैत छल, तखन आओर किछु। बहुत रास मामलामे देखल गेल जे कएल गेल सिकाइत झूट छल, कोर्टमे साबूतक आधारपर साबित नहि भेल, अभियुक्त बरी भए गेल, मुदा ताबति ओकर सभ दशा भए जाइत छल, ओकर इज्जतिक मटियामेट भए जाइत छल। उच्चतम न्यायलय एहि बातक संज्ञान लैति दिशा-निर्देश जारी कए सुनिश्चित करबाक प्रयास केलक जे निर्दोश लोककेँ एहन मामलामे बेवजह गिरफ्तारी

नहि होइक।

संविधानक धारा २२ क अनुसार पुलिस द्वारा गिरफ्तार कएल गेल व्यक्तिकेँ अधिकार अछि जे ओ गिरफ्तारीक कारण जानए, यदि गिरफ्तारी वारंटक आधारपर भेल अछि तँ ओकरा वारंट देखाओल जाए, ओ वकील वा निकट सम्बन्धीकेँ संपर्क कए सकए। ओकरा गिरफ्तारीक चौवीस घंटाक भीतर मजिष्ट्रेटक सम्मुख उपस्थित करब जरुरी थिक। ओकरा इहो बताएब जरुरी थिक जे ओ जमानतपर छोड़ल जा सकैत अछि कि नहि।

गिरफ्तार कएल गेल व्यक्तिकेँ हथकड़ी लगाएब:

ऊच्चतम न्यायलयक दिशा निर्देशक अनुसार गिरफ्तार कएल गेल व्यक्तिकेँ हथकड़ी लगाबएसँ बँचबाक चाही, कारण एहन व्यक्ति सजायाफ्ता नहि होइत छथि। हथकड़ीक प्रयोग अपवादिक परिस्थितिमे तखने कएल जाए जखन कि अभियुक्त हिंसक हो, पुलिसक गिरफ्तसँ भागि जेबाक संभावना होइक, किंवा आत्महत्यापर उतारु हो।

सीआरपीसीक धारा ७४क अधीन पुलिस अभियुक्तकेँ गिरफ्तार करबाक हेतु घरमे घुसि कए ओकरा पकड़ि सकैत अछि, ताहि लेल जरुरी भेलापर घरक खिड़कीकेँ तोड़ि सकैत अछि।

कोनो व्यक्तिकेँ गिरफ्तार केलाक बादे ओकर तलाशी कएल जा सकैत अछि, पहिने नहि। यदि गिरफ्तार कएल गेल व्यक्ति महिला छथि तखन महिले पुलिस ई काज कए सकैत अछि।

महिलाक गिरफ्तारी हेतु उच्चतम न्यायलय द्वारा जारी कएल गेल दिशा निर्देश:

उच्चतम न्यायलय द्वारा जारी कएल गेल मार्गदर्शनक

अनुसार सामान्यतः कोनो महिलाकेँ साँझक बाद आ भोर हेबासँ पहिने गिरफ्तार नहि कएल जाएत। यदि ततबे आवश्यक भए जाइक आ रातियेमे महिलाक गिरफ्तारी जरूरी होइक, भोर धरि रुकब कानूनक अनुपालन हेतु दिक्कति भए जेबाक संभावना प्रवल होइक, तरवन मजिष्ट्रेटक पूर्व अनुमति लए आ महिला पुलिस द्वारा ई काज कएल जाएत। गिरफ्तारीक बाद यदि महिलाकेँ तलाशी करब जरूरी होइक तरवन ई काज महिला पुलिस द्वारा कराओल जेबाक चाही। पुलिस हाजतिमे महिलाकेँ अलग राखबाक चाही यदि महिलाक हेतु अलग हाजति नहि होइक तरवन ओकरा अलग कोठरीमे राखल जेबाक चाही।

विना वारंटकेँ गिरफ्तारीः

आपराधिक प्रक्रिया संहिता 1 9 73 क धारा 41 क अनुसार पुलिस कोनो व्यक्तिकेँ निम्नलिखित परिस्थितिमे बिना वारंटकेँ गिरफ्तार कए सकैत अछि:

(१) जरवन ओ कोनो संज्ञेय अपराध केने हो,

(२) कोनो पुलिस अधिकारीकेँ कर्तव्य निर्वहनमे व्यवधान ठाढ़ केने होइक,

(३) ओकर घरसँ कोनो चोरीक माल पकड़ल गेल होइक,

(४) कानूनी हिरासतसँ मटिआ रहल हो,

(५) सेना, वायु सेना, जलसेनासँ भागि आएल हो,

(६) यदि ओकरा अपराधी घोषित कएल गेल हो,

(७) यदि ओ अभ्यस्त अपराधी अछि,

(८) यदि ओकरापर संज्ञेय अपराध करबाक सक्क छैक,

(९) यदि न्यायलय द्वारा छोड़ल गेल अपराधी न्यायलयक सर्तक अनुपालन नहि करैत अछि,

कैकटा आओर एहन कानूनसभ अछि जाहि सिकाइत भेलापर पुलिसकेँ अभियुक्तकेँ गिरफ्तार करबाक अजस्त्र अधिकार भए जाइत अछि।

संज्ञेय अपराध की थिक?

संज्ञेय अपराधमे पुलिस बिना कोर्ट आदेशकेँ अभियुक्तकेँ गिरफ्तार कए सकैत अछि। हत्या, वलात्कार, चोरी, राष्ट्रद्रोह, सन अपराधक मामला एहि श्रेणीमे अबैत अछि।

असंज्ञेय अपराध की थिक?

असंज्ञेय अपराधक मामलामे कोर्टक आदेश भेलाक बादे ककरो गिरफ्तार कएल जा सकैत अछि।

यदि अभियुक्त पुलिसक गिरफ्तसँ भागवाक प्रयास करैत अछि, तँ ओकरा पुलिस उपयुक्त वल प्रयोग कए पकड़ि सकैत अछि, परंतु वलक अनावश्यक प्रयोगसँ पुलिसकेँ बँचबाक चाही। मुदा आवश्यक भेलापर पुलिस जानो लए सकैत अछि, बसर्ते ओकर अपराध मृत्युदंड देबए जोगर होइक।

अग्रिम जमानत:

अग्रिम जमानतदेबाक अधिकार उच्च न्यायलय वा सेशन कोर्टकेँ अछि। अग्रिम जमानत हेतु आवेदन निचला कोर्टमे नहि कएल जा सकैत अछि। अग्रिम जमानत देबा काल न्यायलय सुनिश्चित करैत अछि जे आवेदक मामलाक विवेचनामे वांछित सहयोग करताह, देश छोड़ि बाहर नहि चलि जेताह, कोनो गवाह वा सबूतकेँ प्रभावित नहि करताह। आवेदककेँ यदि आसंका

होइक जे ओकरा कोनो मामलामे फँसा कए गिरफ्तार कएल जा सकैत अछि तँ ओ उचित न्यायालयकेँ अग्रिम जमानत हेतु आवेदन कए सकैत छथि।

अग्रिम जमानत ताबते धरिक हेतु देल जेबाक चाही जा धरि चालान कोर्टमे प्रषित नहि कएल गेल अछि, तकर बाद अभियुक्तकेँ नियमित जमानत हेतु सम्बन्धित न्यायलयमे आवेदन देबाक चाही (सजलुद्दीन अब्दुल समद शेख बनाम राज्य महाराष्ट्र)

न्यायक क हेतु ई जरूरी अछि जे अग्रिम जमानत देबासँ पूर्व विरोधी पक्षकेँ न्यायलय नोटिस जारी करए जाहिसँ अभियुक्त गलत जानकारि दए किंवा वांछित जानकारीकेँ दबा कए अग्रिम जमानत नहि लए सकए (बालचंद जैन बनाम मध्य प्रदेश)

जमानती वारंट:

गिरफ्तारीक वारंट कोनो कोर्टक पीठासीन अधिकारी द्वारा लिखित रूपमे जारी कएल जाइत अछि। ओहिमे स्पष्ट रूपसँ ई लिखल हेबाक चाही जे कानूनकक कोन धाराक अनुसार ओकर गिरफ्तारीक वारंट जारी कएल गेल अछि, ओकरा कहिआ आ करवन ओहि कोर्टमे हाजिर हेबाक छैक। ओहि आदेशमे इहो लिखल रहत जे ओकरा उचित जमानात देला पर एहि सर्त संग गिरफ्तारीसँ छूट देल जाइत अछि जे ओ नियत दिन/नियत समय पर कोर्टमे हाजिर भए जाएत, ताहि हेतु एकटा निश्चित रकमक बौंड सेहो ओकरा देबए पड़ैत अछि, एकाधिक व्यक्तिकक जमानात सेहो दबए पड़ि सकैत अछि।

गैर जमानती वारंट:

गैर जमानती वारंटमे पुलिस अभियुक्तकेँ गिरफ्तार कए

सम्बन्धित कोर्टमे हाजिर करैत अछि, तकर बादे ओकर जमानत पर छोड़वाक आवेदनपर कोर्ट विचार करत।कोनो मामलामे जमानत पर अभियुक्तकेँ रिहा करबासँ पूर्व कोर्टकेँ मामलाक गंभीर छानबीन कएल जाइत अछि, कोर्ट ई सुनिश्चित करए चाहैत अछि जे जमानतपर छोड़ि देलाक बाद ओ न्यायिक प्रक्रियाकेँ प्रभावित नहि करए, जरुरत भरि मामलाक अनुसंधानमे सहयोग करए, गवाहसभकेँ तोड़बाक प्रयास नहि करए। संगहि ओकर इतिहास आ चरित्रक विषयमे सेहो जानकारी लेबाक प्रयोजन होइत अछि जाहिसँ बाहर गेलाकबाद ओ समाजक हेतु समस्या नहि भए जाए।

सेशन कोर्ट वा उच्च न्यायालयसँ जमानत:

यदि अभियुक्त एहन अपराध केलक अछि जाहिमे मृत्युदंड वा आजन्म कारावासक प्रावधान थिक, तखन ओकरा जमानत सेशन कोर्ट वा उच्च न्यायालयसँ भेटत, ताहिसँ निचला कोर्टसँ नहि।

न्यायलयकेँ जमानत देबाक समय बहुत सावधानीपूर्वक विचार करबाक प्रयोजन अछि कारण अपराध सिद्ध होयबासँ पूर्वे ककरो जहलमे सड़ादेब मानवीय अधिकारक सरासर उल्लंघन थिक मुदा संगहि समाजकेँ व्यापक हितकेँ ध्यान राखब सेहो जरूरी अछि, जे ओ व्यक्ति बाहर आबि कए एहन ने कए देथि जे कोनो आन व्यक्तिक सम्मान ओ जीवन पर संकट उत्पन्न भए जाइक।

उपसंहार

संविधानक अनुक्षेद २१ आ २२ क तहत प्राप्त मौलिक अधिकारक रक्षाक हेतु आवश्यक अछि जे बेबजह ककरो स्वतंत्रता पर आघात नहि होइक, लोक निर्वाध अपन जीवनक रक्षा कए सकए। गिरफ्तारी निश्चय एहि संवैधानिक अधिकारकेँ सद्यः सीमिते

नहि करैत अछि अपितु ग्रहण लगा दैत अछि। मुदा ककरो स्वतंत्रता एहि हद धरि नहि भए सकैत अछि जे कोनो निर्दोष आदमीक जिनाइ कठिन कए दैक, किंबा कोनो अपराधी बेटछुट्ट भेल घुमैत रहए। अस्तु, पुलिस आ न्यायालयकेँ एकटा संतुलित रुखि राखि प्रत्येक मामलामे नीर- क्षीर विवेक रखैत काज करक चाही जाहिसँ कोनो निर्दोष व्यक्तिकेँ परेसान नहि होबए पड़ैक आ दोषी खुल्ला नहि घुमैत रहए।निश्चय ई संतुलन बनाएव एकटा कठिन काज थिक। तथापि, समस्त कानून ओ न्यायालय एहि प्रयासमे लागल रहैत अछि। ❑

सूचनाक अधिकार

भारतक संविधानक अनुक्षेद १९ मे निहित मौलिक अधिकारसँ भारतक नागरिककेँ सूचनाक अधिकार प्राप्त अछि। ताहि अधिकारकेँ प्राप्त करबाक व्यवस्था सूचनाक अधिकार अधिनियम, 2005 क अन्तर्गत कएल गेल। सूचनाक अधिकार अधिनियम, 2005 प्रत्येक नागरिककेँ ई अधिकार दैत अछि जे ओ सरकारसँ ओकर काजक बारेमे जानकारी मांगि सकैत अछि। एहि तरहें आब भारत सेहो विश्वक ओहि ६० देशमे सामिल भए गेल अछि जे अपन नागरिककेँ सूचनाक अधिकार प्रदान कए पारदर्शी, जवाबदेह आ सुशासन स्थापित करबाक चाक-चौबंद व्यवस्था केने अछि।

केन्द्रीय सूचना आयोग

सूचनाक अधिकार अधिनियम, 2005 मे ई व्यवस्था कएल गेल अछि जे केन्द्र सरकार द्वारा एक केन्द्रीय सूचना आयोगक गठन कएल जाएत जाहिमे एक मुख्य सूचना आयुक्त आ अधिक सँ अधिक दसटा केन्द्रीय सूचना आयुक्त होएत। मुख्य सूचना आयुक्त आ अन्य सूचना आयुक्तक नियुक्तिक हेतु एकटा समिति गठित होएत जकर अध्यक्ष प्रधानमंत्री आ लोकसभामे विपक्षक नेता आ प्रधानमंत्री द्वारा मनोनीत केन्द्रीय मंत्रीमंडलक एकटा मंत्री एकर सदस्य हेताह। एकर अतिरिक्त प्रत्येक राज्यमे राज्य सूचना आयोग अलगसँ गठित कएल जाइत अछि।

(सन् 2019मे सूचनाक अधिकार कानूनमे संशोधन कएल गेल जाहि अनुसार मुख्य सूचना आयुक्त आओर सूचना आयुक्तक कार्यकाल केन्द्र सरकार द्वारा निर्धारित कएल जाएत । उपरोक्त कानूनक धारा 13 मे कहल गेल अछि जे मुख्य सूचना आयुक्तक

वेतन,भत्ता आ सेवाक अन्य सर्तसभ मुख्य चुनाव आयुक्तक अनुसार होएत । सूचना आयुक्तक वेतन,भत्ता आ सेवाक अन्य सर्तसभ चुनाव आयुक्तक अनुसार होएत । उपरोक्त कानूनक धारा 16क अनुसार राज्य मुख्य सूचना आयुक्त आ राज्य सूचना आयुक्तक कार्यकाल आ सेवा,भत्ता एवम् सेवाक अन्य सर्तक निर्धारण केन्द्र सरकार करत ।)

यदि कोनो केन्द्रीय लोक सूचना अधिकारी बिना कोनो वाजिब कारणसँ सूचनाक हेतु आवेदन नहि लैत अछि, किंवा वाँछित सूचना देबएमे आना-कानी करैत अछि, किंवा जानि-बूझि कए गलत वा अधूरा जानकारी दैत अछि, वा सूचना नष्ट कए देल गेल अछि तँ केन्द्रीय सूचना आयोग सूचनाक अधिकार अधिनियम, 2005 क अनुक्षेद ७ (१) अन्तर्गत ओकरा खिलाफ सम्बन्धित विभागकेँ अनुशासनात्मक कारवाई करबाक आदेश दए सकैत अछि। एहन परिस्थितिमे आयोग सम्बन्धित दोषी अधिकारीकेँ सूचना देबाक दिन धरि २५० टाका प्रतिदिनक हिसाबसँ पचीस हजार टाका धरि जुर्माना लागा सकैत अछि।

आयोगक समक्ष सिकाइत सोझे दाखिल कएल जा सकैत अछि? यदि हँ, तँ कोन आधारपर?

निम्नलिखित परिस्थितिमे सूचनाक अधिकार अधिनियम, 2005 क धारा १८ क अन्तर्गत आयोगक समक्ष सोझे सिकाइत दाखिल कएल जा सकैत अछि:-

(क) यदि ओ ओहि कारणसँ अनुरोध प्रस्तुत करबाक हेतु असमर्थ रहल अछि, कि ओहि अधिनियमक अधीन एहन अधिकारीक नियुक्ति नहि कएल गेल अछि वा केन्द्रीय सहायक लोक सूचना अधिकारी ओहि अधिनियमक अधीन सूचना वा

अपीलक हेतु धारा 19 क उपधारा (1) में विनिर्दिष्ट केन्द्रीय लोक सूचना अधिकारी वा ज्येष्ठ अधिकारीकैं पठेबाक हेतु स्वीकार करबासँ मना कए देलक अछि;

(ख) यदि ओकरा ओहि अधिनियमक अधीन अनुरोध कएल गेल कोनो जानकारी धरि पहुंचएसँ मना कएल गेल अछि;

(ग) यदि ओकरा ओहि अधिनियमक अधीन विनिर्दिष्ट समय-सीमाक भीतर सूचनाक हेतु वा सूचना धरि पहुँचक हेतु अनुरोधक उत्तर नहि देल गेल अछि;

(घ) यदि ओकरासँ ओहन फ़ीसक रकमक संदाय करबाक हेतु अपेक्षा कएल गेल अछि, जे ओ अनुचित बुझैत अछि;

(ङ) यदि ओ विश्वास करैत अछि कि ओकरा ओहि अधिनियमक अधीन अपूर्ण, भ्रमित करएबला वा मिथ्या सूचना देल गेल अछि; आओर

(च) ओहि अधिनियमक अधीन अभिलेखक हेतु अनुरोध करबाक हेतु वा ओकरा प्राप्त करबासँ सम्बन्धित कोनो अन्य विषयक सम्बन्धमे।

सूचनाक अधिकारक तहत सरकारी विभाग, सरकारी सहायतासँ चलएबला गैर सरकारी संगठन, वा शिक्षण संस्थानसँ जानकारी प्राप्त कएल जा सकैत अछि। सूचनाक अधिकार अधिनियम, 2005 धारा 2 (एच) क तहत लोक प्राधिकरण अथवा सार्वजनिक संस्थाक लग उपलब्ध सूचनाक मांग कए सकैत अछि। सार्वजनिक संस्थासभमे संविधान द्वारा स्थापित या गठित, संसद या कोनो राज्य विधायिकाक कानून द्वारा स्थापित वा गठित, केन्द्र वा राज्य सरकारक कोनो अधिसूचना वा आदेशक द्वारा स्थापित वा

गठित, राज्य व केन्द्र सरकारक स्वामित्व बला, ओकरा द्वारा नियंत्रित वा पर्याप्त मात्रामे सरकारी धन पाबएबला निकाय सभ, गैर सरकारी संगठन व निजी क्षेत्रक निकाय जे सरकारक द्वारा प्रत्यक्ष वा अप्रत्यक्ष रूपसँ वित्तपोषित अछि, सामिल अछि।

आवेदक द्वारा सूचनाक अधिकारक उपयोग करैत केहन जानकारी मांगल जा सकैत अछि?

१. कोनो सरकारी दस्ताबेजक प्रति मांगि सकैत छी।

२. कोनो सरकारी दस्ताबेजक जाँच कए सकैत छी।

३. कोनो सरकारी काजकेँ जाँचि सकैत छी।

४. कोनो सरकारी काजमे प्रयुक्त बस्तुक प्रमाणित नमूना मांगि सकैत छी।

एहि कनूनक तहत अहाँ कोनो जानकारी हासिल कए सकैत छी जेनाकि : कोनो सड़ककेँ बनाबएमे सरकार कतेक खर्च केलक, प्रधानमत्रीक रहन- सहन पर कएल गेल खर्च, राष्ट्रपति भवनमे कएल गेल खर्च, कोनो सरकारी योजना पर कएल गेल खर्च, पंचायत द्वारा कोनो योजनामे कएल गेल व्यय वा कोनो प्रकारक अन्य जानकारी वा ओहिसँ सम्बन्धित दस्तावेजक छायाप्रति मांगल जाए सकैत अछि। सूचनाक अधिकार अधिनियम, 2005 क अनुक्षेद ६ (२) अन्तर्गत आवेदकसँ ई नहि पूछल जा सकैत अछि जे ओ सूचना किएक मांगि रहल छथि।

संगहि व्यक्तिगत विवरण, आय, पैन नंबर, विभिन्न पैरामीटरक तहत विशेषज्ञक व्यक्तिगत पैनल द्वारा देल गेल प्राप्तांक, संपत्तिक रिटर्न आओर संपत्तिक विवरण, आकलन

रिपोर्ट, मेडिकल रिपोर्ट, बैंक खातोंका विवरण, प्राधिकरणसँ स्पष्टीकरण मंगैत प्रश्न नहि पूछल जा सकैत अछि।

सूचनाक अधिकारक क्षेत्रमे नहि आवएबला विभाग :

–कोनो खुफिया एजेंसीक ओहन जानकारी, जकरा सार्वजनिक भेलासँ देशक सुरक्षा आओर अखंडताकेँ खतरा हो

– दोसर देशक संग भारतसँ जुड़ल मामला

– थर्ड पार्टी यानी निजी संस्थान सम्बन्धी जानकारी जे सरकारक पास उपलब्ध अछि ओहि संस्थाक जानकारीकेँ सम्बन्धित सरकारी विभागक मारफत हासिल कएल जा सकैत अछि।

स्वेच्छासँ जानकारी प्रकाशित कएल जाएत:

सूचनाक अधिकार अधिनियम, 2005 क अनुक्षेद ४ (बी) अन्तर्गत प्रत्येक सरकारी विभाग अपन विभागसँ सम्बन्धित अधिकसँ अधिक जानकारी स्वेच्छासँ विभागक वेवसाइटपर प्रकाशित करत। अन्यथा भारतक कोनो नागरिक सूचनाक अधिकारक तहत अनुक्षेद ६क तहत आवेदन दए सूचना प्राप्त कए सकैत छथि।

सूचनाक अधिकारक तहत आवेदन कोना कएल जाएत?

सूचनाक अधिकारक तहत आवेदनक हेतु कोनो निश्चित प्रपत्र नहि अछि। सादा कागज पर अपन आवेदन लिखि कए वांछित जानकारी मांगल जा सकैत अछि।

आवेदन शुल्कक भुगतान कोना कएल जाएत?

सूचनाक अधिकारक तहत आवेदन करबाक हेतु केन्द्र

सरकारक अधीन आबएबला मंत्रालय विभागसँ जानकारी प्राप्त करबाक हेतु दसटाकाक शुल्क लगैत अछि जकर भूगतान पोस्टल आर्डर, बैंक ड्राफ्ट, द्वारा कएल जा सकैत अछि। राज्य सरकार सभ अलग- अलग शुल्क रखने अछि।

आरटीआइ ऑन लाइन

आवेदक सूचनाक अधिकार अधिनियम, 2005 क अन्तर्गत सूचना प्राप्त करबाक हेतु, सूचनाक अधिकार (आरटीआई) ऑनलाइन पोर्टलक माध्यम https://rtionline.gov.in.सँ केन्द्रीय मंत्रालय/ विभागसँ आ "ऑनलाइन सूचनामे उल्लिखित अन्य केन्द्रीय लोक प्राधिकरणकेँ अनुरोध कए सकैत छथि।"

आरटीआई नियम, 2012 क अनुसार गरीबी रेखासँ नीचाक लोककेँ आरटीआई शुल्कक भुगतान करबाक आवश्यकता नहि अछि। तथापि, बीपीएल आवेदककेँ अपन आवेदनक संग- संग एहि सम्बन्धमे, उपयुक्त सरकार द्वारा जारी प्रमाण-पत्रक एक प्रति संलग्न करब जरुरी अछि।

प्रथम अपीलीय प्राधिकारीकेँ अपील करबाक हेतु, आवेदककेँ आरटीआई ऑनलाइन पोर्टलमे "सबमिट फर्स्ट अपील" नामक विकल्पक चयन करए पड़त आओर सामने आबए बला फार्मकेँ भरए पड़त। प्रथम अपीलकेँ दायर करबाक हेतु मूल आवेदनक पंजीकरण संख्या आओर ई-मेल आईडीक आवश्यकता पड़ैत अछि। आरटीआई अधिनियमक अनुसार, प्रथम अपीलक हेतु कोनो शुल्क नहि देबाक अछि। ऑनलाइन दायर आरटीआई आवेदन या प्रथम अपीलक स्थिति/ जवाब "स्थिति" पर क्लिक कए आवेदक द्वारा देखल जाए सकैत अछि।

सूचना के देत?

प्रत्येक सरकारी विभागमे एकाधिक लोक सूचना अधिकारी/सहायक लोक सूचना अधिकारी नियुक्त कएल जाइत छथि जिनकर जानकारी सम्बन्धित विभागक वेबसाइट किंबा सूचना पट्ट वा विभागमे पूछ-ताछ कए प्राप्त कएल जा सकैत अछि। लोक सूचना अधिकारी/सहायक लोक सूचना अधिकारी विभागक हेतु सूचनाक अधिकारक अधीन कएल गेल आवेदन प्राप्त करैत छथि, ओकरा सम्बन्धित अधिकारीकेँ पठाए सूचना संकलित करैत छथि आ नियत समय (आवेदन केलाक वाद एक मासक अधीन, कोनो- कोनो मामलामे ४५ दिन) मे जानकारी आवेदककेँ पहुँचवैत छथि।

सूचनाक अधिकार अधिनियम, 2005 क अनुक्षेद ६(३) अन्तर्गत यदि मांगल गेल सूचना आंशिक वा पूर्ण रूपसँ कोनो दोसर लोक प्राधिकरणसँ सम्बन्धित अछि तँ आवेदन प्राप्त केनिहार लोक प्राधिकरण ओकरा संविधित लोक प्राधिकरणकेँ पाँच दिनक भीतर स्थानान्तरित कए सकैत अछि। तकर सूचना आवेदककेँ सेहो देल जाएत।

प्रथम अपील

सूचनाक अधिकार अधिनियम, 2005 क अनुक्षेद १९ (१) अन्तर्गत प्रत्येक सरकारी विभाग ओहि अधिकारीक नाम अधिसूचित करत जकरा लग प्रथम अपील कएल जा सकैत अछि। यदि आवेदककेँ तीस दिनक भीतर जबाब नहि भेटैत छैक, किंबा भेटल जबाब अपूर्ण वा भ्रामक छैक तँ आवेदक तीस दिनक भीतर प्रथम अपीलीए अधिकारीक ओतए अपील कए सकैत अछि। एहि हेतु ओकरा फेरसँ फीस नहि देबए पड़तैक।

द्वितीय अपील

प्रथम अपीलीय प्राधिकारीक द्वारा देल गेल निर्णयसँ यदि आवेदक संतुष्ट नहि छथि तँ ओ द्वितीय अपीलीय प्राधिकारी (राज्य सूचना आयोग किंवा केन्द्रीय सूचना आयोग)कें द्वितीय अपील कए सकैत छथि। ध्यान रहए जे एहन कोनो अपीलक समय सीमा ९० दिन अछि।

सूचनाक अधिकार अधिनियम, 2005 क अनुक्षेद २३ अन्तर्गत कोनो न्यायालय ताधरि कोनो मामला नहि सुनत जाधरि प्रथम अपील द्वितीय अपील/ क प्रक्रिया पूरा नहि भेल अछि।

उच्चतम न्यायलयक किछु महत्वपूर्ण निर्णय : उच्चतम न्यायलय हालमे सिवील अपील संख्या ६१५९-६१६२(२०१३)मे संघ लोक सेवा आयोग बनाम अग्रेश कुमार एवम् अन्यक (CIVIL APPEAL NO.(s).6159-6162 OF 2013

मामलामे स्पष्ट केलक अछि जे अनर्गल, अनावश्यक आ अव्यवहारिक सूचनाक मांग कए सरकारी विभागकें एतेक परेसान नहि कएल जा सकैत अछि जे सरकारक अधिकांश समय ओहि सूचनाकें उपलब्ध करेबामे एहि हद तक नष्ट भए जाइक जे रचनात्मक/सकारात्मक काज केनाइ पराभव भए जाए।

उच्चतम न्यायालयक न्यायमुर्ति आदर्श कुमार गोयल एवम् न्यायमुर्ति उदय उमेश ललितक पीठ द्वारा २० मार्च २०१८क एनजीओ कॉमन कॉजक याचिकाक निस्तारण करैत फैसला देलक अछि जे कोनो हालतमे पचासटा टकासँ बेसी शुल्क नहि लेल जा सकैत अछि। एकर अतिरिक्त यदि कोनो दस्तावेजक प्रतिलिपिक मांग कएल जाइत अछि तँ प्रति पृष्ठ पाँच टका अतिरिक्त शुल्क लेल जा सकैत अछि। ई आदेश उच्च न्यायालय, विधान सभा

आओर अन्य सरकारी आओर स्वायत्त निकाय सहित सभ संस्थापर बाध्यकारी होएत जे सूचना का अधिकार अधिनियम, 2005 क अन्तर्गत अबैत अछि।

उच्चतम न्यायलय हालमे सिवील अपील संख्या ९०१७(२०१३) थालप्पलम सहकारी बैंक एवम् अन्य बनाम् केरल राज्य एवम् अन्य (मामलामे स्पष्ट केलक अछि जे सहकारी समिति सभ सूचनाक अधिकार अधिनियम, 2005 क अन्तर्गत नहि अबैत अछि।

सूचना अधिकार कानून स्पष्टताक आवश्यकता : सूचना अधिकार कानूनक सर्वाधिक महत्वपूर्ण पहलू लोक प्राधिकरणक मुद्दा पर स्पष्टताक आवश्यकता अछि। सूचनाक अधिकारमे अखनो कैकटा त्रुटि अछि, जेना सरकारी अधिकारी द्वारा जबाब देबाक हेतु भारी भरकम फीसक मांग कए देब, आवेदनकेँ एहि विभागसँ ओहि विभाग स्थानान्तरिक करैत रहब, सामिल अछि। प्रथम अपील विभागेकक अधिकारीक समक्ष कएल जाइत अछि जाहिसँ मामलामे कोनो नव बात नहि भए पबैत अछि। समान्यतः ओ पहिने लेल गेल निर्णयक पुष्टि कए दैत छथि। तकर बाद दोसर आ अन्तिम अपील राज्य वा केन्द्रीय सूचना आयोगक समक्ष करबाक प्रावधान अछि। मुदा समस्या अछि जे ओहिठाम आवेदनक भरमार अछि आ निर्णय लेबामे बहुत समय लागि जाइत अछि जाहिसँ कैक बेर गलत लोक बँचि जाइत अछि। सरकारकेँ बहुत रास मामलामे सूचना नहि देबाक छूट भेटि जाइत अछि। कानूनक एहि प्रावधानक कतेको मामलामे दुरूपयोग होइत अछि। कोनो-ने- कोनो बहाना बनाए सूचना नहि देबाक प्रयास होइत रहल अछि। हलाकि आयोग एहन मामलामे बहुत सख्त रुखि रखैत अछि आ दोषी अधिकारीकेँ जुर्माना सेहो लगबैत अछि। मुदा तैं

की? विलंब तँ भैए जाइत अछि। फेरसभ लोक ओतेक धैर्य पूर्वक लागलो नहि रहि पबैत छथि।

जे होउ, सूचनाक अधिकार कानूनकेँ बनि गेलासँ भारतक नागरिककेँ सरकारी काम-काजक जानकारी लेब आसान भए गेल अछि। कतेको तरहक जरूरी सेवामे निर्णयमे पारदर्शिता आएल अछि। बहुत तरहक कदाचारक मामला सभ पकड़ल गेल अछि। सरकारी अधिकारी गलत काज करबामे डराइत छथि। कतेको मंत्री धरिकेँ इस्तिफा देबए पड़लनि अछि। निश्चय एहि कनूनसँ आम नागरिकक महत्व वढ़ल अछि। मुदा दिक्कति एहि बातक अछि जे एखनो बहुत रास नागरिक एहि कानूनक जानकारीसँ वंचित छथि। ताहि हेतु जरुरी अछि जे एकर पर्याप्त प्रचार होइक। सूचना लेबाक आ आवेदन करबाक प्रक्रियाकेँ आओर सरल बनाओल जाइक।

❑

२५.०३.२०१८

संपत्ति हस्तांतरण

संपत्ति हस्तांतरण अधिनियम, 1882 १ जुलाइ १८८२सँ लागू भेल। संपत्ति हस्तांतरण अधिनियम स्वैच्छिक हस्तांतरण-बिक्री, बन्हक (भरना), उपहार, अदला- बदली, चार्ज पर लागू होइत अछि। विरासात, दिवालिआपन, जव्ती, न्यायलयक आदेशक अनुपालन हेतु,, वा इक्षा पत्र द्वारा कानूनक अनुपालनक हेतु कएल गेल संपत्तिक हस्तान्तरणपर संपत्ति हस्तांतरण अधिनियम लागू नहि होइत अछि।

केओ अपन संपत्ति किएक बेचैत अछि? पैसाक प्रयोजन भेला पर-जगजाहिर जबाब अछि। बेचएबलाकेँ उचित पैसा भेटि जाइक आओर किननाहरकेँ सही सलामत संपत्ति जेना जमीन, मकान, फ्लैट, भेटि जाइक जाहिपर किननाहर निर्वाध रूपसँ मालिकाना हक प्राप्त कए सकए, ओकर स्वेच्छा आ कानून सम्मत तरीकासँ ओकर उपभोग कए सकए। एहन नहि होइक जे किननाहर सभटा पैसा दए दैक मुदा किनल गेल संपत्तिपर केओ आन अपन हक लए ठाढ भए जाइक, किंबा बलपूर्बक ओहि संपत्तिपर कव्जा बनओने रहए। कएबेर एहनो होइत अछि जे एकहिटा संपत्ति कैगोटाक हाथे बेचि देल गेल हो किंवा ओहि संपत्तिपर बैंक वा कोनो आओर व्यक्तिक कर्जा होइक आओर ओहि तरे ओ संपत्ति बन्हक पड़ल हो। ताहि हेतु ई आवश्यक अछि जे कोनो संपत्ति किनबासँ पूर्व क्रेता उचित पूछताछ कए सुनिश्चित कए लेथि जे ओहि संपत्तिपर कोनो लफड़ा तँ नहि अछि।

संपत्तिक हस्तान्तरणक समय मूलतः निम्नलिखित बातक ध्यान राखब जरूरी थिकः

१.बेचनाहरकेँ ओहि संपत्तिपर पूर्ण कानूनी अधिकार हेबाक

चाही, ताहि हेतु ओकरासँ संपत्तिक मूल दस्ताबेजक मांग जरूर करबाक चाही, मात्र फोटोकाँपी देखिकए सौदा नहि तय कए लेबाक चाही।

२.सब-रजिष्ट्रारक कार्यालयसँ एहि बातक पक्का जानकारी लेबाक चाही जे ओ संपत्ति भरना/बन्हकतँ नहि अछि।

३.सब-रजिष्ट्रारक कार्यालयसँ एहि बातक जानकारी सेहो लेबाक चाही जे ओ संपत्ति कहीं पहिने ककरो हाथे बेचि देल गेल तँ नहि अछि?

४.एहि बातक जानकारी लेबाक चाही जे बेचनाहर ओहि संपत्तिकेँ कतएसँ आ केना प्राप्त केलक, ताहि दस्ताबेजकेँ देखि कए सुनिश्चित करबाक चाही जे बेचनाहर सही आदमीसँ ओ संपत्ति किनने अछि, माने जे जकरासँ ओ ओहि संपत्तिकेँ किनलक तकर ओकरा बेचबाक पूर्ण अधिकार रहैक कि नहि, अन्यथा काल्हि भेने केओ सामने आबि कए कहि सकैत अछि जे ओहि संपत्तिमे हमरो हिस्सा छल, तकरा केओ आन कोना बेचि देलक? एहन नहि हो जे पैसा खर्चो केलाक बाद लफड़ा भए जाए।

कोनो संपत्ति किनबासँ पहिने की करबाक चाही?

१. पहिने ई पता करी जे ओ संपत्ति बेचनहारकेँ कतएसँ प्राप्त भेल? की ओ ओकरा कानून आ दस्ताबेजक अनुसार अधिकार प्राप्त व्यक्तिसँ किनने अछि? ताहि हेतु विक्रयक अनुवंधक बजाप्ता निवंधन (सेल डीडक निबंधन) भेल अछि कि नहि? तकर प्रमाणस्वरूप दस्ताबेज देखल जाए।

२. बेचनहारक ओहि संपत्तिपर कब्जा अछि के नहि?

३. ओहि संपत्तिकेँ बन्हक राखि कर्ज तँ नहि लेल गेल अछि,

जँ लेल गेल अछि तँ कर्जक आपसी भेल कि नहि,

४. संपत्तिक ऊपर कोनो टैक्स बाँकी तँ नहि अछि?

५. यदि संपत्ति स्वअर्जित नहि अछि तँ ओहिमे आनो लोकक हिस्सा छैक कि बेचनहार एसगरे ओकर हकदार अछि,

६. संपत्तिक दाखिल खारिज बेचनिहारक नामे अछि कि नहि,

७. संपत्तिक वास्तविक नापीक अनुसार ओकर रकबा दस्तावेजमे देल गेल विवरणसँ मेल खाइत अछि कि नहि?

संपत्ति बेचनिहारक ओहि संपत्तिपर अधिकार सुनिश्चित कएलेलाक बाद किननाहर आ बेचनिहार आपसमे एकटा सहमति पत्र पर हस्ताक्षर करताह। ओहिमे क्रय विक्रयक सभटा सर्त लिखल जाएत, जेना संपत्तिक मूल्य, भूगतानक सर्त। उचित मूल्यक स्टांप पत्रपर सहमति पत्र पर बेचनाहर किननाहरक अतिरिक्त दूटा गवाहक हस्ताक्षर होएब जरूरी थिक।

कोनो संपत्तिक हस्तान्तरण हेतु निवंधनसँ पूर्व ओहि राज्यमे लागू कानूनक तहत सटांप पेपर लेब आवश्यक थिक। आइ-काल्हि स्टांप पेपर आनलाइन भेटि जाइत अछि। ताहि हेतु आनलाइन भूगतान कए ओकर जानकारी आनलाइन स्टांप पेपर विक्रेताकेँ देब जरूरी थिक। पेमेंटक सूचना प्राप्त होइते ओहि सुविधा केन्द्र द्वारा स्टांप पेपरकेँ आनलाइन निकालि लेल जाइत अछि। एहि तरहे आसानीसँ भारी मूल्यक स्टांप पेपरकेँ प्राप्त कएल जा सकैत अछि।

स्टांप ड्युटीक गणना हेतु बेचल जा रहल संपत्तिक सर्किल दरक आधार पर कएल जाइत अछि। यदि जमीनपर मकान सेहो बनल अछि तँ ओकर अलग-अलग गणना कएल जाइत अछि।

विक्रय मूल्य, सरकारी सर्किल दर दुनूमे जे ज्यादा होएत ताहि हिसाबसँ स्टांप ड्युटी लागत। तकर अलाबा निवंधन शुल्क सेहो अलगसँ देबए पड़ैत अछि। यदि सर्किल दरक हिसाबसँ उचित स्टांप ड्युटी नहि देल जाइत अछि तँ निवंधन खारिज भए सकैत अछि।

मुख्तारनामा (power of attorney) :

मुख्तारनामा/वकालतनामा (पावर आफ अटर्नी)क आधारपर कएल गेल संपत्तिक हस्तानान्तरण :

माननीय उच्चतम न्यायलय सूरज लैम्प एवम् इन्डस्ट्रीज बनाम हरियाणा सरकार एवम् अन्यक मामलामे निर्णय देलक अछि जे मुख्तारनामा (पावर आफ अटर्नी)क आधारपर संपत्तिक हस्तानान्तरण गैरकानूनी थिक। मुख्तारनामा (पावर आफ अटर्नी) मूलतः निकट सम्बन्धी जेना पिता, पुत्र, पत्नी वा खास मित्रक पक्षमे एहि हेतु कएल जा सकैत अछि जे संपत्तिक मालिक कोनो खास वजहसँ ओहि संपत्तिक क्रय विक्रयक निवंधनमे उपस्थित नहि भए सकैत अछि, (जेना कि केओ विदेशमे हो)

(R.V. Raveendran, A.K. Patnaik, H.L. Gokhale IN THE SUPREME COURT OF INDIA CIVIL APPELLATE JURISDICTION SPECIAL LEAVE PETITION (C) NO.13917 OF 2009)

निवंधनक समय किननाहर, बेचनाहरक अलाबा दूटा गवाहक उपस्थिति जरूरी अछि। ओहि गबाहक हस्ताक्षर कबाला (सेल डीड) पर जरूरी थिक। संपत्तिक क्रय विक्रयक निवंधनक समयमे कोनो कारणसँ बेचनिहार किंवा किननाहर स्वयं उपस्थित

नहि भए सकैत अछि तँ कोनो सम्बन्धी वा मित्रकेँ उचित मुख्तारनामा (power of attorney) दए ई काज कराओल जा सकैत अछि।

यदि विक्रय मूल्य पचास लाखसँ बेसी अछि तँ किननाहरक ई कर्तव्य अछि जे विक्रय मूल्यक एक प्रतिशत काटि कए उचित चालान प्रपत्र द्वारा आयकर विभागमे आनलाइन वा बैकमे जमा कए देथि अन्यथा ओ आयकर विभागक चपेटमे आबि सकैत छथि। एहि तरहेँ काटल गेल टाका आयकर विभाग द्वारा आयकर रिटर्न भरलापर कुल देय आयकरमे मिन्हा कए देल जाइत अछि।

सेल डीडक मसौदा :

सेल डीडक मसौदा तैयार करबामे प्रचुर सावधानी राखब जरूरी थिक। ओहिमे संपत्तिक चौहद्दी, रकबा, खाता नंबर, खेसरा नंबर, सहित ओकर पूर्बक मालिकक वर्णन हेबाक चाही। विक्रयमूल्य सहित वेचनिहार आ किननाहरक विवरण हेबाक चाही। बेचनिहार द्वारा स्पष्ट घोषणा हेबाक चाही जे ओ ओहि संपत्तिक पूर्ण मालिक अछि, जे ओहि पर कोनो आन व्यक्तिक अधिकार नहि अछि, जे कोनो तरहक कानूनी विवाद ओहि संपत्तिपर नहि अछि, जे ओ संपत्तिपर कोनो कर्ज नहि बाँकी अछि, आदि, आदि। सेलडीडमे इहो लिखल जेबाक चाही जे ओ संपत्ति बेचनिहारक स्वअर्जित अछि, यदि से नहि अछि आओर ओ संपत्ति संयुक्त परिवारक पुस्तैनी संपत्तिक हिस्सा अछि तखन ओकरा दियादी बटबाराक संगे ई प्रमाण देबाक चाही जे ओ संपत्ति ओकरे हिस्साक अछि आओर ओहिपर कोनो आन पटीदारक हक नहि छैक। यदि ओहिमे आनो पटीदारक हिस्सा सामिल छैक, तखन

ओहि संपत्तिक विक्रय पत्र (सेल डीड) पर सभ पटीदारक दस्तखत जरूरी अछि आन्यथा भविष्यमे ओहिपर कानूनी झंझटि भए सकैत अछि। सेलडीड (विक्रय पत्र)क निवंधनक बाद किननाहर द्वारा बेचनिहारकेँ विक्रय मूल्यक पूरा भूगतानक बादे सेलडीड (विक्रय पत्र) किननाहरकेँ देल जाइत अछि।

जमीन-मकानक क्रय विक्रय सामान्यतः कमे काल होइत अछि जाहिमे जीवन भरिक कमाओल धन लागि जाइत अछि। तेँ जरूरी अछि जे ई काज पूर्ण सावधानीक संगे कएल जाए। कागज-पत्तर ठीकसँ बनाओल जाए आ किनल संपत्तिक कव्जा ठीकसँ लेल जाए जाहिसँ बादमे कोनो प्रकारक झंझटिमे नहि पड़ी। ❑

ओहि युगमे जखन धार्मिक कट्टरवाद चर्मोत्कर्षपर छल, जखन कि जाति-पातिक भेदभाव समाजक मान्यता प्राप्त केनहि छल संगहि समस्त विधि-विधानकेँ प्राभावित केने छल, कबीर दास एकहिबेर विद्रोहक विगुल बजा देलाह! ओहि युगमे जखन उच्च जातिक लोकक संपूर्ण समाज पर वर्चस्व छलैक, जखन धार्मिक, सामाजिक आ आर्थिक शक्ति पूर्णतः किछु व्यक्तिक हाथमे सिमटल छल, -कबीरदास बाजि उठलाहः

एक बूंद एक मल-मूतर, एक चाम एक गूदा।

एक जातिसे सव उपना, कौन वाभन कौन सूदा।।

व्यक्ति-व्यक्तिमे भेदभाव करब कबीरदासकेँ एकदम पसिन नहि छलनि। एहि दृष्टिसँ देखल जाए तँ ओ भक्तिकालक महान साम्यवादी छलाह। मानव-मानवमे विभेद उतपन्न करएबला धर्म, अन्धविश्वास ओ वाह्य आडंवरक प्रति जतेक कठोर रुखि कबीरदास अपनओलनि ततेक केओ नहि अपना सकल। हुनकर कहब छलनि जे मानव मात्र एकहि ईश्वरक अंश अछि। प्रकृति सभकेँ एकरंग वनओने अछि, सभक सोनित एकहि रंग अछि, तरखन ई विभेद किएक?

एकै पवन एक ही पानी, करी रसोई न्यारी जानी।

माटी सूँ माटी लै पोती, लागी कहौ कहाँ धूँ छोती।।

कबीरदासकेँ जाति विभेद एक्कोरत्ती पसिन नहि छलनि। जन्मभरि ओ पाखंड, सामाजिक अन्याय, जातीय विद्वेष, आ आर्थिक शोषणक विरोधमे लड़ैत रहलाह। वाभन, शुद्रक कथे कोन ओ तँ हिन्दू, मुसलमानक विभेदकेँ सेहो स्वीकार नहि करैत छलाह।

जौं तूँ वाभन वभनी जाया, तौ आन बाट है क्यो नहि आया।

जौं तूँ तुरक तुरकनी जाया, तौ भीतर खतना क्यो न कराया।।

कबीरदास उपदेशक वा पुजारी नहि छलाह। जीविकाक हेतु ओ जुल्हाक धंधा करैत छलाह, जकरा सामाजिक धरातलपर पैघ काज नहि मानल जाइत छलैक। स्वयं कपड़ा बूनब आ दोसर हेतु मजूरी कए कपड़ा बूनबामे अन्तर छैक। कबीरदास कोनो मालिकक काज नहि करैत छलाह। ओ गृह उद्योगक स्वाभिमानक रक्षा करैत पेट भरैत छलाह। ओ अपन व्यवसायमे ततेक रमि गेल छलाह जे हुनक काव्यमे सदति ओही प्रकारक वस्तुसभक वर्णन अछि। एहि तरहें व्सायजनित प्रतिष्ठाक सेहो हुनका कोनो परवाह नहि छलनि।

ओ सगर्व कहलाहः

जाति जुलाहा मति को धीर, हरषि-हरषि गुण रमै कबीर।

मेरे राम की अभै पद नगरी, कहे कबीर जुलाहा।

तू वाभन मैं कासी का जुलाहा।।

कबीर दास मौलिक विचारक छलाह। धर्मक वास्तविक तात्पर्यकेँ ओ बुझलाह आओर साधारण जनता धरि ओकरे भाषामे तकरा रखलाह। ताहि हेतु हुनका कोनो दुर्गति वाँकी नहि रहलनि। प्राणोक रक्षा कठिन भए गेलनि। परंतु ओ निर्भयतापूर्वक अपन विचारपर अडिग रहलाह। तत्कालीन समाजक किछु शक्तिशाली लोक कबीरदासक प्रवल विरोध कएलक। तेँ कबीरदासकेँ कहए पड़लनिः

कबिरा खड़ा बजारमे, लिआ लकुटि हाथ।

जो घर जारे आपना, धरै हमारे साथ।।

तमाम विरोधक बाबजूद कबीरदास रूकलाह नहि, अपन विचार लए कए आगू बढ़ैत रहलाह आ समयक कसौटीपर सही उतरलाह।

भक्त कबीरक ई अनुभव छलनि जे शास्त्र मर्यादाक संग संप्रदाय निष्ठा जुड़ल होइत अछि। शास्त्र आ संप्रदायक सीमानमे रहि कए मानव मात्रक हेतु भक्तिक सर्वसुलभ पथ प्रस्तुत नहि कएल जा सकैत अछि। भक्तिपथक दूटा महान अवरोध थिक-शास्त्र आ संप्रदाय जे भक्ति भावनाकेँ सरल सहज रहए नहि दैत अछि। कबीर सहजमे आस्था रखैत छलाह। हुनक लगाव कोनो प्रकारक रुढ़ि आ अन्ध मर्यादासँ नहि छलनि। अनुभवकक तराजूपर तथ्य आ सत्यकेँ जाँचि कए ग्रहण त्याग करब हुनकर जीवनक्रम छलनि। धार्मिक अन्धविश्वास आ ढ़ोंगकेँ ओ प्रवल विरोधी छलाह।

कंकड़ पाथर जोड़ि कए मस्जिद दिओ बनाय।

ता चढ़ि मुल्ला बांग देइ क्या बहिरो भयो खुदाइ।।

संगहि ओ इहो कहलाहः

पाथर पूजे हरि मिले तौं मैं पूजूँ पहाड़।

तासे तो चक्की भली पिसे खाय संसार।।

प्रखर मानवतावादी कबीर धार्मिक प्रपंचकेँ चुनौती देलाह। निर्भीक आ तटस्थ भावसँ ओ समाजमे वढ़ि रहल ढ़ोंगक विरोध केलाह-

यह सब झुठी बंदगी, बिरथा पंच नबाज।

साँचै मारै झुठि पड़ि, काजी करै अकाज।।

करसे तो माला जपै, हिरदै बहै डमडूल।

पग तो पालामे गिरया, भजण लागी सूल।।

जप-तप संजम पूजा अरचा, जोतिग जग बौराना।

कागद लिखि-लिखि जगद भूलाना, मन ही मन न समाना।।

कबीरदास युग निर्माता छलाह। ओ पारंपरिक लीकसँ हटि कए समाजकेँ एकटा क्रांतिक मार्गपर अनलाह। गरीब-धनीक, ब्राह्मण-शूद्र, आदिक बीचमे वर्ग समन्वयक सहज मार्ग प्रस्तुत केलाह। मानवतावादक प्रचार कए धर्मक वास्तविक अर्थकेँ लोक बूझए, तकर प्रयास केलाह। ओ अपन समस्त जीवनकेँ परोपकार आ मानव कल्याणमे लगा देलाह।

मानवमात्रक कष्ट निवारणक हेतु ओ चिंतित रहैत छलाह।

सुखिआ सब संसार है, खाबे अरु सोबै।

दुखिआ दास कबीर है, जागे अरु रोबे।।

अस्तु, ई तय अछि जे कबीरदास संत आ कवि तँ छलाहे सभसँ बढ़िकए ओ क्रान्तिकारी छलाह। समस्त समाजमे ओ एकटा नवचेतना आनए चाहैत छलाह। वर्ग विभेदकेँ नष्ट कए समाजमे मानवतावादक स्थापना चाहैत छलाह। ईश्वर एक छथि, मनुक्ख एक अछि, विभेद मानव निर्मित अछि-से हुनकर मंत्रवाक्य छल।

समाजक स्थिति तँ तेहने छल जे ईश्वरक केबार किछुए लोक हेतु खुजैत छल। तेहन समाजमे ताल ठोकि अपन विचार कहि देब आ ओकरा व्यवहारमे आनब क्रान्ति नहि तँ की छल? प्रयोजन अछि समाजमे एहने व्यक्तित्वकेँ, जे हमरा लोकनिकेँ वर्तमान सामाजिक अन्तर्द्वंदसँ मुक्ति दए सकए। ❑

मकर संक्रांति

मकर संक्रान्ति सम्पूर्ण भारत ओ नेपालमे सर्वत्र कोनो-ने-कोनो प्रकारसँ मनाओल जाइत अछि। पौष मासमे जखन सूर्य मकर राशिमे अबैत छथि तखने ई पावनि मनाओल जाइत अछि। प्रतिवर्ष मकर संक्रान्ति १४ वा १५ जनबरीकेँ पड़ैत अछि।

तमिलनाडूमे मकर संक्रान्तिकेँ 'पोंगल' कहल जाइत अछि। कर्नाटक, केरल आ आँध्रप्रदेशमे एकरा संक्रान्तिये कहल जाइत अछि। पंजाब आ हरियाणामे 'लोहड़ी' कहल जाइत अछि आ एक दिन पहिने अर्थात् १३ जनबरीकेँ मनाओल जाइत अछि। उत्तर प्रदेशमे एकरा मूलतः दानक पावनिक रूपमे मनाओल जाइत अछि। प्रयागमे प्रतिवर्ष १४ जनबरीसँ माघमेला प्रारंभ होइत अछि। माघ मेलाक प्रथम स्नान १४ जनबरीसँ प्रारंभ भए कए अन्तिम स्नान शिवरात्रिकेँ होइत अछि। महाराष्ट्रमे एहि दिन विवाहित महिला अपन पहिल संक्रान्तिपर तूर-तेल वा नून अन्य सुहागिनकेँ दइ छथि। बंगालमे एहि दिन स्नानक बाद तिल दान करबाक प्रथा अछि।

एहि अवसरपर गंगासागरमे प्रतिवर्ष विशाल मेला लगैत अछि। असममे मकर संक्रान्तिकेँ 'माघ-विहू' अथबा 'भोगाली विहू'क नामसँ जानल जाइत अछि। राजस्थानमे एहि पर्वपर सुहागिन महिला अपन सासुकेँ वियनि दए आशीर्वाद प्राप्त करैत छथि। संगे कोनो सौभाग्य सूचक वस्तुकेँ चौदहक संख्यामे पूजन आ संकल्प कए चौदहटा ब्राह्मणकेँ दान दइ छथि।

मकर संक्रान्तिक माध्यमसँ भारतीय सभ्यता आ संस्कृतिक विविध रूपमे आभास होइत अछि। एहन धारणा अछि जे मकर संक्रान्तिक दिन शुद्ध घी आ कम्बलक दान केलासँ मोक्षक प्राप्ति

होइत अछि।

माघे मासे महादेव: यो दास्पति वृहकम्वलम्

स भुक्त्वा सकलान भोगान अन्ते माक्ष प्राप्पति।।

पुराणक अनुसार मकर संक्रान्तिक पर्व व्रह्मा, विष्णु, महेश, गणेश, आद्यशक्ति आ सूर्यक आराधना आ उपासनाक पावन व्रत अछि जे तंत्र-मंत्र- आत्माकेँ शक्ति प्रदान करैत अछि। संत-महर्षि लोकनिक अनुसार एकर प्रभावसँ प्राणीक आत्मा शुद्ध होइत अछि, संकल्प शक्ति बढ़ैत अछि, ज्ञान तंतु विकसित होइत अछि। मकर संक्रान्ति अही चेतनाकेँ विकसित करएबला पावनि अछि। ई सम्पूर्ण भारतमे कोनो-ने-कोनो रूपे मनाओल जाइत अछि।

पुराणक अनुसार मकर संक्रान्तिक दिन सूर्य अपन पुत्र शनिक घर एक मासक हेतु जाइत छथि, कारण मकर राशिक स्वामी शनि छथि। यद्यपि ज्योतिषीय द्दष्टिसँ सूर्य आ शनिक ताल-मेल संभव नहि अछि, तथापि एहि दिन सूर्य स्वयं अपन पुत्रक घर जाइत छथि। पुराणमे आजुक दिन पिता पुत्रक सम्बन्धमे निकटताक प्रारंभक रूपमे देखल जाइत अछि।

मकर संक्रान्तिक दिन गंगाकेँ पृथ्वीपर आनएबला भगीरथ अपन पूर्वजक तर्पण केने छलाह। हुनक तर्पण स्वीकार केलाक बाद एही दिन गंगा समुद्रमे मिलि गेल रहथि। तँए एहि दिन गंगा सागरमे मेला लगैत अछि। विष्णु धर्मसूत्रक अनुसार पितरक आत्माक शान्तिक हेतु आ अपन स्वास्थवर्द्धन ओ सभक कल्याणक हेतु तिलक प्रयोग पुण्यदायक आ फलदायक होइत अछि। तिल-जलसँ स्नान करब, 'तिल'क दान करब, तिलसँ बनल भोजन,

जलमे तिल अर्पण, तिलक आहुति आ तिलक उवटन लगाएब।

एहि दिन भगवान विष्णु असुरक अन्त कए युद्ध समाजिक घोषणा केने छलाह। ओ राक्षस सभक मुड़ीकेँ मंदार पर्वतमे दबा देने रहथि। एतदर्थ एहि दिनकेँ अशुभ आ नकारात्मकताकेँ समाप्त करबाक दिनक रूपमे देखल जाइत अछि।

सूर्यक उत्तरायण भेलाबाद देवता लोकनि व्रह्म मुर्हुत उपासनाक पुण्यकाल प्रारंभ होइत अछि। एहि कालकेँ परा-अपरा विधाक प्राप्ति काल कहल जाइत अछि। साधनाक हेतु एकरा सिद्धिकाल सेहो कहल जाइत अछि। एहि समयमे देव प्रतिष्ठा, गृह निर्माण, यज्ञकर्म आदि पवित्र काज कएल जाइत अछि।

रामायण कालसँ भारतीय पत्र-पत्रिकामे दैनिक सूर्योपारायणक प्रचलन अछि। रामचरितमानसमे भगवान राम द्वारा गुड्डी उड़ेबाक कार्यक उल्लेख सेहो अछि। मकर संक्रान्तिक वर्णन वाल्मिकी रामायणमे सेहो भेल अछि। राजा भगीरथ सूर्यवंशी छलाह। ओ भगीरथ तप-साधनाक द्वारा पापनाशिनी गंगाकेँ पृथ्वीपर आनि अपन पूर्वजक उद्धार केने छलाह। राजा भगीरथ अपन पूर्वजक गंगाजल, अक्षत, तिलसँ श्राद्ध-तर्पण केने छलाह। तहिआसँ मकर संक्रान्तिक स्नान आ मकर संक्रान्तिक श्राद्ध-तर्पणक परंपरा चलि रहल अछि।

कपिल मुनिक आश्रमपर मकर संक्रान्तिक दिन माँ गंगाक पदार्पण भेल छल। पावन गंगाजलक स्पर्श मात्रसँ राजा भगीरथक पूर्वजकेँ स्वर्ग प्राप्ति भेलनि। कपिल मुनि वरदान दैत बजलाह-

“मातृ गंगे त्रिकाल तक लोक सभक पापनाश करतीह आ भक्तजनक सात पुस्तिकेँ मुक्ति आ मोक्ष प्रदान करतीह।

गंगाजलक स्पर्श, पान, स्नान ओ दर्शन सभ पुण्यदायक फल प्रदान करत।”

सूर्यक सातम किरण भारतवर्षमे आध्यात्मिक उन्नतिक प्रेरणादायी अछि। सातम किरणक प्रभाव भारतवर्षमे गंगा-जमुनाक मध्य अधिक समय तक रहैत अछि। एहि भौगोलिक स्थितिक कारण हरिद्वार आ प्रयागमे माघमेलाक आयोजन होइत अछि। पितृतुल्य भगवान भास्कर दक्षिणायनसँ उत्तरायणमे जाइत काल ऊर्जामयी प्रकाश पृथ्वीपर वर्षा करैत छथि। अतुल्य शक्ति श्रोत प्रकृति रातिकेँ छोट आ दिनकेँ पैघ करए लगैत छथि। पृथ्वीमाता उदरस्थ आनाजकेँ पकबए लगैत छथि। चारू दिस शुभे-शुभ होइत रहैत अछि। एहन अद्भुत समयमे मकर संक्रान्तिक पर्व मनाओल जाइत अछि।

सक्रान्तिक दिन पंजाबमे ‘लोहड़ी’क नामसँ मनाओल जाइत अछि। पंजाबक अतिरिक्त ई पावनि हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, दक्षिणी उत्तर प्रदेश आ जम्मू काश्मीरमे सेहो धूम-धामसँ मनाओल जाइत अछि। पारंपरिक तौरपर ‘लोहड़ी’ फसलक रोपनी आ ओकर कटनीसँ जुड़ल एक विशेष पावनि अछि। एहि दिन वॉनफायर जकाँ आगिक ओलाव जरा कए ओकर चारूकात नृत्य कएल जाइत अछि। बालक सभ भांगड़ा, वालिका सभ गिद्धा कृत्य करैत छथि। लोहड़ीक आसपास लोक एकट्ठा भए दुल्ला-भट्ठी प्रशंसामे गायन करैत छथि।

केतेको गोटेक मान्यता अछि जे ‘लोहड़ी’ शब्द लोई (संत कबीरक पत्नी) सँ उत्पन्न भेल मुदा अनेक लोक एकरा तिलोड़ीसँ उत्पन्न मानै छथि, जे बादमे लोहाड़ी भए गेल।

लोहड़ीक ऐतिहासिक सन्दर्भ सुन्दरी-मुंदरी नामक दूटा अनाथ कन्या छली। ओकर काका ओकर विवाह नहि करए चाहैत छल अपितु ओकरा राजाकेँ भेँट कए देबए चाहैत छल। ओही समयमे हुल्ला भट्टी नामक एकटा उफाँइट कन्याकेँ नीकठाम बिआह कए देलक। ओएह उफाँइट वरपक्षकेँ बिआहक हेतु मनाओलक आ जंगलमे आगि जरा कए दुनू कन्याँक बिआह करओलक। कहल जाइत अछि जे दुल्ला शगुनक रूपमे गुड़ देलक। भावार्थ जे उफाँइट होइतो दुल्ला भट्टी निर्धन वालिका सभक कन्याँदान केलक आ ओकरा अपन कक्काक अत्याचारसँ बँचओलक।

लोहड़ीक दिन बच्चा सभ दुल्ला भट्टीक सम्मानमे गीत गबैत घरे-घर घुमैत अछि। बच्चा सभकेँ मिठाइ आ अन्य वस्तु सभ दैत अछि। जँ कोनो परिवारमे कोनो खास अवसर जेना बच्चाक जन्म, विवाह आदि अछि तँ लोहड़ी आओर धूम-धामसँ मनाओल जाइत अछि। सरिसवक साग आ मकईक रोटी खास कए एहि अवसरपर बनाओल जाइत अछि।

तामिलनाडूमे एहि समय ‘पोंगल’ मनाओल जाइत अछि। प्रचूर मात्रामे अन्नक उपजापर भगवान सूर्यकेँ धन्यवाद ज्ञापन हेतु पावनिक आयोजन कएल जाइत अछि। तामिलनाडूक अलावा पुडुचेड़ी, श्रीलंका, विश्व भरिमे पसरल तमिल लोकनि एकरा मनबैत छथि। ओइ पोंगलमे चारि दिन तक–माने १४ सँ १६ जनवरी तक–मनाओल जाइत अछि।

इन्द्र देवताक सम्मानमे पहिल दिन भोगी उत्सव मनाओल जाइत अछि। पोंगल दोसर दिन माटिक वर्तनमे दूधमे चाउर पका कए खीर भगवान सूर्यकेँ आन-आन वस्तु संगे चढाओल जाइत

अछि। एहि अवसरपर घरक आगूमे कोलम (अपना ओइठामक अरिपन जकाँ) बनाओल जाइत अछि। पोंगलक तेसर दिन मट्टू पोंगल कहल जाइत अछि। एहि दिन गायकेँ नाना प्रकारसँ सजा कए ओकरा पोंगल खुआएल जाइत अछि। चारिम दिन कन्तुम पोंगल कहल जाइत अछि। घरक महिला सभ स्नानसँ पूर्व हरदिक पातपर मिठाइ, चाउर, कुसियार हरदि आदि राखि कए अपन भाय लोकनिक कल्याण कामना करैत छथि। भाइक हेतु हरदि, चून, चाउरक पानिसँ आरती करैत छथि आ ई पानि घरक आगूमे बनल कोलमपर छिड़कि देल जाइत अछि।

जल्लीकट्टू मट्टू पोंगल दिन पोंगल पर्वक एक हिस्साक रूपमे खेलल जाइत अछि। एहि लेल ग्रामीण सभ पहिनेसँ साँढ़केँ खुआ-पिआ कए तैयार केने रहैत छथि। एहिमे मूलत: केतेको गामक मन्दिरक साँढ़ (कोविल कालइ-तमिल नाम) भाग लैत अछि। जल्लीकट्टूक तीन अंग होइत अछि : वाटि मन्जू विराट्टू, वेली विराट्टू आ वाटम गन्जु विराट्टू। वाटि मन्जु विराट्टूमे साँढ़केँ जे व्यक्ति किछु दूरीपर किछु समय तक रोकि लैत छथि, से विजेता होइत छथि। वेली विराट्टूमे साँढ़केँ खाली मैदानमे छोड़ि देल जाइत अछि आ लोक ओकरा नियंत्रणमे करबाक प्रयास करैत अछि। वाटम मन्जुविराट्टूमे साँढ़केँ नमगर रस्सीसँ बान्हि देल जाइत अछि, आ खिलाड़ी सभ ओकरा नियंत्रित करबाक प्रयास करैत छथि।

सम्पूर्ण देश जकाँ मिथिलांचलमे सेहो मकर संक्रान्तिक पर्व मनाओल जाइत अछि। गाम-घरमे एकरा तिला संक्रांति सेहो कहल जाइत अछि। अंग्रेजी नया सालक ई पहिल पावनि होइत अछि। लोकक घरमे नव अन्न भेल रहैत अछि। पहिनहिसँ लोक चूड़ा कुटा

कए एहि पावनिक तैयारी केने रहैए। अपना एहिठाम माघ मासकेँ अत्यन्त पवित्र मास मानल जाइत अछि। बूढ़-बूढ़ महिला सभ भोरे-भोर जाड़-ठाढ़केँ बिसरैत पोखरिमे डुबकी लगबै छथि। गाममे कएटा मसोमात, वृद्धा सभकेँ थर-थर कँपैत स्नान करैत देखैत छलिएनि। सभसँ मनोरंजक दृश्य तँ तखन होइत छल, जखन ओ सभ महादेवक माथपर जल ढाड़ैत काल गाम-घरक सभटा झगड़ा सोझराबएमे लागल रहैत छली। जानह हे महादेव! हमरा पेटमे किछु नहि अछि। हमर मोन गंगासन निर्मल अछि मुदा एहन अत्याचारक निपटान तूँहीं करियह।

..पता नहि, महादेव सुनितो छलखिन की नहि। मुदा हमरा ई सभ सुनि कए जरूर बकोर लागल रहैत छल।

बच्चामे पावनि सभ अद्भुत आनन्दक विषय रहैत छल। सभसँ सरल ओ आनन्ददायी होइत छल तिला संक्रांति। भोरे-भोर पोखरिमे जा कए डुबकी लगाउ। माइक हाथे तिल-चाउर खाउ। तिल-चाउर खुअबति काल माए पुछथि-

“तिले-तिले बहब की नहि?”

ताहिपर कहिअनि-

“खूब बहब।”

विध समाप्त। तकरबाद चुरलाइ, तिलबा इत्यादि भरि मोन खाउ...।

कएक दिन पहिनहिसँ चुरलाइ, तिलबा (तिललाइ) आ लाइ (मुरहीक लाइ) बनेबाक कार्यक्रम प्रारंभ भए जाइत छल। घरक वातावरण चुरलाइक सुगन्धसँ परिपूर्ण। एहि पावनिमे सभसँ

विशेषता ई अछि पावनिक सामग्री बनि गेल तँ ओकरा लेल बेसी प्रतीक्षा नहि करए पड़ैत अछि। दिनमे व्राह्मण भोजन होइत छल। व्राह्मण केओ आसे-पासक लोक होइत छलाह, कारण भरि गाममे भोजे रहैत छल। बट्टा भरि-भरि घी खिचड़िमे देल जाइत। संगे तरह-तरह केर पकवान सभ सेहो रहैत छल।

हमरा गाममे किछु गोटे ओहिठाम तिला संक्रान्तिमे जिलेबी बनैत छल। भोजमे खिचड़िक संग जिलेबी खेबाक बच्चा सभकेँ अद्भुत उत्साह रहैत छल। खिचड़िमे ततेक प्रचूर मात्रामे घी रहैत छल जे भोजनक बाद हाथ साफ-साफ धोनाइ कठिन। पावनिक कएक दिन बादो धरि चुरलाइ आ तिलबाक आनन्द भेटैत रहैत छल।

एहि पावनिमे चूड़ा, दही, खेबाक सेहो परंपरा अछि। चूरा-दहीक वर्णन करैत खट्टर कका कहलखिन जे जखन पातपर चूड़ाक संग आम, धात्रीक अँचार ओ तरकारी परसल जाइत अछि तँ बुझू जे अन्हरिया आबि गेल। तकर बाद जखन दही परसाएल तँ बुझू जे इजोरिया। जेना पातपर चन्द्रमा उतरि गेलाह। ऊपरसँ जँ मधुर राखि देल जाए ओ कौर पेटमे गेल तँ पुछू नहि। पुरा सोनित ठण्ढा जाइत अछि आ आत्मा तृप्त भए जाइत अछि।

मिथिलांचलमे एहि पर्वकेँ मनेबाक अद्भुत परंपरा अछि। चुरलाइ खाउ, चुरा-दही खाउ, खिचड़ि खाउ, जे खाउ, जखन खाउ...।

वस्तुत: ई आनन्दक पर्व थिक जे कोनो-ने-कोनो रूपे सम्पूर्ण भारतवर्षमे मनाओल जाइत अछि। सूर्यक तेजक मकर संक्रान्तिसँ जहिना बढ़ैत रहैत अछि, तहिना सभ लोक-वेदक सुख बढ़ैत रहए, सएह एहि पावनिक ध्येय थिक। ❑

ई समय ककरो नहि

हम श्यामा भगवतीक दर्शनक हेतु गेल रही। महाराजा रामेश्वरक चितापर बनल ओहि भव्य मन्दिरक अद्भुत सौन्दर्य अछि। टुह-टुह सिंदुरिआ रंगमे रंगल मन्दिरक दहिना कात पोखरि अछि जकर जमकल पानिमे हाथ देलासँ स्वच्छता बढ़क बदला घटि सकैत अछि। मोन पड़ि गेल जे जखन सी.एम. कालेज दरभंगामे विद्यार्थी रही तँ एठि ठाम आबी, भगवतीक दर्शनक बाद पोखरिक घाटपर बैसल करी। ओहि समय पोखरिक स्थिति बेहतर छल।

श्यामा मन्दिरमे माँकालीक भव्य मूर्ति ओहिना चमकैत, दमकैत छल। भक्तगणक श्रद्धा ओहिना वा कि पहिनहुँसँ बेसी बुझाइत छल। मन्दिरमे कैक ठाम भक्तसभ पूजा पाठमे तल्लीन छलाह।

“मिथिलेश रमेशस्य चितायं सुप्रतिष्ठित। श्यामा रमेश्वरीपातु रमेश्वर कुलोद्रवान्।”

मन्दिरक मुख्य द्वारिपर लिखल उपरोक्त श्लोक कतेक बेर पढ़ैत रहलहुँ।

श्यामा मन्दिरक बाहर आ अंदरमे प्रसादक विक्रय होइत अछि। अन्दरेमे प्रसाद किनलहुँ। भगबतीकेँ प्रसाद चढ़ओलाक बाद कनीकाल ओतहि बैसि गेलहुँ। कनी कालक बाद बाहर भेलापर चिंता भेल जे प्रसादकेँ बानरसँ कोना बचाबी कारण एकबेर एहिना प्रसाद चढ़ाकए निकलल रही कि एकटा बूढ़बा बानर कहाँसँ दौरल आएल आ प्रसाद लुटि लेलक। हम अबाक देखैत रहि गेल रही। अस्तु, प्रसादकेँ अंगाक अंदर कहुना कए नुकौलहुँ। बाहर

आगू बढ़लापर चारूकात कोनो-ने-कोनो महराजक चितापर बनल मन्दिर सभकेँ देखैत मोनमे दरभंगा महराजक अकूत संपत्ति आ ओकर अपव्ययपर ध्यान हठात चलि जाएब कोनो भारी बात नहि। जँ एहि धनक उपयोग एतेक रास मन्दिरक बजाए जनताक कल्याणमे खर्च कएल जाइत तँ लोक समृद्ध होइत, आ महाराजो यशस्वी होइतथि। मुदा जे हेबाक छल से भेल। महराजक राज चलि गेल। बड़का-बड़का देबाल सभ ढहि गेल। राजक हाताक अन्दरक जमीन सभ बिका गेल। आब ओहिठाम होटल अछि, दोकान अछि, सामान्य व्यक्ति सभक घर अछि। ने ओ रामा ने ओ खटोला। महाराजाक गौरब-गरिमाक बखान करए हेतु ढहैत, ढनमनाइत राज परिसरक दुर्दशा अन्तहीन भए गेल अछि।

श्यामा मन्दिरक आस-पास बनल आओर मन्दिर सभ कतेको बेर गेल छी। तें रिक्सा पकड़ि सोझे शुभंकरपुर बिदा भए गेल रही। मोनमे होइत छल जे जँ महराज वा हुनकर सलाहकारक जन कल्याणमे कनिको रूचि रहैत तँ आइ मिथिलाक लोकक भविष्ये किछु आओर होइत।

काली मन्दिरसँ आगा बढ़लापर मिथिला विश्वविद्यालयक विशालकाय परिसर आएल। दरभंगा महराजक ओहि महल सभकेँ सरकार अधिग्रहण कए ओहिमे विश्वविद्यालय स्थापित कए देलक। महराजक राज-पाट नाम सभ चलि गेल। एतबो नहि भेल जे ओहि विश्वविद्यालयक नाममे महराजक नाम रहैत। मुदा भावी प्रवल। समय बलबान होइत अछि।

“जो उग्या सो अन्तवे, फूल्या सो कुमलाही
जो चिनिया सो ढही पड़े, जो आया सो जाही।”

कबीरदासक उपरोक्त कथन ध्यानमे आबि रहल छल। संसारक नियम अछि जेकर उदय भेल तकर अस्त होएत। समय रहिते जे किछु कए गेल ओएह रहि जाइत अछि।

विश्वविद्यालयक दहिनाकात बदरंग भेल इन्द्रपूजा स्थली आ तकर सामने बड़ीटा खाली मैदान- बिना कोनो देखरेखकें। आश्चर्यक बात थिक जे एहि ऐतिहासिक, सांसकृतिक धरोहरक रखररखावक उचित व्यवस्था किएक नहि भए रहल अछि?

कनीक आगा बढ़ब तँ बड़का-बड़का देबाल जे महाराजा सभ बना गेलाह, ओहिमे यत्र-तत्र गाछ सभ जनमि रहल अछि। देबालक बीचमे बनल हनुमानजीक मूर्तिकेँ लोक सभ पूजा करैत देखाइत। आश्चर्यक बात ई थिक जे बिना कोनो देखरेखकेँ एतेक पुरान देबाल सभ अखनो ठाढ़ कोना अछि?

श्यामा मन्दिरसँ शुभंकरपुर लौटबाक क्रममे महराजी पूलसँ पहिने जाम लागि गेल छल। रिक्सा आगू नहि बढ़ि सकैत छल। संगहि साइकल, स्कूटर, ठेला, पैदलयात्री, कार आ पैदलयात्री तेना ने लदमलद भए गेलाह जे कनी काल लेल भेलैक जे आब एतहिसँ वापस होमए पड़त। पैरे जेबाक सेहो जगह नहि बाँचल छल। चुप-चाप रिक्सा पर बैसल रहि जेबाक अतिरिक्त किछु विकल्प नहि छल।

जाबत ओहि जामकेँ हटि जेबाक प्रतीक्षा करैत रही ताबतेमे किछु गोटे “राम नाम सत्य है, सबका यही गत्त है” बजैत एकटा मृतककेँ कान्हपर उठओने ओतहि आबि कए अटकि गेलाह। हुनका पाछा- पाछा कतेको लोक चलि रहल छलाह जे मृतकक अन्तिम संस्कारक हेतु ओएह सभ बजैत चलि रहल छलाह।

कहुना कए कनीक जाम खुजलैक। उसास पबिते अन्तिम

यात्रापर निकलल ओहि मृतक आ तकरा कान्ह देनिहार सभकेँ लोक सभ आगा जाए देलक। महराजी पूल पार करैत ओ सभ आगा बढ़ि गेलाह। हम ताधरि रिक्सेपर ठामहि प्रतीक्षा करैत रही जे आब लोक आगा बढ़त तँ ताब।

कनीके कालक बाद फेर ओएह ध्वनि। "राम नाम सत्य है, सबका यही गत्त है... ।"

किछु गोटे मृतककेँ कान्ह देने छलाह। आगा आगा गोरहाक सुनगैत आगि, कोहा लेने कर्त्ता आ तकर पाछा-पाछा मृतकक महायात्राक गवाह सभ राम नामक महिमा गबैत आगा बढ़ि नहि सकबाक कारणें ओहिठाम ठमकि गेल रहथि। हम रिक्सापर रही आ ठीक हमरा सामानान्तरमे पीताम्बरीसँ आवृत, गेनाक फूलसँ लादल ओहि मृतकक निष्प्राण शरीर छल। ओहि दिवंगत आत्माकेँ मोने-मोन प्रणाम कएल। किछु-किछु सोचाए लागल। मोन कनी एमहर-ओमहर भेल। ताबे जाम कनी ढील भेलैक। ओ सभ राम नाम सत्य है, सबका यही गत्त है, बजैत आगा बढ़ि गेल। आ हम रिक्सासँ महराजी पुलपर चढ़ि गेलहुँ।

कनीके आगा पुलपर रिक्सा चढ़ले छल कि फेर ओएह ध्वनि। राम नाम सत्त है, सबका यही गत्त है। किछु गोटे एकटा मृतकक शवयात्राक संगे राम नामक महिमा गबैत आगा बढ़ि रहल छलाह। मृतकक फूलक मालासँ लादल चारि गोटेक कान्हापर आगा बढ़ि गेल। अगल-बगल कतेको लोक मूकदर्शक छलाह जेना कोनो खास बात नहि भेल हो। तरकारी वाली तरकारी बेचि रहल छल। माछक दोकानपर ओहिना माछक खण्ड बिका रहल छल। कोन पर चाहक दोकानपर लोक चाह पीबि रहल छलाह। कतहु

कोनो प्रकारक आलाप, प्रलाप नहि। रिक्साबला गप्पक क्रममे कहलक जे एहिठाम तँ नित्य एहने दृश्य रहैत अछि। आगा बनल श्मशान घाटमे ओकर दाह संस्कार होइत अछि।

संभवत: मृत व्यक्ति सभ वृद्ध छलाह जाहिसँ वातावरणमे, संगे कटिहारी गेनिहार लोकोमे कोनो भाव विह्लता देखबामे नहि आएल।

ओहि दिन साँझमे ओही सड़क बाटे फेर जेबाक अवसर भेटल। हम सभ बरिआती जा रहल छलहुँ। महराजीपुलसँ पहिने जाम लागि गेल छल। लोक ठसाठस भरल छल। हमरा आगा पाछा दोसर बिआहक बरिआती छल। लोककेँ आगू पाछू घसकबाक रस्ता नहि भेटि रहल छल। सजल- धजल बरक कार ठामहि छल कि आगूसँ अबैत कोनो दोसर गाड़ी पों-पोंक आबाज करए लागल। के आगा बढ़त, के पाछा जाएत, कोनो ठेकान नहि। आधा घण्टा धरि ई स्थिति बनल रहल। फेर केना-ने-केना रस्ता खुजल। लोकसभ आगा बढ़ल। हम अपन कारमे आगा बढ़लहुँ। शेष बरिआती, बर पाछा छुटि गेल छल, तथापि ओहिठाम ठाढ़ भाए प्रतीक्षा करब उचित नहि छल। एक्के दिनमे एकहिठामसँ तरह तरहक दृश्य गुजरि गेल छल। राम नाम सत्य है'सँ लए शहनाइक धूनपर नचैत गबैत जाममे थकमकाएल बरियातीक धमाचौकरी देखएमे आबि रहल छल। मुदा ओही स्थानक चारूकात बैसल, ठाढ़ लोक सभ हेतु धनि सन। ने हर्षो न च विष्मय :।

असलमे कोनो घटना विशेष अपने आपमे ताधरि कोनो माने नहि रखैत अछि जाधरि हम ओहिसँ कोनो- ने-कोनो कारणसँ जुड़ि जाइत छी। तात्पर्य ई जे कोन वस्तु हमरा कष्ट देत आ ककरासँ सुख होएत ओ पूर्णत: ओहि वस्तु विशेष वा घटना विशेषक प्रति हमर

रूखिपर नर्भर करैत अछि। अस्तु, एकहि दिनमे श्यामा मन्दिरसँ शुभंकरपुरक मध्य कतेको तरहक दृश्य देखबामे आएल। कतेको पुरान घटना सभ स्मृति पटलपर फेरसँ उगि आएल। ई समय ककरो नहि अछि। दरभंगा महराजक नहि अछि, आम आदमीक नहि अछि। मोन हो कठिआरी जाउ, मोन हो बरियाती भए जाउ। मुदा समय ठाढ़ नहि रहत। भोर साँझमे बदलि जाएत। छोड़ि जाएत मोनक कोनो कनतोसमे एकटा आओर निसान जे दिन भरिक घटनाक क्रम देने गेल। काल्हि फेर प्रात:काल ओहिना सूर्य उगताह, दिन भरि किछु-ने-किछु होइत रहत, साँझ होएत। सभटा होएत, मुदा हमर अहाँक जिनगीक एकटा आओर दिन कम भए जाएत। समयकेँ की हेतै? ओ तँ एहिना आगू चलैत जाएत। गुजरि जाएब हम ओहिना जेना कतेको गुजरि गेलाह आ लोक राम नाम सत्य है..., कहैत महराजीपूलक एहि पारसँ ओहि पार भए जाएत। ❑

२/११/२०१७

एकोहं द्वितीयो नास्ति

जीवनमे बहुत रास अनुभव होइत रहैत अछि। नित्य किछु-ने-किछु एहन घटना घटित होइत अछि जे हमर आँखि खोलि सकैत अछि मुदा से होइत कहाँ अछि? हमसभ नियतिवश चलिते जा रहल छी, सोचि नहि पबैत छी जे हम एना किएक कए रहल छी? ई बात प्रायः सभ जनैत अछि, जे जन्मल अछि से मरत। मृत्यु अवश्यंभावी अछि, तथापि हमसभ सोचैत रहैत छी जे हम तँ अहिना रहब। युधिष्ठिर द्वारा यक्षकेँ देल गेल एहने प्रश्नक उत्तर एखनो ओहिना सार्थक अछि जहिना ताहि समयमे रहल होएत। आखिर एना कोना होइत अछि जे हम सद्यः घटित होइत घटनाक प्रति अनजान बनल रहि जाइत छी आओर एकदिन सभ किछु एतहि छोड़ि कए सभदिनक हेतु एहि दुनिआसँ आँखि मुनि लैत छी।

आखिर किछु तँ छैक जे मनुक्ख मात्रकेँ निरंतर ओझरौने रहैत अछि। हम निरंतर अपन आस्तित्वक रक्षाक हेतु संघर्षशील रहैत छी। हम जे कहैत छी से लोक मानए, हमर महत्व बुझए आ हमर श्रेष्ठत्वकेँ स्वीकार करए। एहिसभक पाछा हमर घमंड प्रमुखतासँ मुखरित होइत रहैत अछि। जीवनसँ लए कए मृत्यु पर्यंत हमरा लोकनिक व्यवहारकेँ पाछा ई तत्व विद्यमान रहैत अछि। हम जाने-अनजाने दोसरसँ अपनाकेँ श्रेष्ठ साबित करबाक फेरमे पड़ि अपन जीवनकेँ तँ अशांत केनहि रहैत छी, संगहि दोसरोकेँ तंग कए दैत छी कारण एहन स्वार्थमूलक सोचसँ व्यक्तिक अहंमे टकराव उतपन्न होइत अछि आओर लोक अपनाकेँ पैघ देखेबाक प्रयासमे

दोसरकेँ छोट साबित करए लगैत अछि। परिणाम होइत अछि, व्यर्थक अनवरत चलैत अन्तरद्वंद।

मान-सम्मान, प्रतिष्ठाक लिप्सा मनुक्ख मात्रमे ततेक बलबती रहैत अछि जे ओ कोनो हालातमे ताहि हेतु किछु करए हेतु तैयार रहैत अछि। लोक हमरा बुझए, मान्यता दिअए, हम समाजमे देखगर लोकमे गनल जाइ, एहि समस्त भावनाक पाछा जँ देखल जाए तँ ओकर घमंडे काज करैत रहैत अछि। एहन घटना नित्य-प्रति देखएमे अबैत अछि जे कतेको गोटे बेबजह अनकर मामलामे टांग अरबैत रहताह। जेना कि ओ चैनसँ रहिए नहि सकैत छथि। एहन आदमी हेतु इहो कहल जा सकैत अछि जे ओ अपन चालिसँ लाचार छथि। कोनो, ककरो बात उठल कि ओ अपनाकेँ ओहि बीचमे ठाढ़ कए देताह। तरह-तरहक ब्यर्थ उदाहरण दैत रहताह जाहिसँ ई कहुना सिद्ध होउक जे हुनकेटा सभबातकेँ बुझए अबैत छनि किंबा ओ जे कहैत छथि सैह व्रह्मसत्य थिक। एहन आदमीकेँ अहाँ की कहबैक? “एकोहं द्वितीयो नास्ति” -एहि तरहक सोच कोना कारगर भए सकैत अछि?

हमर गाममे एकबेर श्राद्ध भोज होइत रहए। एकटा प्रतिष्ठित व्यक्तिक देहावसान भए गेल छल। अपना जीवन कालमे ओ खूब संपत्ति अर्जित कएलाह। बहुत संघर्ष कए आगा बढ़लाह। तखन तँ मृत्यु सभक होइत अछि से हुनको भए गेलनि। अपने जीवनमे लीखसँ लाख करबाक पुरषार्थ हुनकामे भगवान देलखिन। मृत्युक बाद लोकसभक आग्रह जे जबार होउक, एतेक संपत्ति अरजि कए गेल छथि। मुदा से तँ नहि भेलैक, गामे लए कए भोज हेबाक निश्चय भेलैक। संयोगसँ हमहूँ हालेमे सेवानिवृत्त भेल रही आ गामे पर रही। भोज खेबाक हेतु गेलहुँ तँ देखैत छी एकटा हमर ग्रामीण, जे

भरि जिनगी बाहर कमाइत रहलाह, घरक दरबाजाकेँ गछारि कए ठार भेल छथि, गरजि रहल छथि, बारंबार चेता रहल छथि जे एक-एक कए लोक अन्दर जाथि। हुनकर चिकरब-भोकरब ततेक प्रखर चल जे अनेरे ककरो ध्यान हुनका पर पड़ि जाइत छल। एहि तरहें हुनका अपन महत्वक प्रदर्शन करबाक आ ताहिसँ संतुष्टिबोध प्राप्त करबाक पर्याप्त अवसर भेटलनि। जँ ओ नहि चिकरितथि, किंवा घरक केबार धए ठाढ़ नहि रहितथि, लोक अपने अबैत जाइत, तैओ भोज भए जैतैक, प्रायः बेसी नीकसँ होइतैक कारण ओ तँ अनेरे केबारकेँ पकड़ि चिकरि कए माहौलकेँ गड़बड़ा रहल छलाह, मुदा हुनका तँ देखेबाक रहनि जे ओ एतेक महत्वपूर्ण व्यक्ति छथि, सभकेँ कस्तन कए रहल छथि, हुनके आज्ञासँ लोक भोज खाए अन्दर जाएत नहि तँ ओतए बबाल भए जाएत। बिचारि कए देखबैक तँ एकरा व्यक्ति विशेषक घमंडक अतिरिक्त किछु आओर नहि कहल जा सकैत अछि।

की पैघ, की छोट सभ केओ कतहुँ-ने-कतहुँ, कहुना-ने-कहुना घमंडक चपेटमे पड़िए जाइत छथि। शास्त्र-पुराणसभमे सेहो कतेको एहन प्रसंगक वर्णन अछि जाहिमे एक सँ एक संत महात्मा, देवी-देवता एकर प्रकोपमे पड़ि गेलाह। महाभारतमे एहि सम्बन्धमे बहुत मार्मिक घटनाक वर्णन अछि। एकबेर हनुमान बूढ़ बानरक रूपमे भीमके रस्तामे बैसि गेलाह। भीम हुनका अपन नाङरि हटेबाक हेतु कहलखिन कारण हुनका जल्दी जेबाक रहनि मुदा ओ बानर टस सँ मस नहि भेल, उल्टे व्यंग करैत कहलकनि जे जखन अहाँ एतेक बलवान थिकहुँ तँ नान्हिटा हमर नाङरिकेँ उठाए किएक नहि आगू बढ़ि जाइत छी? भीमकेँ ई बात बहुत अनर्गल बुझेलनि आओर ओ ओहि बूढ़ बानरक नाङरिकेँ हटबएमे लागि गेलाह, सभ प्रयत्न कए थाकि गेलाह मुदा नाङरि ठामहि रहल। हारि कए भीम

कहलखिन जे अहाँ साधारण बानर नहि छी, के छी से सत-सत बाजू। तखन हनुमानजी अपन भेद खोलि कहलखिन जे हम आहीँक भाए हनुमान छी। भीम बहुत लज्जित भेलाह आ हुनकासँ घट्टी मानलथि। एहि तरहेँ हनुमानजी हुनकर घमंडकेँ चकना चूर केलाह। कहक माने जे घमंड एकटा एहन व्याधि थिक जे अनेरे हमरा लोकनिक आँखिपर पट्टी लगा दैत अछि आ हम सत्यकेँ देखितहुँ ओकरासँ फराक रहि जाइत छी।

घमंड किंवा अहं केर टकरावसँ कतेको लोकनिक पारिवारिक जीवन नर्क भए जाइत अछि। हम ककरासँ कम? हमरा ई कहलक, ओ कहलक, हम ओकर बात किएक सहबैक, एहने-एहने छोट-छोट बातकेँ पकड़ि कए लोक धए लैत छथि जाहिसँ आपसी प्रेम ओ विश्वास नष्ट भए जाइत अछि, बात ततेक बढ़ि जाइत अछि जे सम्बन्ध विच्छेद धरि भए जाइत अछि। यदि एहन समयमे केओ बुझनिक होथि, एक डेग पाछा भए जाथि, हारि मानि लेथि तँ बहुत रास परिवार खंडित हेबासँ बँचि सकैत अछि, बहुत रास धीया-पुताकेँ पारिवारिक आश्रय बनल रहि जाएत आ परिवारमे समन्वय, शान्ति बनल रहत। मुदा ई बात बुझब आ बुझिओ कए व्यवहारमे आनब कैक बेर बहुत मोसकिल भए जाइत अछि कारण केओ अपन अहंकेँ छोड़बाक हेतु तैयारे नहि होइत अछि। परिणाम सामने अछि। नान्हिटा टेल्हकेँ माए-बापक बीच कलहक दृश्य देखए पड़ैत छैक। बच्चासभ घरक वातावरणसँ तंग भए घरसँ भागल-भागल रहए लगैत अछि आ गलत संगतिमे पड़ि कए कैक बेर नसेड़ी भए जाइत अछि। सोचए बला बात अछि जे माए-बापक व्यर्थक अहंक कारण एहन वच्चाक भविष्यक संगे कतेक अन्याय होइत अछि?

एहन नहि अछि जे कमे पढ़ल-लिखल लोक घमंडक प्रदर्शन करैत छथि अपितु एक सँ एक विद्वान ओ पैघ-पैघ लोकमे एकर व्यापक प्रभाव देखएमे अबैत अछि। जे जतेक पैघ तकर घमंड ततेक विनासकारी भए सकैत अछि। इराकक राष्ट्रपति सद्दाम ओ अमेरिकाक राष्ट्रपति बुशकेँ बीच जे एतेक भारी युद्ध भेल तकर पाछु की छल? महज अहंक टकराव? जहिना गाम-घरमे मूर्ख लड़ैत अछि तहिना ओ सभ आपसमे ताधरि लड़ैत रहलाह जाधरि सद्दामक विनाश एहि हदधरि नहि भए गेल जे ओ अपन प्राणोसँ हाथ धोलक। बादमे पता चलल जे ओकरा लगमे कोनो रासायनिक हथियार नहि छल जकरा आधार बनाए इराकपर अमेरिका आक्रमण केलक।

कार्यालयमे अधिकारी लोकनि कए बेर अहं पर चोट पड़लापर अधीनस्त कर्मचारीकेँ तबाह करबाक कोनो ब्योंत बाम नहि जाए दैत छथि। बदली कएदेब.काजसँ हटा देब आ ताहुसभसँ संतोष नहि भेलनि तँ नौकरीसँ मुअत्तल कए देब सामान्य बात थिक। जे ततेक पैघ अधिकारी तिनक अहंसँ ततेक बेसी सावधान रहब जरुरी थिक। काज करी वा नहि करी मुदा हुनकर सलामीमे कोनो कमी नहि हेबाक चाही। जँ से भेल तँ अहाँक भगवाने मालिक।

असलमे घमंडी व्यक्ति भीतरसँ असंतुष्ट होइत छथि। हुनका लगैत रहैत छनि जेना सौंसे दुनिआ हुनका पाछा पड़ल अछि, जेना केओ हुनका संगे न्याय नहि कए रहल अछि, एहि तरहक फिजुल बातसभ हुनकर मोनमे बैसल रहैत अछि जाहि कारणसभ हुनकर व्यवहार स्वयं असंतुलित भए जाइत अछि किंवा लोकसँ बहुत बेसीक अपेक्षा रखैत अछि। परिणाम ई होइत अछि जे ओ बात-

बात पर लोक सभसँ मरए-कटए हेतु तैयार रहैत छथि। सोचबाक बात थिक जे एहन लोककेँ शान्ति कतएसँ भेटि सकैत अछि आ "अशांतस्य कुतो सुखम्?" एहि तरहक अशांत प्रवृतिक लोकमे घमंड भरल रहैत अछि। जाहिर अछि जे एहन लोक आस-पासकेँ लोककेँ तरह-तरहसँ कष्ट पहुँचबैत छथि। अपने तँ दुख कटिते छथि दोसरोक जीवनकेँ नर्क कए दैत छथि।

घमंड कतेको कारणसँ भए सकैत अछि आ कए बेर तँ बिना कोनो औचित्यकेँ स्वभाववश सेहो लोक घमंडी भए जाइत अछि। एहन उदाहरण अहाँकेँ कतेकोठाम देखबामे आएत। हमरा गाममे एकटा भीखमंगा कहिओ काल अबैत छलाह। यद्यपि ओ भीख चाहैत छलाह मुदा हुनक बाजबाक चहटिसँ केओ नहि कहैत जे ओ भीखमंगा थिकाह। असलमे ओ पहिने बहुत धनीक छलाह मुदा कालक्रमे गरीब भए गेलाह। जमीन-जायदाद बिका गेलनि। कहबी छैक जे जौर जरि गेल मुदा एंठन अछिए। सैह गप्प छलैक।

महाभारतमे खिस्सा अछि जे द्रोपदीकेँ अपन सौंदर्यपर बहत घमंड रहनि आओर गाहे-बगाहे ओ एहि कारणसँ कतेको शत्रु बना लेलीह। परिणामसभकेँ बुझल अछि। मामला द्रोपदी चीर हरणधरि पहुँचि गेल। की-की तमाशा ने भेल। भयानक युद्ध भेल आओर समस्त परिवार विनाशकेँ सीमानधरि पहुँचि गेल। कहक माने जे घमंड चाहे जिनका होनि, आओर जाहि कोनो कारणसँ होनि, एकर परिणाम खराबे होइत अछि।

घमंड एकटा मानसिक रोग थिक जे मनुक्खकेँ सत्यक दर्शन करएसँ ओहिना रोकि दैत अछि जेना सीसीमे कोनो वस्तुकेँ पैसबासँ ठेपी। घमंडी व्यक्ति एक हिसाबे आन्हर होइत अछि जे मदांध भए सही विचारकेँ कदापि नहि सुनैत छथि। एहने मानसिकता रावणकेँ

रहैक जाहि कारणसँ घरहंज भए गेलैक, सभ किछु नष्ट भए गेलैक। मेघनाद सन बीर ओ तेजस्वी संतानसँ हाथ धोअए पड़लैक, कुंभकरण सन भातृभक्त भाए मारल गेलैक, विभीषण घर छोड़ि भागि गेलाह। सभ ओकरा बुझबैत रहलैक, एहि हद धरि जे मंदोदरीक कथन धरिकैं ओ सौतिआ डाह कहि अपमानित केलक। परिणाम सभकैं बुझल अछि। अस्तु, घमंड सर्वथा त्याज्य थिक।

जँ बिचारि कए देखल जाए तँ एहि दुनिआमे कोनो तरहें पार पाएब आसान नहि अछि। पढ़ले देखू तँ एक सँ एक विद्वान छथि। आइन्सटाइन, सेक्सपीयर, कालीदास, राधाकृष्नन, कतेको नाम अछि, ककर नाम लेब, ककर छोड़ब, पन्नाक पन्ना भरि जाएत। धनिकमे गिनती करब तँ गनिते रहि जाएब। एहिना पद, सौंदर्य, वुद्धि सभ तरहें एकसँ एक लोक एहि संसारमे भेलाह आओर छथिहो। तखनो जँ केओ कथुक घमंड करैत छथि तँ की करबै? हँसबे करबै ने? अस्तु, विनम्र होएब सभसँ नीक ऐश्वर्य अछि जे सही कही तँ भाग्यवाने लगमे होइत अछि।

बरसहि जलद भूमि निअराए, नबहि यथा बुध विद्या पाए।

विनम्रता विद्वताक परिचायक थिक। जरुरी अछि जे सही ज्ञान प्राप्त कए स्वभावमे विनम्रताकैं आनल जाए आओर घमंडसँ मुक्ति पाओल जाए, जाहिसँ जीवन सुखमय होएत। ❑

जीवनमे सभ किछु भेटलाक बादो कखनहुँ काल लोकक मोन होइत रहैत अछि जे कोनो एहन ठाम चली जाहिसँ मोन निचेन भए जाए, सभ किछु बिसरि किछु दिन शान्ति सँ बिताबी आ झंझटिसभकेँ कात कए दी। कखनो-कखनो चिज वस्तुसभ व्यर्थ लागए लगैत छैक, होइत छैक जे कहुना ओहिसभसँ पिंड छोड़ाबी किंवा किछु एहन कए ली जे निश्चिंत रही। से किएक होइत छैक?

सभदिन हमसभ अपन धीया-पुताक सुख-सुबिधाक हेतु काज करैत रहैत छी। समाजमे, अपन लोक-बेदक बीचमे मान-सम्मान हो, हमरा श्रेष्ठ बुझल जाए, अनकासँ हम सेसर रही, एही लफड़ा सभमे जीवनक मूल्यवान समय चलि जाइत अछि आ अन्तमे हाथ अबैत अछि फोकला। मनुक्खक मोहवंधन ततेक मजगूत होइत अछि जे ओ अन्त-अन्त धरि ओकरे फाँसमे फँसल मेहिआ बड़द जकाँ बहैत रहि जाइत अछि आओर एकदिन मुट्ठी बन्हने एहि दुनिआसँ प्रस्थान कए दैत अछि। सभ किछु ठामहिँ रहि जाइत अछि।केओ एकर अपवाद नहि रहैत अछि।

आया है सो जाएगा, राजा-रंक फकीर।

एक सिंघासन चढ़ि चले, एक बंधे जंजीर।।

एकबेर एकटा महिलाकेँ लकबा मारि देलकै। ओ अस्पतालमे भर्ती रहथि। बाजल नहि होनि। कैक दिनक प्रयासक बाद हुनका कनी-मनी होस भेल। कहुनाक मुँहसँ आवाज फुटलैक। होस होइतहि पहिल बात ओ इएह बाजल जे सूदि वसूलल गेल कि नहि? सोचियौ, जे टाकासँ केहन मोह छलैक ओकरा! जान जाए पर छलैक, अस्पतालक आपत्तिकालीन विभागमे भर्ती छल, हैथ-पैर

सुन्न भेल छलैक, मोसकिलसँ कहुनाक आवाज फुटलैक तँ सभसँ पहिने की बाजल? इएह थिक माया। ई जनितो जे सभटा एतहिँ रहि जाएत, लोक अन्त-अन्त धरि टाका बटोरबामे, लूट-खसोटमे लागल रहैत अछि। तखन शान्ति कतएसँ होएत?

एकटा राजाक महल लग एकटा लोहार दिन-राति खट-खट करैत रहल छल। राजा एहि बातसँ तंग भए गेलाह। कोनो उपायसँ चाहथि जे एहि खट-खटीकेँ बंद कराबी। एक दिन ओ ओहि लोहारकेँ बजओलथि।लोहार डरा गेल। ओकरा नहि बूझएमे अबैक जे ओकरासँ कोन अपराध भेल जे ओकरा राजा बजा रहल छथि। खैर! ओ राजासँ भेँट करए पहुँचल।

ओकरा देखिते राजा कहलखिन जे तोरा जतेक टाका चाही से लए लएह मुदा ई खटर-पटर बंद करह। राजाक बात काटत के? ओ राजासँ यथेष्ट टाका लेलक आ ओहि दिनसँ अपन काज केनाइ बंद कए देलक। काज बंद तँ कए देलक मुदा ओकरा तहिआसँ निन्नें नहि होइक। की करए? कतेको राति करोट बदलैत बीति गेलैक। एहिसँ ओ ततेक तंग भए गेल जे होइक जे जान चलि जाएत। हारि कए ओ राजाक ओतए दौड़ल गेल आ जे टाका लेने छल से वापस कए प्रार्थना करए लागल जे ओकरा अपन काज फेरसँ शुरु करबाक आज्ञा देल जाइक। राजा छगुंतामे पड़ि गेलाह। पुछलखिन जे बात की थिक, ओ किएक टाका वापस कए रहल अछि? लोहार कहलकैक- "सरकार! जहिआसँ काज छोड़लहुँ, हमर सुख चैन हरा गेल। हमरा माफ कएल जाए, हम अपन पहिलका जीवन जीबए चाहैत छी। ओहीसँ हमरा शान्ति भए सकैत अछि।" राजा ओकर समस्या बूझि गेलाह आ ओकर बात मानि लेलाह। तकर प्रातेसँ ओ लोहार अपन काज शुरु केलक। ओहि राति ओ बहुत चैनसँ सुतल।

फेरसँ ओएह ठक-ठकी सुनि कए राजा बहुत जोरसँ हँसलाह। ई कथा बहुत लोककेँ बूझले होएत, मुदा एहिमे बहुत गंभीर शिक्षा भरल अछि। धन-संपत्तिसँ सुख चैन नहि भेटि सकैत अछि। लोभ-लालचसँ नहि, अनकर हक मारि लेलासँ नहि अपितु परिश्रमपूर्वक उपार्जित धनसँ जीवन-यापन केनेसँ मोनमे शान्ति भेटि सकैत अछि।

समस्या अछि जे लोकसभ सभ किछु बूझितो एतेक परेसान किएक रहैत अछि जखन कि केओ से चाहैत नहि अछि? कारण सहजे ताकल जा सकैत अछि। अधिकांश व्यक्ति अनकर सुखसँ दुखी रहैत छथि। ओ किएक बढ़ि रहल अछि, ओकर मकान हमरासँ पैघ किएक छैक, ओकर बच्चा कतहुँ पढ़लकैक अछि, ओ सभतँ सभ दिन हमरासभसँ दव रहल आब कतएसँ पैघ भए जाएत? एहीठाम हम मारि खाइत छी। जँ हम सकारात्मक सोच-बिचार राखी, अनको उपलब्धिसँ प्रसन्न हेबाक भाव राखी तँ निश्चय हमरा प्रसन्न हेबाक बेसी अवसर भेटि सकैत अछि। छै ने सत बात?

नान्हिटा जीवनकेँ के कोना बिताबए चाहैत अछि से बात बहुत हद धरि ओकरेपर निर्भर करैत अछि। समयतँ बीतिए जाएत चाहे जेना बीता लिअ, हँसिकए बीता लिअ चाहे कानि कए। असलमे कोनो घटना विशेष ककरा पर केहन प्रभाव करत से ओकर प्रवृतिपर निर्भर करैत अछि। ई ओहिना भेल जेना एकटा गिलासमे आधा पानि भरल अछि तँ केओ कहत जे आधा पानि खतम भए गेल, तँ केओ कहत जे एखन तँ आधा पानि बाँचले अछि, चिंता कथीक? एकटा अपन मकान बनलासँ कतेक खुसी होइत छैक। तहिना जँ अनको मकानसँ हम खुस हेबाक प्रवृति विकसित कए ली तँ नित्य-निरंतर प्रसन्नताक वर्षा होइत रहत एहिमे कनिको संका नहि।

चमक-दमकमे रहनिहार अनेको लोककेँ देखलासँ कैक बेरि मोनमे होइत छैक जे ई बहुत भाग्यवान अछि, बेस मौजमे जीवि रहल अछि। मुदा ई बात कैक बेरि कपोल-कल्पना साबित होइत अछि। कतेको फिल्मी कलाकार आत्महत्या करैत छथि। यदि धन-संपत्ति, ओ सामाजिक प्रतिष्ठासँ लोक सुखी रहैत तँ ओएह सभ रहितथि। मुदा से असलियतमे नहि अछि।

लोक दिन-राति पूजा-पाठ करैत रहैत अछि, कथी लेल? जाहिसँ मनोकामना पूरा होअए, परिणाम होइत अछि जे पूजा करितो काल हम शांत नहि रहि पबैत छी। हम गाममे कैक बेरि पूजा करैत काल लोककेँ चिकड़ैत-भोकरैत देखने छी, महादेवपर जलढ़री करैत काल अनका श्राप दैत सुनने छी, आ कबुला-पाँती करैत तँ के-के ने देखने होएत। जखन माथमे एतेक ओझर लए कए पूजा-पाठ कएल जाएत तँ शान्ति कोना भेटि सकत? भेटत-अहीं कहू? इएह थिकैक समस्याक जड़ि।

यद्यपि आयु बढ़िते जाइत अछि, लोकक मोह घटिते नहि अछि। सभकिछु हमरे भए जाएत से कतहुँ संभव होइक! ई जीवन अपूर्णतासँ भरल अछि। सभ किछु नहि भेटि सकैत अछि। तखन मर्जी अहाँक अछि जे हाय! हाय! करैत रही किंवा जे किछु अदिष्टसँ भेटल तकरा सहर्ष स्वीकार कए संतुष्ट रही।

ई बात तँ बूझि गेलिऐक जे शान्तिसँ रही, एकर बहुत नफा छैक, मुदा शान्ति प्राप्त कोना भए सकैत अछि? ताहि हेतु की कएल जाए? की नहि कएल जाए? असलमे उपदेश देलासँ किंबा किताबमे पढ़ि लेलासँ शान्ति प्राप्त नहि कएल जा सकैत अछि। ई तँ जीवन कला थिक आ निरंतर अभ्यासेसँ प्राप्त कएल जा सकैत अछि। तथापि किछु बात मोटा-मोटी जँ ध्यानमे राखल जाए तँ बहुत रास झंझटिसँ बँचल जा सकैत अछि आओर ओही अनुपातमे शांत

जीवन बिताओल जा सकैत अछि। मोनमे संतोखक भाव आ अनावश्यक प्रतिस्पर्धासँ बँचबाक चाही। आवश्यकताकेँ सीमित करबाक चाही। आय ओ व्ययमे संतुलन हेबाक चाही आ सभसँ जरूरी अछि जे मोनमे लोक कल्याणकारी भावना विकसित करबाक चाही। जे बात अपना नीक नहि लगैत अछि, से अनका संग नहि करी। अनकर उपलब्धिसँ ओहिना प्रसन्न होइ जेना अपनसँ। अनकर निंदासँ बची। परिवारमे सभक उचित महत्व दी। खाली अपने बात चलओनिहारकेँ अन्ततोगत्वा निराशा हाथ लगैत अछि।

शान्तिक हेतु जरूरी थिक जे मन कल्याणकारी विचारसँ ओत-प्रोत हो। दोसरक हितकारी भावना हो। जहिना हम अपन प्रगति चाहैत छी, तहिना अनको लेल सोचिऐक। से सभ यदि हमर मोनमे रहत तँ निश्चय हम शान्ति ओ आनंदक अनुभव कए सकैत छी। तखने सुखी रहि सकैत छी।

गीतामे कहल गेल अछि जे जकर शान्ति नहि तकरा सुख कतए?

नास्ति बुद्धिरयुक्तस्य न चायुक्तस्य भावना।

न चाभावयत: शान्तिरशांतस्य कुत: सुखम्।। ❑

सफलताक रहस्य

एहि दुनिआमे केओ एहन लोक नहि भेटताह जे अपन अधलाह चाहैत होथि, अपितु सभ एही प्रयासमे लागल रहैत छथि जे संसारक अधिक सँ अधिक सुख-सुविधा हमरा भेटए, सभ मनोकामना पूरा होअए, बाल-बच्चा सुखी रहए। एही प्रयासमे हमसभ निरंतर लागल रहैत छी। एहिमे किछु गलत नहि छैक मुदा समस्या तखन होइत अछि जखन सभ प्रयास केलाक बादो मनोवाँछित फल नहि भेटैत अछि। एहि परिस्थितिमे कतेको गोटे निराश भए जाइत छथि, प्रयास छोड़ि दैत छथि आ कतेको बेर अनुचित रस्ता सेहो अख्तियार कए लैत छथि।

कैक बेर एहन होइत अछि जे हम कोनो काजमे बर्खोसँ लागल रहैत छी आ जखन लक्ष्य एकदम लगीच रहैत अछि तँ थाकि कए, निराश भए अपन प्रयासकेँ सिथिल कए दैत छी किंबा आधा-अधूरा छोड़ि दैत छी। परिणाम अनुकूल कोना होएत?से नहि होइत अछि, तँ विधाताकेँ दोख देबए लगैत छी। दुनिआमे ज्यादातर असफल लोक आत्म-चिंतन करबाक बजाए अपन असफलताकेँ हेतु दोसरकेँ जिम्मेदार ठहराबए लगैत छथि। मुदा ताहिसँ की होएत?

कोनो प्रकारक काजक सफलताक हेतु जरूरी अछि जे हमर समस्त शक्तिक रचनात्मक उपयोग हो, एकहि संगे दसठाम हाथ

देलासँ किछु नहि भए सकैत अछि। करवनो किछु, करवनो किछु जँ करैत रहब तँ बानर बला हाल भए जाएत जे जाही डारिपर जाइत अछि ओकरा दोसर डारि बेसि हरियर लागए लगैत अछि। एकरा लोक कहैत अछि-बनरकूद। कहबाक तात्पर्य अछि जे सभसँ पहिने अपन गंतव्यक निर्धारण करबाक चाही आ तकर बाद संपूर्ण शक्तिसँ ओकरा प्राप्त करबाक प्रयास करबाक चाही।

एकटा बात तँ तय अछि जे सफलताक कोनो लघुपथ नहि भए सकैत अछि। आइ धरि जे केओ व्यक्ति सफल आदमीमे सुमार कएल जाइत छथि तिनक जिनगीसँ ई बात बुझल जा सकैत अछि। अपना देशक भूतपूर्व राष्ट्रपति कलाम साहेब अखबार बेचि कए पेट भरैत छलाह। वर्तमान प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी महोदय नेन्नामे चाह बेचैत छलाह। एतेक विपन्नता अछैत ओ सभ अद्वितीय कोना भए गेलाह? ई सोचबाक विषय थिक। एहन कम लोक होइत छथि जे सुविधाक अंबारमे जनमिओ कए पैघ-पैघ काज कए यशस्वी होइत छथि। पैघ उद्येश्य जँ रखने छी तँ ताहि प्राप्त करबाक हेतु तेहने सघन प्रयासो चाही। अर्जुन जकाँ सभकिछु बिसरि मात्र पंक्षीक आँखिपर ध्यान केंद्रित हेबाक चाही आ जँ भीम भाइ जकाँ एकहिबेर सभ किछु देखए लागब तखन की भेटत? फोकला!

महान उपलब्धिक हेतु तेहने कड़गर मेहनति करए पड़ैत अछि। तेहने द्दढ़ संकल्पक संग दिन-राति एक करए पड़ैत छैक। एहन नहि भए सकैत अछि जे हल्लुक परिश्रमसँ उत्कृष्ट उपलब्धि भए जाइक। अंग्रेजीमे एकटा कहाबत छैक जे “If wish be the horses, poor ride the first” कहक माने जँ इच्छे केलासँ होइक तँ गरीबे सभसँ पहिने घोड़ा चढ़ए। इच्छाक संग-संग प्रयत्नो तेहने घनघोर हेबाक चाही।

जेठक दुपहरिआमे जखन रौदसँ मोन आकुल भए जाइत अछि तखन होइत छैक जे कहुना गाछक छाहड़िमे चली। जखन पिआससँ मोन बेकल भए जाइत अछि तखन इच्छा होइत छैक जे हे भगवान! कहुना कतहुँसँ पानि भेटए। तखन लोक ई नहि देखए लगैत अछि जे पानि डबड़ाक अछि कि गंगाजल। केहनो पानि अमृत लगैत अछि। तहिना जीवनक संघर्षक तपिससँ मोन जखन व्याकुल भए जाइत अछि तँ लोक थाकल-ठेहिआएल कहि उठैत अछिः" हे भगवान! आब अहीं पार लगाउ"! संघर्षक समयमे भगवानपर विश्वास बड़का शक्ति दैत अछि। काज करैत रहू आ फलक चिंता हुनका पर छोड़ि दिअ, इएह बात भगवान गीतामे बारंबार कहने छथि। एहि काज करबाक शक्ति बढ़ैत अछि। कने-मने असफलतासँ निराशा नहि होइत छैक आ अन्ततः सफलता तँ भेटिते अछि।

मनुक्खक मोनमे परमात्माक बास होइत अछि। तेँ जँ ओ सही प्रयास करए तँ किछु दुर्लभ नहि रहि सकैत अछि। ताहि हेतु जरूरी थिक जे लक्ष्यक प्रति पूर्ण समर्पण होइक। आधा-अधुरा मोनसँ कएल गेल प्रयाससँ सिद्धि नहि भए सकैत अछि। ई बात अक्सर देखल गेल अछि जे हम उत्तम सँ उत्तम फल चाहैत छी, जकरा ककरो लग किछु नीक छैक से हमरा लग किएक नहि रहत? हमसभसँ औअल किएक नहि रहब? से सभतँ ठीक, मुदा जखन प्रयास करबाक गप्प होइत अछि तँ हम पाछा रहि जाइत छी।

रामकृष्ण परमहंससँ एकबेर केओ पुछलकनि जे भगवानक दर्शन कोना होएत? ओ ओहि व्यक्तिकेँ पानिमे डूबा देलखिन आ पुछलखिन जे आब की चाही? ओ चिचिआए लागल-"किछु नहि चाही, बस हमरा पानिसँ निकालु।" ओकरा तुरंत पानिसँ निकालल

गेल। पानिसँ बाहर अबितहिँ ओकरा कहलखिन जे जहिना पानिमे डुबि गेलाक बाद तोरा खाली पानिसँ बाहर हेबाक इच्छा रहि गेलह आओर किछु नहि सुझाह तहिना जखन भगवानकेँ प्राप्त करबाक हेतु एकाग्र हेबह तँ ओहो भेटि जेथुन। एहने खिस्सा एकलव्यक अछि। गुरु द्रोणाचार्य द्वारा शिक्षा नहि देबाक निर्णयसँ आहत ओ गुरुक प्रतिमा बैसाए दिन-राति साधना करए लगलाह आ अपन लक्ष्यकेँ पाबि तेहन निपुण धनुर्धर भए गेलाह जे द्रोणाचार्यो घबरा गेलाह आ ओकरासँ अंगूठा मांगबाक नीचता कए गेलाह।

सफलताक कुंजी थिक, आत्मविश्वास। स्वामी रामतीर्थ एकबेर घोर जंगलसँ जाइत रहथि कि एकटा बाघ हुनका सामने आबि गेल। मुदा ओ बिना बिचलित भेनहि ओहि बाघक आँखिमे घुरैत रहलाह आ बाघ अपन रस्ता बदलि लेलक।स्वामीजीक आत्मविश्वाससँ बाघोकेँ रस्ता बदलि लेबाक हेतु विवश कए देलक। यदि हमरा विश्वास अछि जे हम ई काज कए सकैत छी तँ बुझि लिअए काज हेबे करत। देर-सवेर भए सकैत अछि, मुदा होएत।

मानव जब जोर लगाता है, पत्थर पानी हो जाता है।

जीवनमे सफल आदमीमे एकटा गुण सभठाम देखबामे आएत जे एहन लोकक रुखि सकारात्मक होइत अछि, ओ दोसरकेँ टंगघिच्चु नहि करैत छथि, अपितु अपन समस्त शक्तिसँ लक्ष्यकेँ प्रप्त करबाक हेतु लागल रहैत छथि। असफलतासँ ओ निराश भए बैसि नहि जाइत छथि अपितु आओर जोरसँ काजमे लागि जाइत छथि। एहने द्दढ़ संक्लपी व्यक्ति कठिन सँ कठिन काजकेँ सरल बना लैत छथि आओर सफलताक पराकाष्ठाकेँ प्राप्त करैत छथि।
❑

मनः पूतं समाचरेत

जीवनमे बहुतरास अप्रिय, अरुचिकर घटनासभ घटैत रहैत अछि। कतेको बेर ऐहन घटना घटित भए जाइत अछि जे मनुक्खकेँ हिला कए राखि दैत अछि मुदा एहने समयमे संस्कार ओ ज्ञानक परीक्षा होइत अछि। तकर अभावमे व्यथासँ विचलित लोक गलत रस्ता पकड़ि लैत छथि आ कैक बेर अनर्थ कए बैसैत छथि। हालमे दिल्लीक बुरारीमे घटित लोमहर्षक घटना समस्त जागरुक व्यक्तिकेँ हिला कए राखि देलक। ऐकहिटा परिवारक एगारह गोटे दूपहर रातिमे फाँसी लगा कए मरि गेलाह। सभगोटे एकदम स्वस्थ छलाह। परिवार आर्थिक रुपसँ समृद्ध छल। राजस्थानसँ बीस-बाइस साल पहिने दिल्ली आबि कए ठीक-ठाक हालतमे छलाह। परन्तु की भेल जे पूरा-क-पूरा परिवार स्वयं फाँसीक फंदा बना झुलि गेल? जाँच-पड़तालमे ई बात आबि रहल अछि जे ओ सभ तंत्र-मंत्रक चक्करमे पड़ि गेल छलाह। हुनकासभकेँ ई अंधविश्वास छल जे एहि तरहेँ मरलासँ हुनका सभकेँ मुक्ति भए जाएत। कहि नहि सत्य की छल मुदा भेल तँ अनर्थे। सभतरहेँ जूड़ल-अटल परिवार सदा-सर्वदाक हेतु नष्ट भए गेल आ सेहो धर्मक नामपर। तेँ मनुक्खकेँ चाही जे आँखि खोलि कए राखथि। ककरो बातपर बिना सोचने-बिचारने विश्वास नहि करथि। सोचएबला बात थिक जे फाँसी लगा कए मरि गेलासँ मुक्ति कतएसँ भेटत। एहन सुन्दर जीवनकेँ व्यर्थमे गमा देब मूर्खता नहि तँ की थिक?

आँखि मूनिकए ककरो चेला भए जाएब कोनो हिसाबे उचित नहि अछि। आई काल्हि बहुत रास ढ़ोंगी बाबा सभ धर्मक नामपर लोककेँ ठकैत देखल जाइत छथि। ककरो बातकेँ बिना सोच-विचारकेँ नहि मानक चाही। अपन माथा जरुर लगाबक चाही। कहब छैक जे मनः पूतं समाचरेत। जखन अपन मोन मानि जाए

तखने कोनो काज करी। अपन जीवन-यापन करबा जोग वुद्धि भगवान सभकेँ देने छथि। तकर सही उपयोग कएल जाए तँ बहुत रास दुर्घटना सँ बचल जा सकैत अछि। कहक माने जे अंधभक्त नहि हेबाक चाही।

बहुत रास लोकसभ परेसान भए बाबा सभहक चक्करमे पड़ि जाइत छथि। एहन बाबा सभक आइ-काल्हि कमी नहि अछि। जतहिँ देखू, जटा-जूटधारी बाबा त्रिशूल चमकबैत भेटि जएताह। हुनका सभसँ बँचिकए रही एहीमे कल्याण अछि। कारण ओ धन-धर्म सभ पर हाथ फेर दैत छथि। कैक बेर तँ जानोसँ लोक हाथ धो लैत छथि।

सोचएबला बात अछि जे कैक बेर पढ़ल-लिखल लोको एहन बाबा सभक चक्करमे पड़ि जाइत छथि। तकर की कारण? असलमे जखन लोक वास्तविकताकेँ नहि स्वीकार करैत छथि किंबा परिस्थितिसँ ताल-मेल नहि बैसा पबैत छथि, तखने एहन मानसिकता जोड़ मारैत अछि आ गलत-सलत काज लोक करए लगैत अछि। कहल जाइत अछि जे जँ अपना मोनक हो तँ नीक, जँ अपना मोनक खिलाफ भए जाऐ तँ आओर नीक। कारण जे अपना मोनक नहि भेल से बुझु जे भगवानक मोनक छनि किंवा हुनकर आदेश छनि, से बुझि आगतकेँ स्वीकार करैत आगा बढ़ि जाउ। जीवनमे नीक बेजाए होइत रहैत अछि। केओ एहन व्यक्ति नहि भेटत जे सभ दिन नीके देखने होथि। नीक-बेजाए समयकेँ साहस पूर्वक झेलैत जे चलैत रहि जाइत छथि, बीच रस्तामे थाकि कए, हारि कए काजकेँ आधा-अधूरा छोड़ि नहि दैत छथि,ओएह कीर्ति करैत छथि,यशक भागी होइत छथि।

सही रस्तापर चलनिहार व्यक्तिकेँ बहुत याचना होइत अछि। बच्चामे हमरासभ सत्य हरिश्चन्द्रक नाटक देखने रही। केहन,केहन

दिक्कतिसँ हुनका सामना करए पड़ल। एकटा प्रसिद्ध राजा सत्यक रक्षा करैत-करैत भीखमंगा भए गेलाह। ई हालत भए गेलनि जे पुत्र रोहितक मृत लहासकेँ जड़ेबाक हेतु कोनो व्योत नहि गेलनि। ऐहन दारूण दुख भगवान ककरो नहि देथि। मुदा ओ सत्यक मार्गपर अडिग रहलाह आ अन्ततोगत्वा विजयी भेलाह। कहक माने जे जीवनमूल्यक रक्षाक हेतु जँ कष्टो सहए पड़ए तँ अगुतेबाक नहि चाही, अपितु दृढ़तापूर्वक न्यायक मार्ग पड़ चलैत रहबाक चाही।

अपना देश-समाजमे कमे एहन लोक होइत छथि जिनका सभ किछु बनल-बनाएल भेटि जाइत छनि। अधिकांश लोककेँ सभ किछु हेतु संघर्ष करए पढ़ैत छनि। जीवनक मूलभूत आबश्यकता जेना आवास, शिक्षा, स्वास्थ्य हेतु सेहो मोसकिल रहैत अछि। अधिकांश लोक तँ संघर्ष करतहि जनमैत छथि आ ओही हालमे दुनिआसँ चलि जाइत छथि। किछु एहनो लोक छथि जिनका भगवान ततेक दए देने छथि जे फुराइते नहि छनि जे की करी? एहन लोककेँ विवेकसँ काज लेबाक प्रयोजन अछि। जँ सही व्यक्तिक हाथमे संपदा आबि जाइत अछि तँ ओ बहुत कयाणकारी भए सकैत अछि, हजारो, लाखोक तायदादमे जरुरतमंद, दुखी, ओ आर्तलोकक जीवनकेँ बदलि सकैत अछि, मुदा से होइक तखन ने? लोकसभ अपने धरि सीमित रहि जाइत छथि आ तखन कहताह जे मोनमे शान्ति नहि अछि, परेसान छी।

जरुरी एहि बातक अछि जे परिस्थितिसँ तालमेल बैसा कए चली। जाहि बातपर अपन बश नहि अछि तकरा स्वीकार करी आ जीवनमे आशावादी रुखि राखी। सभसँ जरुरी अछि जे ईश्वरमे विश्वास राखी। भगवानक घरमे देर अछि अन्हेर नहि अछि। अस्तु, धैर्यपूर्वक कर्तव्य कर्मकेँ करैत रहब तँ देर-सवेर जरुर सफलता भेटत। एहि बातकेँ ध्यानमे रखैत जीवन यात्राकेँ यथासाध्य शान्तिपूर्ण ढ़गसँ बिताबक चाही।

जीवनमे सही दृष्टिकोण आ आशावादी रुखि रखलासँ बहुत रास संकटसँ बचल जा सकैत अछि, कमसँ कम ढ़ोंगीबाबाक चक्करसँ तँ जरुरे बचब। अस्तु, सभसँ जरुरी अछि जे हमर बुद्धि शुद्ध होअए जाहिसँ हमसभ नीक-बेजाएक बिचार करैत जीवन यात्राकेँ मर्यादापूर्वक बिता सकी।

दृष्टिपूतं न्यसेत्पादं वस्त्रपूतं पिबेज्जलम्।

शास्त्रपूतं वदेद्वाक्यं मनः पूतं समाचरेत् ॥

-चाणक्य नीति

❑ ❑❑

हमर पोथीसभक मुद्रित संस्करण निम्नलिखित वेवलिंकपर क्लिक कए आनलाइन किनल जा सकैत अछि:

भोरसँ साँझ धरि(आत्मकथा)
https://pothi.com/pothi/node/195476.
प्रसंगवश(निवंध संग्रह)
https://pothi.com/pothi/node/195527.
स्वर्ग एतहि अछि(यात्रा प्रसंग)
https://pothi.com/pothi/node/195487.
फसाद(कथा संग्रह)
https://pothi.com/pothi/node/195510.
नमस्तस्यै(मैथिली उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/195444.

विविध प्रसंग(निवंध संग्रह)
https://pothi.com/pothi/node/195633.

महराज (मैथिली उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/195795
लजकोटर (मैथिली उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/196264.

सीमाक ओहि पार(मैथिली उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/197004.

समाधान (निवंध संग्रह)

https://pothi.com/pothi/node/197754.

मातृभूमि(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/198699.

स्वप्नलोक(उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/199847.

शंखनाद(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/200903.

इएह थिक जीवन(संस्मरण)

https://pothi.com/pothi/node/202488.

ढहैत देबाल(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/203720.

पाथेय

https://pothi.com/pothi/node/205009.

हम आबि रहल छी(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/206093.

प्रलयक परात(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/207234.

बीति गेल समय(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/208351.

The Lost House (Collection of short stories)

https://pothi.com/pothi/node/195843.
Life is an Art (Motivational essays)

https://pothi.com/pothi/node/196385

न्याय की गुहार (हिन्दी उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/198163.

www. amazon.com/www.flipkart.com/ पर सेहो ई पोथीसभ आनलाइन किनल जा सकैत अछि ।